अंक : 73
भण्डारण
विशेषांक

भण्डारण भारती

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

जन-जन के लिए भण्डारण

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

निगम गीत

भारत के कोने–कोने में बनी अमिट पहचान है।
केंद्रीय भंडारण का यह निगम हमारी शान है।

खाद्यान्नों का है रखवाला, भंडारण – विद्या का ज्ञाता,
निगोशिएबल जमा पावती दे, किसान को खूब लुभाता।
लाखों टन की क्षमता इसकी सुख–समृद्धि की खान है,
भारत के कोने–कोने में बनी अमिट पहचान है।

भिज्ञ, प्रशिक्षित, कुशल कार्यबल, वैज्ञानिक भंडारण करता,
भाँति–भाँति के उत्पादों के संरक्षण की क्षमता रखता।
कस्टम के बांडेड गोदामों का भी बड़ा विधान है,
भारत के कोने–कोने में बनी अमिट पहचान है।

कीट–नियंत्रण की सेवाएं, एअरलाइनों तक को भाएं,
बन्दरगाहों पर देता है, उत्तम सी.एफ.एस. सुविधाएं।
हैण्डलिंग बीमा परामर्श का, सेवा केंद्र महान है,
भारत के कोने–कोने में बनी अमिट पहचान है।

आईसीडी, बार्डर आईसीपी, एअरकार्गो केंद्र चलाए,
भंडारण की जागरूकता कृषक भाइयों में फैलाएं।
उन्नत सुविधा, उत्तम सेवा ही इसका परिधान है,
भारत के कोने–कोने में बनी अमिट पहचान है।

भारत के कोने–कोने में बनी अमिट पहचान है।
केंद्रीय भंडारण का यह निगम हमारी शान है।

भण्डारण भारती

छमाही पत्रिका **भण्डारण विशेषांक** अंक 73

विषय			पृष्ठ संख्या
•	प्रबंध निदेशक की कलम से...		3
•	निदेशक (कार्मिक) की ओर से...		4
•	प्रस्तावना		5
•	संपादकीय		6
आलेख			
✦	हैदराबाद क्षेत्र में मार्केट यार्ड के रूप में...	– सैम्युएल प्रवीण कुमार	9
✦	हल्दी की फसल की समस्याएँ, समाधान...	– राशिद परवेज़	15
✦	कोरोना संकट और सूचना तकनीक	– बालेन्दु शर्मा 'दाधीच'	18
✦	ई–ऑफिस में कामः हिंदी में भी आसान	– नम्रता बजाज	20
✦	हमारे प्रयास हमारा भविष्यः भुखमरी मुक्त.....	– वरुण भारद्वाज	27
✦	राजभाषा के प्रयोग में सरलता और.......	– राकेश कुमार	44
✦	देवनागरी हिंदी बनाम रोमन हिंदी	– डॉ. हरीश कुमार सेठी	54
✦	अनुवाद एवं अनुवादक की भूमिका	– रेखा दुबे	58
अन्य लेख			
➢	केन्द्रीय भण्डारण निगम–संक्षिप्त परिचय		7
➢	देश की प्रगति के लिए आवश्यक है वैज्ञानिक भंडारण		12
➢	लॉजिस्टिक एवं संबंधित गतिविधियाँ–एक विवेचन		23
➢	डिजिटलीकरण की दिशा में निगम के बढ़ते कदम		30
➢	मानव संसाधन विकास में प्रबन्धन की भूमिका		35
अधीनस्थ वेअरहाउस–एक परिचय			
✸	सैंट्रल वेअरहाउस, आदिलाबाद, दुग्गीराला एवं बड़ौदा–।		49
कविताएं			
➲	आओ हम सब मिलकर डिजिटल निगम बनाएं	– एस. के. दुबे	48
➲	सत्य वचन	– विनीत निगम	57
➲	भारत माता	– निर्भय नारायण गुप्त 'निर्भय'	66
➲	मैं और मेरी उड़ान	– स्वीटी कुमारी	68
साहित्यिकी			
❧	कमलेश्वर की कहानी	– कमलेश्वर	38
विविध			
❍	जान है – जहान है	– आर. पी. जोशी	24
❍	भारतीय संस्कृति एवं अहिंसा	– सच्चिदानंद राय	47
❍	जल है तो जिंदगानी है	– महिमानन्द भट्ट	52
❍	यादें	– मीनाक्षी गम्भीर	60
❍	शमशेर बहादुर सिंह	– डॉ0 मीना राजपूत	62
❍	जिंदगी जिन्दादिली का नाम है	– रजनी सूद	67
अन्य गतिविधियाँ			
✶	सचित्र गतिविधियाँ		69

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

अक्तूबर, 2019–मार्च, 2020

मुख्य संरक्षक
अरुण कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
राकेश कुमार सिन्हा
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
सोमनाथ आचार्य
महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

संपादन सहयोग
विजयपाल सिंह, शशि बाला,
वरुण भारद्वाज

केंद्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली–110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रकः शरद एडवरटाइज़िंग प्रा. लि.
184, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण–अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थानों एवं गैर–बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से.....

भंडारण भारती पत्रिका का यह नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका के अभी तक 72 अंक प्रकाशित किए जा चुके हैं जिसके सफल प्रकाशन ने निगम को कई मंचों से सम्मानित किया है। निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच सूचनाओं, तकनीकों तथा विचारों के आदान–प्रदान के लिए यह पत्रिका सशक्त माध्यम के रूप में उभर कर अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है।

देश की आर्थिक प्रगति में वैज्ञानिक भंडारण सुविधाओं के माध्यम से योगदान देते हुए निगम अपने लक्ष्यों की ओर निरन्तर अग्रसर है। समय की मांग के अनुसार हमें भंडारण के क्षेत्र में अपने बहुमूल्य जमाकर्ताओं के विश्वास एवं आस्था को अर्जित करना एवं उसे लगातार बनाए रखना जरूरी है। जमाकर्ताओं का अपने स्टॉक के साथ भावनात्मक लगाव होता है और हर स्थिति में वे अपने माल की सुरक्षा चाहते हैं, अतः निगम को गुणवत्ता नीति के अनुसार ग्राहकों की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं का पूरा ध्यान रखना जरूरी है।

आज कार्यकुशलता एवं व्यावसायिक निपुणता के साथ कारोबार चलाना एक आवश्यकता ही नहीं बल्कि अनिवार्यता भी है। अतः वैश्वीकरण एवं प्रतियोगी वातावरण के इस दौर में कारोबार को बढ़ाने के लिए चुनौती को स्वीकार करते हुए हमें समर्पित भाव से निगम के उत्तरोत्तर विकास में कार्य करना चाहिए।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 02 मार्च, 2020 को निगम का 64वां **स्थापना दिवस** मनाया गया जिसका उद्देश्य भंडारण के क्षेत्र में किए गए कार्यों की समीक्षा एवं भविष्य की योजनाओं को कार्यान्वित करने की दिशा में पहल करना था। राष्ट्रीय दायित्वों को पूरा करते हुए निगम वैज्ञानिक भंडारण की विभिन्न गतिविधियों में भी अपनी विशेष उपलब्धि दर्ज करते हुए आगे बढ़कर कार्य कर रहा है। इसके अतिरिक्त, राजभाषा नीति का अनुपालन भी हमारे दायित्वों का एक प्रमुख हिस्सा है। भारत सरकार की अपेक्षाओं के अनुकूल राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुपालन की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहते हुए निगम को हर वर्ष मंत्रालय एवं नराकास (उपक्रम), दिल्ली से श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु पुरस्कार प्राप्त होता है। इस वर्ष भी निगम को राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यान्वयन एवं भंडारण भारती पत्रिका प्रकाशन के लिए पुरस्कार प्राप्त हुआ है जो निगम के लिए सम्मान की बात है।

वेअरहाउसिंग एक व्यापक तथा विशिष्ट गतिविधि है। अतः वेअरहाउसिंग जैसे बहुआयामी कारोबार के संचालन एवं उसमें निरन्तर सफलता हासिल करने के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को समर्पण की भावना से कार्य कर अपना बहुमूल्य योगदान देना अपेक्षित है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में निगम बेहतर कार्यों का परिचय देते हुए निश्चय ही सफलता के नए आयाम प्राप्त करेगा।

मैं राजभाषा अनुभाग को इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(अरुण कुमार श्रीवास्तव)
प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) की ओर से.....

यह प्रसन्नता का विषय है कि **भंडारण भारती** पत्रिका निगम के विभिन्न कार्यकलापों की जानकारी देने एवं अनेक संगठनों तथा ग्राहकों के साथ समन्वय स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका निभा रही है। निगम खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण सहित किसानों के हितों के लिए कार्य करते हुए देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान भी दे रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में सूचना प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक उपयोग कर हम अपनी सेवाओं का विस्तार करने में निरन्तर अग्रसर हैं। निगम किसानों को भंडारण तकनीकों के बारे में राजभाषा हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से प्रशिक्षण देकर अपने दायित्वों का पालन कर रहा है। इसके अतिरिक्त, इस पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेखों के माध्यम से भी जनसमुदाय तक जानकारी देने का प्रयास किया जाता है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निदेशों का अनुपालन के साथ–साथ निगम विभिन्न माध्यमों से हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सभी स्तरों पर अपेक्षित भूमिका निभा रहा है। मंत्रालय, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा के श्रेष्ठ कार्य–निष्पादन एवं उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन के लिए निगम को सम्मानित किया जाना सभी के लिए गौरव की बात है। मेरा निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से यह आग्रह है कि वे अपने अनुभव के आधार पर अपनी लेखन प्रतिभा को उजागर करते हुए इस पत्रिका के लिए अपना भरपूर योगदान दें जिससे गत वर्षों की भाँति भविष्य में भी यह पत्रिका निगम के लिए विशेष पहचान बनी रहे।

मैं **भंडारण भारती** पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस विशेष कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

राकेश

(राकेश कुमार सिन्हा)
निदेशक (कार्मिक)

प्रस्तावना

भंडारण भारती पत्रिका के माध्यम से अपने विचार रखते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वास्तव में पत्रिका द्वारा संगठन के विभिन्न कार्यकलापों एवं सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रचार–प्रसार करना समय की आवश्यकता है। हमारा निगम एक वाणिज्यिक संगठन है और खाद्यान्नों का रखरखाव तथा वैज्ञानिक भंडारण एक ऐसी प्रक्रिया है जो राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है। निगम जन–जन के लिए भंडारण की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरी करता है और हर समय–हर जगह सामान की सुरक्षित हैंडलिंग कर अपने दायित्वों को भी पूरा कर रहा है। निसंदेह देश की अर्थव्यवस्था में वेअरहाउसिंग अर्थात् भंडारण प्रणाली का विशेष महत्व है।

निगम अपने मुख्य व्यवसाय वैज्ञानिक भंडारण के अलावा सरकार की अपेक्षाओं के अनुकूल राजभाषा के क्षेत्र में भी अपनी भूमिका अदा कर रहा है। राजभाषा नीति के अनुपालन संबंधी जानकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को अधिक से अधिक प्राप्त होने से उन्हें हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि निगम को विभिन्न भाषा–भाषी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ संपर्क करना पड़ता है तथा कार्यालय के कार्य से दूसरे प्रदेशों में भी जाना पड़ता है इसलिए हिंदी ही एकमात्र संपर्क के माध्यम के रूप में अपनी भूमिका निभाने में सक्षम होती है। अतः हिंदी को दिल से अपनाने की आवश्यकता है। राजभाषा कार्यान्वयन को नई दिशा देने के लिए सभी को अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहिए और इसको बढ़ावा देने के लिए स्वयं से ही शुरूआत करनी चाहिए क्योंकि सभी की कोशिश से ही हम लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

आज हम देखते हैं कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने की अनेक संभावनाएँ हैं जिसके लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाना श्रेयस्कर होगा। जैसा कि सभी को ज्ञात है कि आज कम्पीटिशन का युग है और हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए हमारे काम की क्वालिटी होनी चाहिए तथा क्वालिटी स्किल एवं ईमानदारी से आती है। कहने का तात्पर्य है कि हर कार्य में निपुणता लाने की कोशिश करनी चाहिए। मैंने देखा है कि अपने अथक प्रयासों से निगम पिछले कई वर्षों से राजभाषा के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम रहा है किंतु निगम को अभी भी राजभाषा की वृद्धि के लिए और अधिक अथक प्रयास करने की आवश्यकता है जिसके लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है।

भंडारण भारती पत्रिका से निगम की एक नई पहचान भी बनी है। इसी वर्ष फरवरी, 2020 में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–I), दिल्ली द्वारा आयोजित बैठक में मैं उपस्थित था जिसमें वर्ष 2019 के लिए इस पत्रिका को श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो निगम के लिए गौरव की बात है। यह पत्रिका हमारे पूरे निगम का प्रतिनिधित्व करती है। अतः इसमें प्रकाशित सामग्री पाठकों के लिए न केवल रुचिकर है बल्कि जानकारी से भी भरपूर है। राजभाषा प्रमुख होने के नाते मेरा सभी से आग्रह है कि वे राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए अपने सभी प्रयास जारी रखें ताकि राजभाषा के क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर पहुँचकर हम अपनी मंजिल प्राप्त कर सकें।

(सोमनाथ आचार्य)
महाप्रबंधक (कार्मिक)

संपादकीय

निगम की पत्रिका **भंडारण भारती** सुधी पाठकों की सेवा में समर्पित है। इस पत्रिका को सदैव ही नए दृष्टिकोण के साथ प्रकाशित करने का हमारा उद्देश्य रहा है और हर अंक में पिछले अंक की तुलना में कुछ–न–कुछ नवीनता और विभिन्नता लाने का प्रयास किया जाता है क्योंकि परिवर्तन से ही जीवन है और परिवर्तन से ही नयापन भी आता है।

निगम के देश भर में फैले हुए क्षेत्रीय कार्यालयों एवं वेअरहाउसों से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों एवं अन्य गतिविधियों की झलकियां इस पत्रिका में प्रकाशित की गई है। इससे यह भी प्रतीत होता है कि हमारा निगम वैज्ञानिक भंडारण के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी तत्परता से अपनी भूमिका निभाने की ओर निरंतर अग्रसर है। इसके अतिरिक्त, स्थापना दिवस, सतर्कता जागरुकता सप्ताह, निरीक्षण कार्यक्रम सहित निगम को प्राप्त पुरस्कारों को भी इसमें प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है। निश्चय ही, निगम को जो श्रेय और सम्मान मिला है, उसके लिए सभी अधिकारियों एवं साथियों का समय–समय पर मार्गदर्शन और सहयोग मिलता है, जिससे हमें अपने कार्यों की गति बढ़ाने में सहायता मिलती है।

इस अंक में विभिन्न विभाग एवं अनुभाग के सौजन्य से प्राप्त सामग्री को **डिजिटलीकरण की दिशा में निगम के बढ़ते कदम** जैसे नवीन विषय के अंतर्गत प्रकाशित करने के साथ–साथ अन्य संबंधित विषयों की जानकारी देने के लिए हमने कुछ लेखों को साभार स्वरूप भी पत्रिका में स्थान दिया है, ताकि निगम में नए भर्ती हुए कार्मिकों को निगम के कार्यकलापों के बारे में उपयोगी जानकारी मिल सके और इन लेखों के माध्यम से वे अपना ज्ञान अर्जित कर सकें। इस अंक से **निगम के अधीनस्थ वेअरहाउसों के परिचय** की शृंखला की शुरूआत की गई है। यह पत्रिका सभी पाठकों के सहयोग से निरंतर अपने उद्देश्य में सफल होकर विभिन्न मंचों से सम्मानित भी हुई है और हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी यह परंपरा बनी रहेगी और निगम अपना अग्रणी स्थान बनाए रख सकेगा।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

केन्द्रीय भण्डारण निगम- संक्षिप्त परिचय

केन्द्रीय भण्डारण निगम की स्थापना कृषि उत्पाद (विकास और वेअरहाउसिंग) कारपोरेशन्स अधिनियम, 1956 के अधीन 02 मार्च, 1957 को हुई और जुलाई, 1957 में इसने कार्य करना आरम्भ किया। कृषि उत्पाद (विकास और वेअरहाउसिंग) कारपोरेशन्स अधिनियम, 1956 को निरस्त कर उसके स्थान पर वेअरहाउसिंग कारपोरेशन्स अधिनियम, 1962 लाया गया। केन्द्रीय भण्डारण निगम का मुख्य उद्देश्य कृषि आदानों, उत्पादों और अन्य अधिसूचित वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधाएं उपलब्ध कराना है। इसके अतिरिक्त यह निगम आयात–निर्यात कार्गो के लिए कंटेनर फ्रेट स्टेशनों/अन्तर्देशीय कंटेनर डिपुओ, लैण्ड कस्टम स्टेशनों, एअरकार्गो कॉम्प्लैक्स आदि आधारभूत लॉजिस्टिक सुविधाएं भी प्रदान करता है।

निगम एक आईएसओ–9001:2015 एवं आईएसओ 14001:2015 और ओएचएसएएस 18001:2007 प्रमाणन प्राप्त संस्था है। यह अनुसूची–क– मिनी रत्न श्रेणी–। संगठन है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम की 01.06.2020 की स्थिति के अनुसार 419 वेअरहाउस हैं जिनकी प्रचालनात्मक क्षमता 115.71 लाख मी.टन के साथ औसत उपयोगिता 92 प्रतिशत है। केन्द्रीय भण्डारण निगम वेअरहाउसिंग/लॉजिस्टिक्स व्यवसाय में प्रमुख भूमिका निभाने के साथ–साथ सरकारी विभागों, अर्धसरकारी एजेन्सियों, स्वायत्तशासी निकायों, सहकारी संस्थाओं, व्यापारिक घरानों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा व्यापारियों एवं किसानों सहित विभिन्न ग्राहकों को आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

*बी एण्ड सी विभाग के सौजन्य से

अपनी स्थापना से ही, केन्द्रीय भण्डारण निगम किफायती लागत पर कृषि आदानों, उत्पाद एवं अधिसूचित वस्तुओं के वैज्ञानिक भण्डारण के लिए सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है। कृषि क्षेत्र को सब्सिडाइज़ करने तथा अपने परिचालन को निरन्तर आगे बढ़ाने के उद्देश्य से निगम ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश किया है। सत्तर के दशक के अंत में निगम ने पब्लिक बांडेड वेअरहाउसों के क्षेत्र में उस समय प्रवेश किया जब सीबीईसी द्वारा भण्डारण एवं वेअरहाउसिंग के क्षेत्र में निगम की विशेषज्ञता को देखते हुए उसे एक कस्टोडियन के रूप में आयातित शुल्क योग्य सामान के भण्डारण हेतु बाण्डेड वेअरहाउस चलाने के लिए नियुक्त किया गया। यह निगम 5961 मी.टन क्षमता के 03 एयर कार्गो कॉम्प्लैक्स (चेन्नई, गोवा एवं आईजीआई एयरपोर्ट)/25 कंटेनर फ्रेट स्टेशन (सीएफएस)/अन्तरदेशीय क्लीयरेंस डिपो (आईसीडी) चला रहा है। केन्द्रीय भंडारण निगम भारत और पाकिस्तान के बीच तथा इंडो–बंगलादेश बार्डर पर सड़क मार्ग के द्वारा अटारी (पंजाब), इंटीग्रेटिड चैक पोस्ट (आईसीपी) तथा पैट्रापॉल (पश्चिमी बंगाल) पर आयात/निर्यात व्यापार की सुविधा सहित कार्गो टर्मिनल चला रहा है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम किसानों, व्यापारियों, निर्यातकों, आयातकों, पोत अभिकर्ताओं आदि के लाभ हेतु कीटनाशन तथा पैस्ट नियन्त्रण सेवाएं मुहैया करा रहा है। यह सुविधा रेल के डिब्बों, भोजन यानों, वायुयानों, अस्पतालों, होटलों एवं रेस्तरां सहित आयात–निर्यात कंटेनरों में प्रधूमन एवं पोत प्रधूमन आदि में भी प्रदान की जाती है। इस गतिविधि के अन्तर्गत वर्ष 2001–02 में 2.49 करोड़ रु. से वर्ष 2019–20 में 19.54 करोड़ रु. के राजस्व की वृद्धि हुई है।

अपनी गतिविधियों में विविधता लाने के उद्देश्य से केन्द्रीय भंडारण निगम वर्ष 2007 से कंटेनर ट्रेन चला रहा है। निगम के पास अखिल भारतीय स्तर पर कंटेनर

ट्रेन चलाने का श्रेणी–। लाइसेंस है। निगम फिलहाल लोनी (दिल्ली) तथा कालम्बोली (नवी मुम्बई) में कंटेनर रेल टर्मिनल परिचालित करने सहित लोनी–जवाहर लाल नेहरू पोर्ट, लोनी–मुंद्रा तथा लोनी–पिपवाव क्षेत्रों में कंटेनर ट्रेन चला रहा है।

पब्लिक वेअरहाउसिंग सुविधाओं का लाभ उठाने तथा किसानों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से केन्द्रीय भंडारण निगम किसानों को उनके जमा स्टॉक के भण्डारण प्रभारों में 30 प्रतिशत छूट देता है। किसानों को वेअरहाउस रसीद जारी की जाती है जो एक नेगोशिएबल दस्तावेज है जिसे गिरवी रखकर वे ऋण प्राप्त कर सकते हैं। फार्म स्तर पर किसानों को स्टॉक के वैज्ञानिक भण्डारण तथा परिरक्षण की जानकारी देने तथा रोके जा सकने वाली भण्डारण क्षतियों को कम करने के उद्देश्य से किसानों को शिक्षित करने के लिए केन्द्रीय भण्डारण निगम अपनी एक किसान विस्तार सेवा योजना चला रहा है जिसके अधीन वेअरहाउसों में तैनात इसके तकनीकी कर्मचारी आसपास के गांवों में जाकर किसानों को फसल बाद की प्रौद्योगिकी का सम्पूर्ण ज्ञान देने के लिए प्रशिक्षण देते हैं।

100 करोड़ रु. की अधिकृत अंश पूंजी की तुलना में निगम की प्रदत्त पूंजी 68.02 करोड़ रु. है। केन्द्रीय भण्डारण निगम सरकार से किसी प्रकार की बजटीय सहायता पर निर्भर नहीं है तथा सभी परिचालन एवं निर्माण योजनाएं अपने द्वारा सृजित आंतरिक संसाधनों से चलाता है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम ने रेलसाइड वेअरहाउसिंग कॉम्पलैक्सों (आरडब्ल्यूसी) के विकास और प्रचालन के लिए सैन्ट्रल रेलसाइड वेअरहाउस कम्पनी लि. (सीआरडब्ल्यूसी) के नाम से 100 प्रतिशत स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी बनाई। सैन्ट्रल रेलसाइड वेअरहाउस कंपनी लि0 10 जुलाई, 2007 को गठित की गई तथा इसने 24 जुलाई, 2007 को व्यापार शुरू करने का प्रमाण–पत्र प्राप्त किया। सीआरडब्ल्यूसी की अंशपूंजी में केन्द्रीय भण्डारण निगम ने 40.56 करोड़ रु. का अभिदान किया है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम ने 19 राज्य भण्डारण निगमों (एसडब्ल्यूसी) की इक्विटी में योगदान दिया है। निगम ने इन राज्य भंडारण निगमों की इक्विटी में 01.06.2020 तक लगभग 61.79 करोड़ रु. का निवेश किया है जिसमें केन्द्रीय भण्डारण निगम का 50 प्रतिशत अंश है तथा शेष 50 प्रतिशत अंश संबंधित राज्य सरकारों के हैं।

- केंद्रीय भंडारण निगम पिछले कई वर्षों से उत्पादक तथा उपभोक्ताओं के बीच में मजबूत कड़ी का काम कर रहा है तथा देश के किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराता है।
- निगम खाद्यानों के वैज्ञानिक भंडारण के अतिरिक्त कंटेनर फ्रेट स्टेशन, अंतर्देशीय कंटेनर डिपो, लैंड कस्टम स्टेशन तथा एअर कार्गो काम्पलेक्स जैसी लॉजिस्टिक सेवाएं भी उपलब्ध कराता है।
- देश में खाद्यान्नों के सुरक्षित भंडारण और उनकी आपूर्ति के साथ–साथ भंडारण की वैज्ञानिक तकनीक के विकास में भी निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
- वेअरहाउसिंग सेवा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू ग्राहकों को उसके स्टॉक को समय पर डिपॉजिट करना एवं डिलीवरी देना है तथा वेअरहाउसिंग–कारोबार की सफलता वेअरहाउसों की क्षमता के निरंतर भरपूर उपयोग पर ही निर्भर है।

हैदराबाद क्षेत्र में मार्केट यार्ड के रूप में सैन्ट्रल वेअरहाउसों का प्रचालन

सैम्युएल प्रवीण कुमार*

कृषि उपज के विपणन से जुड़े जोखिमों का उन्मूलन करना हमेशा से ही एक चुनौती भरा काम रहा है। कृषि उपज के विपणन से जुड़ी समस्याओं में मुख्यतः सुविधाजनक स्थान पर मार्केट की उपलब्धता न होना और कृषि वस्तुओं की कीमत में उतार–चढ़ाव का होना होता है जो मांग और आपूर्ति तथा मानसून की अनियमितता के आधार पर निर्भर करता है। राज्यों के एपीएमसी अधिनियम के अंतर्गत आने वाली विनियमित मार्केट प्रणाली कृषि विपणन की उसी तरह से रीड़ है जिस तरह से कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की। तथापि, किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य न मिलने से हो रही उनकी दुर्दशा को दूर करने के लिए मौजूदा मार्केट प्रणाली में प्रभावी सुधारों की नितांत आवश्यकता है। कृषि उपज के विपणन से जुड़े जोखिमों को दूर करने का एक उपाय यह भी है कि किसान वैज्ञानिक वेअरहाउस की सेवाओं का उपयोग करें तथा जब तक किसान को अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त न हो तब तक वह अपनी उपज की बिक्री को स्थगित करके कृषि उपज को वेअरहाउस में सुरक्षित रख सकते हैं।

किसानों और व्यापारियों की कृषि उपज के विपणन के लिए मार्केट यार्ड और वेअरहाउसों को बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। हाल ही के दिनों में वेअरहाउसों को वैकल्पिक मार्केट प्लेटफार्म के रूप में घोषित करने की संकल्पना का विकास हुआ है तथा कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना जैसे राज्यों ने वेअरहाउसों को मार्केट के रूप में घोषित करने के लिए अपने राज्य के एपीएमसी अधिनियम को संशोधित भी कर दिया है। इसके अतिरिक्त मार्केट के रूप में वेअरहाउस के माध्यम से देश में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में एग्री वेअरहाउसिंग का तेजी से विकास हो रहा है जिससे मौजूदा एग्री मार्केटिंग का बुनियादी ढांचा मजबूत हो रहा है तथा उन्हें पर्याप्त अवसर उपलब्ध करा रहा है।

भारत सरकार ने एक मॉडल कृषि उपज एवं पशुधन विपणन (प्रमोशन एंड फैसिलिटेशन) अधिनियम, 2017 प्रचालित किया है जिसमें सभी राज्यों को यह अधिनियम, अपनाने तथा उनके मौजूदा एपीएमसी अधिनियम को निरस्त करने के लिए निदेश दिए हैं। भारत सरकार के इस अधिनियम के प्रचालित होने से बहुत पहले ही कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना राज्यों ने अपने–अपने राज्य के मौजूदा एपीएमसी अधिनियम को निरस्त कर दिया है ताकि वेअरहाउसों/साइलोज़/कोल्ड स्टोरेज आदि स्थानों को मार्केट सब–यार्ड के रूप में कार्य करने के लिए अधिसूचित किया सके। आंध्र प्रदेश में आंध्र प्रदेश (कृषि उपज एवं पशुधन) विपणन अधिनियम, 1966 यथा संशोधित 14/2015 की धारा 4(3) के अंतर्गत एक प्रावधान किया गया है जो स्पष्ट करता है कि :–

प्रत्येक मंडी समिति निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार किसी भी वेअरहाउस/कोल्ड स्टोरज अथवा प्रसंस्करण ईकाई अथवा किसी अन्य स्थान को मार्केट यार्ड के रूप में अधिसूचित कर सकती है। वर्ष 2016 में आंध्र प्रदेश (कृषि उपज एवं पशुधन) विपणन नियम, 1969 के नियम 3ए में संशोधन करके यह प्रावधान किया गया।

उसी प्रकार तेलंगाना राज्य में भी तेलंगाना (कृषि उपज एवं पशुधन) विपणन नियम, 1966 यथा संशोधित अधिनियम 3/2016 की धारा 4(3) (बीबीबी) के अंतर्गत एक प्रावधान किया गया कि प्रत्येक मंडी समिति निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार किसी भी वेअरहाउस/कोल्ड स्टोरज अथवा प्रसंस्करण ईकाई अथवा किसी अन्य स्थान को मार्केट यार्ड के रूप में अधिसूचित कर सकती है।

*महाप्रबंधक (वाणिज्यिक), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

साधारणतया वह वेअरहाउस जो डब्ल्यूडीआरए द्वारा पंजीकृत है, उन्हें तत्काल प्रभाव से संबंधित राज्य सरकार द्वारा मार्केट सब–यार्ड के रूप में अधिसूचित किया जा सकता है, चूंकि डब्ल्यूडीआरए द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुसार वेयरहाउस को आवश्यक बुनियादी ढाँचा, गुणवत्ता और कृषि उपज के सुरक्षित भंडारण को सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक भंडारण प्रणाली का अनुपालन करना आवश्यक होता है।

राष्ट्रीय कृषक आयोग के अनुसार, कृषि उपज की मार्केटिंग के लिए 80 वर्ग किमी में एक मार्केटिंग आउटलेट होना चाहिए परंतु इसके विपरीत, हमारे देश में एक आउटलेट की उपलब्धता का औसत क्षेत्र 454 वर्ग किमी प्रति आउटलेट है और वहाँ उपलब्धता और आवश्यकता के बीच भारी अंतर देखने को मिलता है। इसलिए, राज्य सरकार की अधिसूचना द्वारा डब्लयूडीआरए द्वारा पंजीकृत वेअरहाउसों को मार्केट सब–यार्ड के रूप में घोषित करने से विभिन्न हितधारकों को कृषि उत्पादों के विपणन हेतु इस अंतर को कम किया जा सकेगा। इस समय देश में 1250 वेअरहाउसों को डब्ल्यूडीआरए द्वारा पंजीकृत वेअरहाउसों के मार्केट सब–यार्ड के रूप में घोषित होने से देश में कृषि विपणन के बुनियादी ढांचे के विस्तार के लिए स्वर्णिम अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

निर्बाध मार्केट की स्थापना के उद्देश्य के साथ, लेन–देन में प्रतिस्पर्धा एवं पारदर्शिता को बढ़ाने, और किसानों को उनकी कृषि उपज की बिक्री के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने के लिए प्रधानमंत्री ने दिनांक 14.04.2016 को एक पायलट परियोजना NAM (e-NAM) के लिए ई–ट्रेडिंग प्लेटफार्म शुरू किया। शुरूआत में 8 राज्यों की 21 मंडियो को NAM से जोड़ा गया था। वर्तमान में 585 मंडिया ई–नाम प्लेटफॉर्म से जुडी हुई हैं। राष्ट्रीय बाजार का निर्माण करने के लिए एपीएमसी के मौजूदा नेटवर्क तथा अन्य मार्केट यार्डों को जोड़कर देश में कृषि उत्पादों के लिए राष्ट्रीय कृषि बाजार ने पैन इंडिया स्तर पर एक इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल की परिकल्पना की है। हालांकि NAM एक आभासी बाजार है, पूर्व में यह मंडी के रूप में एक भौतिक बाजार था। ई–नाम के साथ मार्केट सब–यार्ड के रूप में घोषित वेअरहाउसों के एकीकरण से किसानों को उनकी कृषि उपज की बिक्री के लिए व्यापक मार्केट विकल्पों में वृद्धि होगी और 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के सरकार के महत्वाकांक्षी उद्देश्य तथा प्रयासों में यह सहायक सिद्ध होगा।

यदि कोई किसान मंडी में अपने कृषि उत्पाद का एक समय में निपटान नहीं करता है तो वह अपने बचे हुए उत्पाद के भंडारण हेतु वेअरहाउस में आता है, वेअरहाउसों को मार्केट–यार्ड के रूप में घोषित करने से किसानों को अपने कृषि उत्पादों को बार–बार मंडी ले जाने में लगने वाली परिवहन लागत में बचत होगी तथा किसान उचित समय आने पर अपने उत्पाद को सीधे वेअरहाउस से बेच सकता है। इसका एक अन्य प्रमुख लाभ यह भी है कि मार्केट यार्ड के रूप में घोषित वेअरहाउस में रखे गए किसान के उत्पाद पर एक नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद जारी की जाती है जिसको गिरवी रखकर किसान बैंक से आसानी से ऋण प्राप्त कर सकता है। वास्तव में, नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद को गिरवी रखकर फसल उपरांत ऋण की सुविधा कृषि क्षेत्र की संवृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण घटक साबित हुई है। किसान और व्यापारी इस प्रणाली के माध्यम से अत्यधिक लाभान्वित हुए हैं। परिणामस्वरूप इस सुविधा से देश के ग्रामीण बाजार भी अत्यधिक लाभान्वित हो रहे हैं।

कृषि उपज के लिए एक बेहतर ऑनलाइन मार्केटिंग प्लेटफार्म स्थापित करने से बिक्री गतिविधि आधारित वेअरहाउसों के माध्यम से राज्यों को भी लाभ होगा। वेअरहाउसों को मार्केट–यार्ड के रूप में घोषित करने से तथा उन वेअरहाउसों में तकनीकी कुशल श्रमशक्ति की उपलब्धता से देश में वेअरहाउस अधिसूचित मार्केट नेटवर्क के माध्यम से विभिन्न कृषि उपजों के लिए गुणवत्ता मानकों में सामंजस्य करना बहुत आसान काम हो जाएगा। इससे पंजीकृत वेअरहाउसों में विभिन्न वस्तुओं के मूल्य स्थिरीकरण में भी मदद मिलेगी।

वेअरहाउसों के मार्केट–यार्ड के रूप में प्रचालन से केंद्रीय भंडारण निगम को अत्यंत लाभ होगा। जैसे– किसानों और व्यापारियों द्वारा भंडारण स्थान का उपयोग किया जाएगा जिससे निगम की अधिभोग क्षमता बढ़ेगी परिणामस्वरूप भंडारण आय में वृद्धि होगी। वेअरहाउसों में कृषि उत्पादों के होने से कीट नियंत्रण गतिविधियों से निगम को आय होगी। मंडी गतिविधियों जैसे कि तौल, ग्रेडिंग, बैगिंग आदि के माध्यम से निगम में अतिरिक्त राजस्व का सृजन होगा। वेअरहाउस मार्केट के माध्यम से उपयोगकर्ता शुल्क संग्रहण से सीडब्ल्यूसी के टर्नओवर में वृद्धि हो सकेगी।

निगम के हैदराबाद क्षेत्र में आंध्र प्रदेश राज्य के 7.40 लाख मीट्रिक टन की क्षमता के अपने 23 तथा तेलंगाना राज्य के 4.06 लाख मीट्रिक टन की क्षमता के 14 पंजीकृत वेअरहाउस क्रमशः आंध्र प्रदेश सरकार के शासनादेश दिनांक 29.08.2019 तथा तेलंगाना सरकार के शासनादेश दिनांक 07.09.2019 के द्वारा मार्केट यार्ड के रूप में अधिसूचित किए गए हैं।

वर्तमान में ई–एनडब्ल्यूआर सॉफ्टवेयर का ई–नाम पोर्टल से इंटीग्रेशन का कार्य प्रगति पर है। इंटीग्रेशन कार्य पूर्ण होने के बाद वेअरहाउस का मार्केट यार्ड के रूप में प्रचालन का अधिकारिक शुभारंभ आंध्र प्रदेश के सैन्ट्रल वेअरहाउस, दुग्गीराला एवं तेलंगाना में तथा सैन्ट्रल वेअरहाउस, सूर्यापेट से किया जाएगा। इससे किसान एवं व्यापारी अपनी सुविधा अनुसार घर बैठे ही सीधे ई–नाम पोर्टल से ई–एनडब्ल्यूआर द्वारा अपना उत्पाद ऑनलाइन बेच सकते हैं तथा अपनी कृषि उपज के लिए उचित दाम भी पा सकते हैं। केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा दी जाने वाली यह सुविधा किसान एवं व्यापारी वर्ग के लिए वरदान सिद्ध होगी और इससे हमारे देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास की कहानी में एक नया अध्याय बनेगा।

श्री प्रदुयमना, आईएएस, विशेष आयुक्त एवं निदेशक कृषि विपणन, आंध्र प्रदेश सरकार से अधिसूचना प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक श्री सैम्युएल प्रवीण कुमार।

- कृषि एवं औद्योगिक कार्यकलापों के क्षेत्र में वेअरहाउसिंग एक महत्वपूर्ण घटक है। विकासशील अर्थव्यवस्था में वेअरहाउसिंग प्रणाली का विशेष महत्व है जो उत्पाद के लिए सुरक्षित वैज्ञानिक भंडारण प्रदान कर सकता है।
- किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए खाद्यान्नों को संजोकर रखना अत्यंत आवश्यक है। खाद्यान्नों का सीधा संबंध मानवीय अस्तित्व से जुड़ा है, अतः खाद्यान्नों का संरक्षण करना आने वाले कल के लिए जरूरी है।
- निगम अपनी वैज्ञानिक भंडारण सुविधाओं के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है तथा खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण से किसानों की खुशहाली में स्थिरता आई है और पूरे देश में इसकी लोकप्रियता बढ़ी है।
- निगम ग्राहकों के स्टॉक का स्वामी नहीं है बल्कि यह एक अभिरक्षक और अमानतदार के रूप में कार्य कर रहा है तथा वैज्ञानिक भंडारण की दिशा में आज कीटनाशन सेवाओं एवं प्रधूमन कार्य की व्यवस्था पर भंडारित माल का परिरक्षण किया जाता है।

देश की प्रगति के लिए आवश्यक है वैज्ञानिक भंडारण

मानव जीवन के लिए प्रकृति का अनुपम उपहार खाद्यान्न है जिसे संजोकर रखना किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। खाद्य समस्या एक ऐसी विकट समस्या है जो हर प्रकार की समस्याओं को जन्म देकर किसी भी राष्ट्र में उथल–पुथल मचाकर उसे पतन के कगार पर खड़ा कर सकती है। चूंकि मानव जीवन का अस्तित्व खाद्यान्नों से जुड़ा है, अतः ऐसी जीवनोपयोगी वस्तु के उत्पादन में न केवल निरन्तर वृद्धि करना बल्कि उसके दाने–दाने को बचाकर रखना मानव की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

खाद्यान्न का रख–रखाव व वैज्ञानिक भंडारण ऐसी प्रक्रिया है जो किसी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है। केन्द्रीय भंडारण निगम ने वेअरहाउसिंग अधिनियम, 1962 के अंतर्गत अपना सफर शुरू किया था और बढ़ते–बढ़ते आज यह एक प्रमुख भंडारण एजेन्सी के रूप में जमाकर्ताओं के विभिन्न वर्गों हेतु वैज्ञानिक भंडारण की व्यवस्था कर रहा है।

अनाज को सुरक्षित रखने के सरल उपाय

खाद्यान्न मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। मनुष्य जीवन में कई चीजों की कमी बर्दाश्त कर लेता है लेकिन भूखा नहीं रह सकता। संभवतः इसी तथ्य के दृष्टिगत हमारे शास्त्रों में अन्न को अमृत कहा गया है। अतः अन्न को खराब होने से बचाना बहुत जरूरी है। एक अनुमान के अनुसार फसल कटाई से लेकर थ्रैसिंग एवं परिवहन के दौरान तथा दोषपूर्ण भंडारण से 10 प्रतिशत अनाज बेकार हो जाता है जिसमें से 7 प्रतिशत अनाज उत्पादकों द्वारा अपने घरों एवं परिसरों में केवल गलत तरीकों से भंडारित करने से खराब होता है। इससे किसानों तथा अन्ततः देश को कितनी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है, इसका अनुमान लगाना कोई मुश्किल नहीं है। दूसरी ओर, अनाज का उत्पादन काफी मंहगा हो गया है क्योंकि किसान को बिजली, पानी, बीज, उर्वरकों तथा कृषि यंत्रों जैसे विभिन्न आदानों पर भारी खर्च करने सहित जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। अतः अनाज के एक–एक दाने को सुरक्षित रखा जाना चाहिए।

*भारत में वैज्ञानिक भंडारण–एक विवेचन पुस्तक से साभार

किसान अनाज को कैसे सुरक्षित रखें

अनाज को खराब होने से बचाने का सबसे अच्छा एवं सरल उपाय है कि उसे नजदीक के केन्द्रीय अथवा राज्य वेअरहाउस में भंडारित करवा दिया जाए जहाँ उसका वैज्ञानिक रूप से भंडारण किया जाता है, अन्न के पोषक तत्वों एवं वाणिज्यिक गुणवत्ता को बनाए रखा जाता है तथा किसानों को भंडारण प्रभारों में 30 प्रतिशत की विशेष छूट भी दी जाती है।

यदि किसान अपने घरों अथवा गोदामों में अनाज का सुरक्षित भंडारण करना चाहते हैं तो वे निम्नलिखित उपाय अपना सकते हैं।

भंडारण से पहले अनाज को साफ करें तथा सुखाएं

नमी वाले अनाज को कभी भंडारित न करें क्योंकि नमी से अंकुरण, सड़न, फफूंदी, गर्मी तथा पिंड बनाने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है तथा अनाज जल्दी खराब होने लगता है। इसलिए भंडारित किए जाने वाले अनाज से बाहरी तत्व जैसे पेड़ पौधों के टुकड़े, डंठल, पत्ते, तिनके और धूल आदि निकाल कर अनाज को धूप में सुखा लें तथा ठण्डा होने के बाद भंडारित करें। यह पता लगाने के लिए कि अनाज पूरी तरह सूख गया है या नहीं, इसके एक–दो दाने दातों तले रखकर चबाएं, यदि कड़क की आवाज आये तो समझ जाएं कि अनाज सूख गया है और भण्डारित करने लायक है।

गोदामों की सफाई

अनाज के भंडारण के लिए जिन गोदामों का प्रयोग पहले हो चुका है, उनके फर्श तथा दीवारों आदि की दरारों के अंदर अनाज के कुछ दाने रह जाते हैं जिन पर कीट–कृमि अंडे देते रहते हैं। ऐसे गोदामों में जब अनाज का भंडारण किया जाता है तो अनाज आसानी से कीटग्रस्त हो जाता है। अतः अनाज का भंडारण करने से पहले गोदामों की अच्छी प्रकार से सफाई की जानी चाहिए। फर्श तथा दीवारों की दरारें भरवा दी जाएं। गोदामों में सफेदी की जाए तथा मैलाथियान का छिड़काव किया जाए।

यदि अनाज को लोहे की टंकियों में भंडारित करना है तो टंकियों को अच्छी तरह साफ करके दो–तीन दिन धूप में सुखाएं। तत्पश्चात् ठंडी होने के बाद इनमें अनाज का भंडारण करें।

नए अनाज को पुराने अनाज से दूर रखें

नए अनाज को पुराने अनाज के पास अथवा उसके साथ भंडारित करने से नया अनाज भी कीटग्रस्त होने लगता है। अतः नए अनाज को न तो पुराने अनाज में मिलाएं और न इसे पुराने अनाज के साथ भंडारित करें।

अनाज को साफ बोरों में भरें

जब पुराने बोरों को नया अनाज भरने के लिए दोबारा प्रयोग में लाया जाता है तो पुराने बोरों में बचे–खुचे दानों पर पोषित कीट नए अनाज को संक्रमित कर देते हैं। अतः यदि आप नए अनाज को भरने के लिए पुराने बोरों का प्रयोग कर रहे हैं तो इन्हें अच्छी तरह साफ करके धूप में सुखा लें तथा ठंडे होने के बाद उनमें अनाज भरें।

अनाज को ढोने वाले वाहनों की सफाई

अनाज की ढुलाई के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले वाहन जैसे ट्रक गाड़ी इत्यादि में बचे–खुचे अनाज पर कीट पलते रहते हैं। अतः नए अनाज की ढुलाई करने से पहले इनको पूरी तरह से साफ कर लें।

अनाज को फर्श की सीलन से बचाने के लिए निभार (डनेज) का प्रयोग करें

अनाज के बोरे सीधे ही फर्श पर भंडारित कर देने से फर्श की सीलन से अनाज क्षतिग्रस्त होने लगता है। अतः अनाज के बोरे सीधे भंडारित न किए जाएं। अनाज तक फर्श की नमी न पहुँचे इसके लिए किसी उचित निभार सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। लकड़ी की पट्टियां या बांस की दो चट्टानों के बीच पोलीथीन रख कर उसका निभार (डनेज) रूप में प्रयोग करना चाहिए। यदि आप कमरों में अनाज भंडारित करना चाहते हैं तो पूरे फर्श पर बांस की चटाइयों के बीच पोलीथीन डालकर उसे निभार के रूप में प्रयोग किया जाये।

गोदामों को हवा लगाना

जहां तक हो सके धूप वाले दिनों में गोदामों में हवा जानी चाहिए। बरसात के दिनों में दरवाजे तथा रोशनदान बंद रखे जाने चाहिए।

कीट ग्रस्तता का पता कैसे लगाया जाए

यह अति आवश्यक है कि कीटग्रस्तता का जितनी जल्दी हो सके पता लगाया जाए ताकि नियंत्रण उपाय किए जा सकें। कीट ग्रस्तता का पता लगाने का सबसे सरल तरीका यह है कि पूरे अनाज में से कहीं–कहीं से एक किलोग्राम अनाज ले लें और इसे छलनी में रख कर हिला लें। यदि उसमें कीट इत्यादि होंगे तो नीचे गिर जायेंगे, जिन्हें आप आसानी से देख सकते हैं।

कीट नियंत्रण

अनाज के भंडारण से पहले गोदामों में अच्छी तरह कीटनाशक दवा का छिड़काव किया जाना चाहिए। इसके लिए आप 50 प्रतिशत ई.सी. मैलाथियान को 1:100 के अनुपात में पानी मिलाकर घोल तैयार कर लें तथा प्रत्येक

100 वर्ग मी. के क्षेत्र में तीन लीटर की दर से इसका छिड़काव करें। मैलाथियान के घोल का हर 15 दिन के बाद तीन लीटर की दर से 100 वर्ग मी. क्षेत्र में रखे बोरों पर भी छिड़काव किया जाना चाहिए।

खाद्यान्नों का धूमीकरण

यदि आपने अनाज ऐसे भंडारण ढांचों/पात्रों में रखा हुआ है जिन्हें पूरी तरह वायुरूद्ध किया जा सकता है तो आप खाद्यान्नों की कीटग्रस्तता के नियंत्रण के लिए इसके धूमीकरण हेतु एल्यूमिनियम फासफाइड का 9 ग्राम (3 टिकिया) प्रति मीट्रिक टन की दर से प्रयोग में ला सकते हैं।

चेतावनी

एल्यूमिनियम फासफाइड एक जहर है। इसका प्रयोग सावधानी पूर्वक किया जाए। अच्छा होगा यदि आप इस कार्य में प्रशिक्षित व्यक्ति की सहायता ले लें। एल्यूमिनियम फासफाइड की ट्यूब को ताले में बंद करके रखा जाना चाहिए।

चूहों पर नियंत्रण

चूहे अनाज के प्रमुख शत्रु हैं। चूहें न केवल अनाज को खाते हैं बल्कि खाने से अधिक उसे बर्बाद करते हैं। चूहे अपने मल–मूत्र, आदि से अनाज को दूषित कर देते हैं। चूहों पर निम्नलिखित तरीकों से नियंत्रण किया जा सकता हैः–

चूहेदानी का प्रयोग करें

चूहों को पकड़ने के लिए विभिन्न प्रकार की चूहेदानियों का प्रयोग किया जा सकता है। चूहों को मारने के लिए चूहेदानी को पानी में डुबाकर चूहों को मारा जा सकता है।

बेट्स (चारा) का प्रयोग

बेट्स के रूप में रसायनों का प्रयोग चूहे मारने के लिए किया जा सकता है जो 0.5 प्रतिशत सूखा सान्द्र 0.5 प्रतिशत पानी में घुलनशील यौगिक तथा सूखे बेट के रूप में मिलते हैं। ये स्कंदकोधी (ऐंटीकोगुलेंट्स) धीरे–धीरे असर करने वाले रसायन हैं जिनके खाने से चूहों में आंतरिक रक्त स्राव होता है और वे मर जाते हैं।

चेतावनी

चूहों को मारने के लिए प्रयोग किए जाने वाले रसायनों को हमेशा ताले के अंदर, घरेलू पशुओं व बच्चों से दूर रखें। बेट का उपयोग करने के बाद हाथों को अच्छी प्रकार धो लेना चाहिए।

प्रधूमकों का प्रयोग

चूहों के नियंत्रण के लिए ए.एल.पी. टिकिया से चूहों के बिलों को प्रधूमित किया जा सकता है। ए.एल.पी. टिकिया डालने के बाद चूहों के बिलों पर अथवा आस–पास की खुली जगह/छेदों को मिट्टी से लीप कर वायुरोधी बना देना चाहिए।

चेतावनी

एल्यूमिनियम फासफाइड एक जहर है। अतः इसका प्रयोग अत्यन्त सावधानी से किया जाए। हाथों को साबुन से अच्छी प्रकार से धो लेना चाहिए तथा प्रयोग करते समय इसे कम से कम खुला रखा जाए ताकि हवा के साथ इसकी क्रिया न हो सके। टिकियों को बच्चों से दूर ताले के भीतर रखा जाना चाहिए।

वेअरहाउसिंग– कारोबार की सफलता वेअरहाउसों की क्षमता के निरन्तर भरपूर उपयोग पर ही निर्भर है। दूसरे शब्दों में, यदि किसी वेअरहाउस की धारिता इष्टतम स्तर पर बनाए रखी जाती है तो व्यवसाय से लाभ प्राप्त होना निश्चित है।

जमाकर्ताओं के साथ किया जाने वाला व्यवहार एवं वातावरण

प्रत्येक वेअरहाउस कर्मी का जमाकर्ताओं तथा सभी आगन्तुकों के साथ सौहार्दपूर्ण एवं मृदु व्यवहार होना चाहिए क्योंकि वेअरहाउस के लिये एक सन्तुष्ट ग्राहक उसका सबसे अच्छा एवं प्रभावकारी विज्ञापन होता है। हम ग्राहकों पर निर्भर हैं वे हम पर नहीं। दूसरी ओर, हमें इस बात का एहसास भी रहना चाहिए कि जमाकर्ता अच्छे व्यवहार के साथ अच्छी सुविधाएं भी चाहते हैं। अतः वेअरहाउस परिसर में साफ सफाई सहित सभी मूलभूत सुविधाएं होनी चाहिए। अनचाही घास, झाड़–झंखाड़ तथा कबाड़ को हटा देना चाहिए ताकि ट्रकों के आने–जाने की सुचारू व्यवस्था बनी रहे एवं एक सुव्यवस्थित कार्य वातावरण बने।

हल्दी की फसल की समस्याएँ, समाधान एवं फसलोत्तर भंडारण

राशिद परवेज़*

परिचय

हल्दी (कुरकुमा लोंगा) (कुलः जिंजिबिरेसिया) को अपने धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त मसाला, रंग सामग्री, औषधि और उपटन के रूप में उपयोग किया जाता हैं। भारत विश्व में हल्दी का सबसे बडा उत्पादक एवं उपभोक्ता देश है। आन्ध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, उड़ीसा, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, गुजरात, मेघालय, महाराष्ट्र, असम आदि हल्दी उत्पादित करने वाले प्रमुख राज्य हैं। निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण इस की बढ़ती हुई मांग के अनुरूप पूर्ति न कर पाना भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए एक चिन्ता का विषय है। हल्दी की फसल के उत्पादन में गिरावट के प्रमुख कारणों में से एक इनको हानि पहुंचाने वाले रोग, कीट एवं सूत्रकृमि की समस्याओं के प्रति कृषकों का उचित समाधान न जानना है। अतः प्रस्तुत लेख में हल्दी को हानि पहुंचाने वाले रोग, कीट, सूत्रकृमि तथा उनके प्रबन्धन एवं फसलोत्तर भंडारण हेतु उचित विधियों का उल्लेख किया गया है।

रोग

पर्णदाग (लीफ ब्लोच) रोग

यह रोग टापहीना मेकुलान्स नामक कवक के द्वारा होता है। इसके संक्रमण से छोटे, अण्डाकर, आयताकार या अनियमित भूरे रंग के दाग पत्तियों पर पड़ जाते हैं जो जल्दी ही गहरे पीले या भूरे रंग के हो जाते हैं जिससे पौधे की पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं। इस रोग की अत्यधिकता से पौधों में सूखापन आ जाता है जिसके फलस्वरूप फसल की पैदावार में कमी आती है।

प्रबन्धन

- संक्रमित पत्तियों को तोड़कर जला देना चाहिए।
- खेत में रोग के लक्षण दिखायी देने पर मेनकोजेब (0.2%) या कार्बेडिजम (0.3%) का एक माह के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

पर्ण चित्ती (लीफ स्पोट) रोग

यह रोग कोलीटोट्राइकम केप्सीसी के द्वारा होता है। इसके संक्रमण के कारण नई पत्तियों के ऊपरी भाग में विभिन्न आकार की भूरे रंग की चित्ती पड़ जाती हैं। यह चित्ती बाद में एक दूसरे से मिलकर पूरी पत्ती पर फैल जाती है। रोग ग्रसित पौधे प्रायः सूख जाते हैं। इस कारण प्रकन्द अच्छी तरह विकसित नहीं हो पाता।

प्रबन्धन

- बुआई के लिए रोग मुक्त प्रकन्दों का चयन करना चाहिए।
- प्रकन्दों को भंडारण से पहले मेनकोजेब (0.3%) से उपचारित करना चाहिए।
- फसल कटाई के बाद बची हुई संक्रमित पौध सामग्री को वहां से निकाल कर जला देना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर मेनेकोजेब (0.2%) या कार्बेनडिजम (0.3%) का एक माह के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

राइज़ोम गलन रोग

यह रोग पाइथीयमग्रेमिनिकोलम या पी अफानिडेरमाटम के द्वारा होता है। इस रोग के लक्षणों में आभासी तने का

*प्रधान वैज्ञानिक, सूत्रकृमि संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान सस्थांन, नई दिल्ली

कोलर भाग मुलायम/नर्म पड़ कर पानी सोख लेता है। जिसके कारण प्रकन्द सड़ जाता है। अतः पौधा मर जाता है।

प्रबन्धन

- बुआई के लिए रोग मुक्त प्रकन्दों का चुनाव।
- भंडारण से पहले प्रकन्दों को मेनकोजेब (0.3%) से उपचारित करना चाहिए।
- खेत में पानी के जमाव को रोकने के लिये उपयुक्त नाली बनाकर पानी का निकास करना चाहिए।
- बुआई वाले स्थान को सौरीकरण करना चाहिए।
- बुआई के समय तथा बुआई के 45 दिन बाद ट्राइकोटरमा हरजियानम (10^7 सी एफ यू/ग्राम) के साथ 50 ग्राम नीम केक से उपचारित करना चाहिए।
- बेडो पर जैविक छपनी तथा आयल केक को मृदा को उन्नत करने तथा जैव नियन्त्रण कारकों की वृद्धि हेतु उपयोग करना चाहिए।
- उपयुक्त फाइटोसेनिटेशन माध्यमों को अपनाना चाहिए।
- खेतों में रोग के लक्षण दिखाई देने पर कोपर ओक्सीक्लोराइड (0.2%) से उपचारित करना चाहिए।

कीट

तना भेदक

तना भेदक (कोनोगीथस पंक्टिफैरीलिस) हल्दी की फसल को हानि पहुचाने वाले प्रमुख कीट हैं। इसका लार्वा आभासी तने को भेद कर उसकी आन्तरिक कोशों को खा लेता है। इसके द्वारा भेदित तने के छिद्र से फ्रास निकलता है। पौधे की ऊपरी भाग की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। इसका वयस्क मध्यम आकार का होता है। जिसमें 20 मि. मीटर शलभयुक्त नारंगी पीले रंग के पंख होते हैं। जिस पर सूक्ष्म काली चित्ती के निशान होते हैं। इसके लार्वा हल्के भूरे रंग के होते हैं।

प्रबन्धन

- मेलियियोन (0.1%) या लेमडा –साहहेलोथ्रीन (0.0125%) का जुलाई से अक्तूबर में मध्य माह के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
- अगर पौधे पर इस कीट के लक्षण दिखाई दे तो तुरन्त छिड़काव करना चाहिए।

राइज़ोम शल्क

राइज़ोम शल्क (अस्पिडियल्ला हारतीया) खेत के अन्दर तथा भण्डारण में प्रकन्दों को हानि पहुँचाते हैं। इसकी वयस्क मादा गोलाकर (लगभग 1 मि.मीटर), हल्के भूरे रंग की होती है। यह प्रकन्दों का सार चूस लेते हैं जिससे वह सूख कर मुरझा जाते हैं जिसके कारण इसके अंकुरण में समस्या आती है।

प्रबन्धन

- फसल की कटाई समय पर करनी चाहिए।
- कीटग्रसित प्रकन्दों को भंडारण न करके उन्हें नष्ट कर देना चाहिए।
- बीज प्रकन्दों को क्विनालफोस (0.075%) मे डुबो कर उपचारित करने के पश्चात लकड़ी के बुरादे तथा स्टूकनोस नकसबोमिका की पत्तियों के साथ भंडारण करना चाहिए।

अप्रधान कीट

लीफ फीडिंग बीटल (लीमा स्पीसीस) के वयस्क और लार्वे हल्दी के पौधों की पत्तियों को खा लेते हैं विशेषकर, मानसून काल और उसके समकक्ष यह फसल को ज्यादा हानि पहुँचाते हैं। तना भेदक के प्रबन्धन के लिए मैलिथियोन (0.1%) का छिड़काव इस कीट के नियन्त्रण के लिए भी पर्याप्त है।

लेसविंग वर्ग (स्टीफानिटस टिपिकस) पत्तियों को हानि पहुँचाते हैं जिसके कारण पत्तियाँ सूख जाती हैं। देश के शुष्क क्षेत्रों में, विशेषकर मानसून के बाद यह कीट ज्यादा खतरनाक होते हैं। इन कीटों को नियन्त्रण करने के लिए डिमेथोयड (0.05%) का छिड़काव करना चाहिए।

थ्रिप्स (पानकेटोथ्रिप्स इंडिकस) विशेषकर पत्तियों को हानि पहुँचाती हैं जिसके कारण पत्तियाँ मुड़ने लगती हैं तथा हल्की पड़कर धीरे–धीरे सूख जाती हैं। देश के शुष्क क्षेत्रों में, विशेषकर मानसून के बाद यह कीट ज्यादा हानि पहुँचाते

हैं। इन कीटों को नियन्त्रण करने के लिए डिमेथोयट (0.05%) का छिड़काव करना चाहिए।

सूत्रकृमि

सूत्रकृमि अक्सर जड़ ऊतकों के कार्यो में बाधा पहुँचाते हैं। उनके द्वारा संक्रमित पौधों की जड़ें मिट्टी से उचित पोषण एवं पानी नहीं ले पाती हैं जिसके कारण पौधे के ऊपरी भागों में लक्षण उत्पन्न होते हैं जैसे, पोषण की कमी, शुष्कता, लवण की अधिकता व अन्य तनाव की परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। पौधों की वृद्धि रुक जाती है, पत्तियां पीली पड़ जाती हैं तथा शाखायें कम निकलती हैं। इसकी फसल को मुख्यतः निम्नलिखित सूत्रकृमि हानि पहुंचाते हैं।

जड़ गांठ सूत्रकृमि (मेलोडोगाईन स्पी.)

यह सूत्रकृमि जड़ों के अन्तर्जीवी हैं। इस सूत्रकृमि की कई उपजातियां हैं, परन्तु मेलोडोगाईन इनकॉगनिटा तथा एम. जावानिका ही मुख्यतः हल्दी को हानि पहुँचाती हैं। सूत्रकृमि द्वारा संक्रमित जड़ों में गाठें बन जाती हैं। प्रायः इन गाठों को अलग नहीं किया जा सकता। मिट्टी में रहकर यह नई जड़ों को भेद कर उनके अन्दर घुस जाते हैं तथा पानी और खाना ले जाने वाली कोशिकाओं पर आक्रमण करते हैं। यह सूत्रकृमि अपना जीवनचक्र लगभग 25–30 दिनों में पूरा कर लेते हैं। तत्पश्चात यह सूत्र कृमि गोलाकार होकर जड़ों में गांठे पैदा करते हैं। इन गाठों के कारण पौधे मृदा में पोषक तत्व तथा पानी की उपलब्धता होते हुए भी पर्याप्त मात्रा में उसे ग्रहण नहीं कर पाते।

जड़ विक्षत सूत्रकृमि (प्राटाइलेंकस स्पी.)

यह सूत्रकृमि मुख्यतः हल्दी को हानि पहुंचाते हैं। इस सूत्रकृमि की बहुत सी उपजातियां भारत में पाई जाती हैं। रोगी पौधे के ऊपरी भागों के लक्षण अस्पष्ट होते हैं। पौधे के ऊपरी भागों की वृद्धि रुकना, पीलापन तथा सबसे प्रमुख लक्षण, जड़ों के ऊपर धब्बे पड़ना है जिनकी परिसीमा सूत्रकृमि जनसंख्या घनत्व के साथ बदलती रहती हैं। धब्बे दिखने में छोटे, लम्बे तथा पनीले होते हैं तथा शीघ्र ही भूरे या लगभग काले हो जाते हैं।

प्रबन्धन

- बुआई के लिए सूत्रकृमि रहित प्रकन्दों का उपयोग करना चाहिए।
- संक्रमित प्रकन्दों को गरम पानी (50°C) में 10 मिनट तक डुबो कर उपचारित करना चाहिए।
- खेती के लिये चयनित जगह का सौरीकरण करना चाहिए।
- बेडों पर जैविक छपनी तथा आयल केक को मृदा को उन्नत करने के अतिरिक्त जैव नियन्त्रण कारकों की वृद्धि हेतु उपयोग करना चाहिए।
- बुआई के समय पौकोनिया कलामाइडोस्पोरिया (20 ग्राम/बेड 10^6 सी एफ यू/ग्राम) से उपचारित करना चाहिए।
- जहां जड़गांठ सूत्रकृमि की समस्या है वहां आई आई एस आर – महिमा प्रजाति को खेती के लिये चुनना चाहिए।

बीज राइज़ोम का भण्डारण

वह राइज़ोम जो बीज के रूप में उपयोग होते हैं, उन का भंडारण हवादार कमरे में पतों से ढक कर करते हैं। बीज राइज़ोम को गड्ढों में लकड़ी का बुरादा, बालू और स्टाइकनोस नकसबोमिका (कन्जीरम) के पत्ते रख कर भी भंडारण किया जा सकता है। इन गड्ढों को लकड़ी के तख्ते से ढ़क देते हैं। इन तख्तों को हवादार बनाने के लिए इनमें एक या दो छेद कर देते हैं। शल्क ग्रेसित राइज़ोम को 15 मिनट तक क्विनालफोस (0.075%) तथा कवग ग्रेसित राइज़ोम को मैनकोजेब (0.3%) से उपचारित करते हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त उल्लेखित रोगों, कीटों एवं सूत्रकृमियों द्वारा हल्दी को पहुंचाने वाली हानि से बचा जा सकता है। यदि हम समय पर उचित नियन्त्रण विधियां अपनाकर उनका प्रबन्धन कर दें जिससे न सिर्फ फसल को सुरक्षित किया जा सकता है, बल्कि उपज भी बढ़ाई जा सकती है। जब उपज बढ़ेगी तब निश्चित ही लाभ का अनुपात भी बढ़ेगा, जिससे कृषक के खुशहाल होने के साथ–साथ हमें हल्दी के लिए अन्य देशों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा।

कोरोना संकट और सूचना तकनीक

बालेन्दु शर्मा 'दाधीच'*

कारोना संकटकाल में दो चीजें हर आम और खास के लिए प्रासंगिक हो गयी हैंः पहली, सोशल डिस्टेंसिंग और दूसरी, सोशल मेसेजिंग, इन दोनों का असर हमारे घर, दफ़्तर, कारोबार, अर्थव्यवस्था, सामाजिक जीवन, शिक्षा, यहां तक कि साहित्य–संस्कृति पर भी पड़ा है। ज्यादातर लोग अनायास ही इनके इतने निकट आ गये, हालांकि अब ऐसा लगता है कि यह संबंध लंबे समय तक चलेगा, सोशल मेसेजिंग को महज चैट के रूप में देखने की बजाय डिजिटल संपर्क के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है, जो अपने व्यापक अर्थों में बहुत सारी दूसरी घटनाओं को समेट लेता है, जैसे– ऑनलाइन कोलेबोरेशन, डिजिटल मनोरंजन, आभासी बैठकें, डिजिटल कारोबार और आभासी शिक्षा आदि।

इस त्रासदी के दौर में जो चंद सकारात्मक बातें हुई हैं, उनमें से एक है हम सबका तकनीक के करीब जाना, उसकी क्षमताओं से परिचित होना और उसका इस तरह इस्तेमाल करना कि अपने कामकाज को कुछ हद तक सामान्य ढंग से चलाया जा सके, तकनीक, विशेषकर इंटरनेट और क्लाउड की शक्ति नहीं होती, तो इस महामारी से निपटना निजी तथा राष्ट्रीय स्तर पर बहुत ज्यादा मुश्किल होता, एक कहावत है कि अगर आप तीन सप्ताह तक किसी खास अंदाज में काम करते हैं या किसी खास चीज का प्रयोग करते हैं, तो वह आपकी आदत बन जाती है। तकनीक का हमारी आदत में तब्दील हो जाना वैश्वीकरण और तकनीकी दबदबे के मौजूदा दौर में एक अच्छी घटना है, इसी तरह कोरोना वायरस से बचाव के प्रयासों में तकनीक का बड़े पैमाने पर सहयोगी बनकर उभरना भारत में पहली बार देखा गया। तकनीक ने न सिर्फ लोगों को जोड़े रखने में, बल्कि तेजी से सूचनाएँ पहुँचाने, गतिविधियों को व्यवस्थित करने और यहाँ तक कि संभावित रोगियों पर नजर रखने में भी मदद की है, परन्तु इनके विरोधाभासी पहलू भी हैं। प्रौद्योगिकी अपने आप में एक लोकतांत्रिक और समावेशी किस्म की ताकत है, लेकिन कोरोना संकट ने उसकी सीमाओं को भी उजागर किया है, माना कि प्रौद्योगिकी अपने स्तर पर सूचनाओं को बाधित नहीं करती और सबको सशक्त बनाने की क्षमता रखती है, लेकिन उसकी यह शक्ति बहुत से पहलुओं पर निर्भर है, यह बात पहले इतनी शिद्दत से महसूस नहीं की गयी, जितनी इस बार, जैसे, दिल्ली की एक बड़ी सोसाइटी में जब छोटे कामगारों (माली, धोबी, कूड़ा उठाने वाला, काम करने वाली बाई, ड्राइवर आदि) को काम शुरू करने की इजाजत देने पर विचार हुआ, तो इन लोगों पर जो बहुत सारी (और जरूरी) पाबंदियां लगाई गयीं (फेस मास्क, सैनिटाइजर, सोशल डिस्टेंसिंग आदि) उनमें एक जगह आकर बात अटक गयी, वह भी सबके मोबाइल फोन में 'आरोग्य सेतु' एप का होना, ज्यादातर छोटे कामगारों के पास स्मार्टफोन नहीं, बल्कि सस्ते मोबाइल फोन हैं, जिन पर एंड्रॉयड एप्स नहीं चलते, यहाँ तकनीक की सीमा सामने आ गयी, आरोग्य सेतु एप संकेत देता है कि आपके आस–पास कोई कोरोना संक्रमित व्यक्ति तो नहीं है, इसी तरह, एप रखने वाले किसी व्यक्ति के संक्रमित हो जाने पर यह सरकारी एजेंसियों को सूचित करने का भी एक अच्छा जरिया है, वह तीसरे पक्ष के लिए भी जरूरी है, जैसा उपरोक्त सोसायटी के मामले से स्पष्ट होता है, ये लोग स्मार्टफोन के अभाव में खुद भी असुरक्षित हैं और उनके संपर्क में आने वाले दूसरे लोग भी, तब कैसे कहा जाये कि तकनीक की ताकत समावेशी, निष्पक्ष और लोकतांत्रिक है ?

ऐसे लाखों छात्र लॉकडाउन में ऑनलाइन शिक्षा के दायरे से बाहर रह गये, जिनके पास स्मार्टफोन या पर्सनल कंम्यूटर नहीं है, ऐसे बहुत से लोग कोलेबोरेशन या

*निदेशक (लोकलाइजेशन), माईक्रोसॉफ्ट

सहकर्म के दायरे से बाहर रह गये, जिनके घर पर कंप्यूटर नहीं है या फिर अच्छी इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, जहाँ शहरी इलाकों की बड़ी आबादी का काम तकनीकी माध्यमों की मदद से चलता रहा, वहीं ग्रामीण और अविकसित इलाकों में बहुतों को पता ही नहीं चला कि ऐसा भी कोई रास्ता निकाला गया था, पता चलता भी, तो बिजली की अनुपलब्धता, डिजिटल उपकरण या फिर तकनीकी दक्षता के अभाव के कारण वे पीछे ही रहते। यदि भाषा की चुनौती तथा गरीबी से जुड़े मसले जोड़ दें, तो ऐसा लगेगा कि इस दौर में डिजिटल विभाजन बढ़ा ही है, सच यही है कि तकनीक समृद्ध लोग आगे निकल गये हैं और तकनीक वंचित पीछे छूट रहे हैं, सोशल मीडिया ने संकटकाल में सूचनाओं के माध्यम से लोगों को एक–दूसरे से जोड़े रखा, लेकिन इन्हीं माध्यमों पर गलत सूचनाएं, फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार ने भी जोर पकड़ा, लोगों के बीच भय और नफरत फैलानेवालों को तो अच्छा मौका मिला, क्योंकि इस समय लोगों के पास अतिरिक्त समय था, औसतन 347 घंटे प्रति सप्ताह स्मार्टफोन का इस्तेमाल किया गया है, उसमें भी 19 फीसदी समय चैट को गया है, 15 फीसदी सोशल नेटवर्किंग को, 14 फीसदी वीडियो स्ट्रीमिंग को और छह फीसदी ब्राउजिंग को, दूसरे मुद्दों को फिलहाल अनदेखा भी कर दें, स्मार्टफोन पर खर्च होनेवाला कम से कम 54 फीसदी समय ऐसी ही गतिविधियों में लगा है, जिनके जरिये गलत और गुमराह करने वाली सूचनाएं इंटरनेट की दुनिया में यात्रा करती हैं, इतना ही नहीं, साइबर ठगों को भी कोरोना त्रासदी ने एक मौका दे दिया, उन्होंने तकनीक की दुधारी तलवार का इस्तेमाल सीधे–सादे लोगों को ठगने के लिए किया।

कोरोना संकट ने अचानक हमें इस बात का अहसास कराया कि डिजिटल दुनिया में तो पहले से ही वह सब मौजूद है जो हमारे घर, दफ्तर, मनोरंजन, संपर्क, शिक्षा की बुनियादी जरूरतें पूरी करने के लिए चाहिए। सच कहें तो बात इनसे भी बहुत आगे बढ़ चुकी है। अगर दुनिया के अरबों लोग महीनों अपने घरों में चुपचाप कैद रहते हुए अपने काम चलाते रहें तो इसका बहुत बड़ा श्रेय टेक्नॉलॉजी और उसके अनुप्रयोगों को जाता है– इंटरनेट, पीसी, मोबाइल, ब्रॉडबैंड, 4जी, ओटीटी, व्हाट्सऐप्प, जूम, स्काइप, टीम्स, यूट्यूब, वीडियो कॉल, ऑफिस, क्रोमकास्ट.. ऐसे कितने ही तकनीकी उत्पादों ने कमाल कर दिखाया और टेक्नॉलॉजी लॉकडाउन के बाद भी हमारी जिंदगी में बनी रहने वाली है। आपका मोबाइल फोन आगे भी वर्चुअल और वास्तविक के बीच में पुल का काम करता रहेगा।

कोलेबरेशन एप्स ने इस दौर में अपनी महत्ता का सबसे ज्यादा अहसास कराया। दफ्तर, कारखाने, स्कूल–कॉलेज बंद हैं, लेकिन काम चलते रहना जरूरी है। ऐसे में जूम एप्प खासा लोकप्रिय हो गया जो अलग–अलग लोकेशन पर मौजूद लोगों को एक साथ आकर सबके लाइव वीडियो देखते हुए चैट करने, मीटिंग करने, अपनी फाइलें शेयर करने का मौका देता है। ऑनलाइन कक्षाएँ लेने, ट्यूशन लेने और कार्यक्रम आयोजित करने का भी यह अच्छा जरिया बन गया। हालाँकि इस एप्प की सुरक्षा को लेकर कुछ गंभीर चिंताएँ भी उठी हैं। ऐसे में माइक्रोसॉफ्ट टीम्स बेहद सुरक्षित और शक्तिशाली एप्प के रूप में सामने आया जो यूजर की प्राइवेसी को सबसे ऊपर रखता है। गूगल हैंगआउट्स (मीट), स्काइप, गो टु वेबिनार, वेब एक्स आदि भी लोकप्रिय हुए हैं। इनकी बदौलत लोगों का दफ्तरों का काम भी चलता रहा, सरकारी विभागों की बैठकें चलती रहीं और बच्चों की कक्षाएँ भी चलती रहीं।

स्मार्टफोन पर ज्यादातर कॉल एप्स के जरिए किए जाने लगे हैं– अनायास ही। व्हाट्सएप्प संवाद का मुख्य जरिया बन गया है– न सिर्फ टेक्स्ट चैट के लिए बल्कि फोन कॉल के लिए भी। और वह भी दोनों तरह के– ऑडियो तथा वीडियो। यूँ वीडियो कॉल के लिए लोकप्रिय स्काइप भी हमारे बीच मौजूद है और उसकी अपनी विशेषताएँ हैं। व्हाट्सएप्प ने ग्रुप कॉलिंग में आठ लोगों को जोड़ने की सुविधा दे दी है। टेलीग्राम, काइजाला, हाइक, लाइन और वीचैट भी अपनी जगह बनाए हुए हैं। आने वाले दिनों में फोन कॉल, एसएमएस, चैट, इंटरनेट कॉल और वीडियो कॉल एक–दूसरे के साथ घुल–मिल जाने वाले हैं। ऊपर से ईमेल सुविधा तो है ही, जहाँ पर जीमेल के साथ–साथ अब आउटलुक भी लोकप्रिय है। रीडिफ और याहू भी मैदान में डटे हुए हैं। इन सभी के मोबाइल एप्स उपलब्ध हैं। इस प्रकार कोरोना संकट के दौरान सूचना तकनीक का इस्तेमाल निश्चय ही सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया है।

ई-ऑफिस में काम : हिंदी में भी आसान

नम्रता बजाज*

ई–ऑफिस एक वेब आधारित एप्लीकेशन है जो इंटर और इंट्रा दोनों सरकारी प्रक्रियाओं/सूचनाओं की शेयरिंग को प्रोत्साहित करता है। यह दस्तावेजों पर मैन्यूअल कार्य न करके इलैक्ट्रॉनिक तरीके से कार्य कर पेपरलेस वातावरण तैयार करता है। यह प्रोडेक्ट ओपन आर्किटेक्चर पर बनाया गया है तथा एक वर्कफ्लो आधारित सिस्टम है जो पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाता है एवं दायित्व निर्धारित करता है। इससे फाइलों पर लगने वाले समय भी कम होता है और डाटा सुरक्षित रहता है। इस एप्लीकेशन में हिंदी एवं स्थानीय भाषाओं में कार्य करने की सुविधा भी दी गई है। इसमें फाइल को पोस्ट/मेल के माध्यम से डिस्पैच करने की सुविधा है तथा एक फाइल/रसीद को किसी अन्य फाइल/रसीद के साथ अटैच भी किया जा सकता है। ई–ऑफिस पैकेज में विविध मॉड्यूल हैं: नॉलेज मैनेजमेंट, फाइल मैनेजमेंट सिस्टम तथा पर्सनल इंफोरमेशन मैनेजमेंट सिस्टम आदि।

हम सभी जानते हैं कि आज पूरा विश्व संकट के दौर से गुज़र रहा है। ऐसे में अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए अधिकांश कार्यालयों का कार्य ई–ऑफिस के माध्यम से किया जा रहा है। हमारे निगम में भी मार्च, 2020 से ई–ऑफिस प्रणाली शुरू कर दी गई है। चूंकि ई–ऑफिस का पूरा सिस्टम अंग्रेजी में बनाया गया है तथापि इसमें हिंदी में भी कार्य किया जा सकता है। इस लेख के माध्यम से मैं ई–ऑफिस में हिंदी में काम करने के लिए सामान्य जानकारी का उल्लेख करना चाहूंगी जिसके आधार पर आप ई–ऑफिस में न केवल अंग्रेजी में बल्कि हिंदी में भी काम आसानी से कर पाएंगे। बस आपको सिर्फ इतना ध्यान रखना है कि इसमें यूनिकोड का ही प्रयोग किया जा सकता है। कृतिदेव आदि फोन्ट से इसमें टाइप नहीं किया जा सकता।

ई–ऑफिस के होम पेज को अंग्रेजी या हिंदी वर्ज़न में परिवर्तित किया जा सकता है। होम पेज पर फाइल प्रबंधन प्रणाली (File Management System) पर क्लिक करने के बाद ई–ऑफिस की जो विंडो ओपन होती है उसमें **ब्राउज़ एंड डायरीज़** करते समय हिंदी या अंग्रेजी के किसी भी दस्तावेज को पीडीएफ बनाकर अपलोड करने के बाद **डायरी डिटेल्स** में दिए गए विकल्पों को भरना होगा। यह विकल्प पहले से ही अंग्रेजी में डाले गए हैं। ई–ऑफिस में जो विवरण पहले से ही अंग्रेजी में है, उसे आप किसी अन्य भाषा में नहीं बदल सकते किंतु जहां स्वयं आपको विवरण या विषय देना है, उसे आप हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में टाइप कर सकते हैं। अब जैसे **कॉन्टैक्ट डिटेल्स** में आपको स्वयं का विवरण भरना

*प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

है तो आप उसे हिंदी में भर सकते हैं और उसके बाद **ऐड टू एड्रेस बुक** के विकल्प को क्लिक कर दें। इससे एक बार विवरण हिंदी में भरने के बाद जब भी आप यह प्रक्रिया दोबारा करेंगे आपका नाम, पदनाम आदि विवरण जो हिंदी में आपने भरा था, वह स्वतः ही इस पर आ जाएगा। इसी प्रकार **कैटेगरी एंड सब्जैक्ट** में **मेन कैटेगरी** के विकल्प पहले से ही अंग्रेजी में हैं किंतु **सब्जैक्ट** में आप हिंदी में विवरण भर सकते हैं।

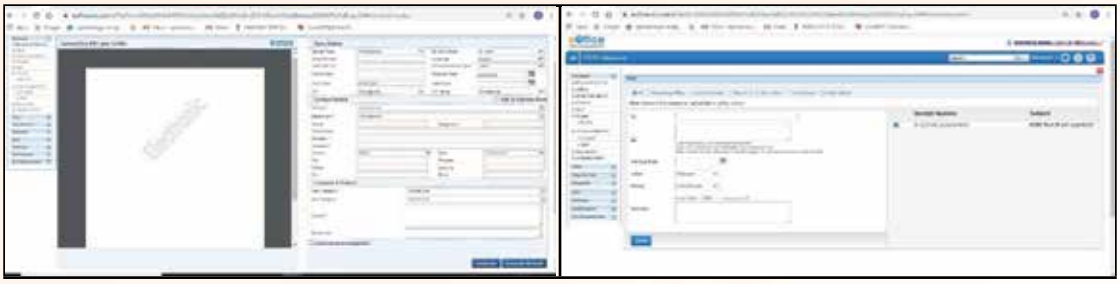

इसी प्रकार, **सेन्ड** करते समय **रिमार्क्स** में भी हिंदी में विवरण भरा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, नई फाइल बनाते हुए **डिस्क्रिप्शन** एवं **रिमार्क्स** भरते समय हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा सकता है।

फाइल में टिप्पणियां भी हिंदी या अंग्रेजी भाषा में की जा सकती हैं। कई बार नोटिंग करते समय छोटी–छोटी टिप्पणियों का प्रयोग अधिकतर किया जाता है। इसके लिए नोटिंग टाइप करते समय बाईं ओर ऊपर की तरफ **क्विक नोटिंग** का विकल्प दिया गया है। जिस पर क्लिक करते ही पहले से ही दी गई हिंदी एवं अंग्रेजी की छोटी–छोटी नोटिंग सामने दिखने लगती हैं। जिसमें अनुमोदित, अनुमति दी जाती है, आदेशार्थ/अनुमोदनार्थ आदि अनेक टिप्पणियां दिखाई देती हैं, जिनका विषय के अनुसार चयन करके, उन पर क्लिक करते ही वह नोटिंग पृष्ठ पर आ जाती है।

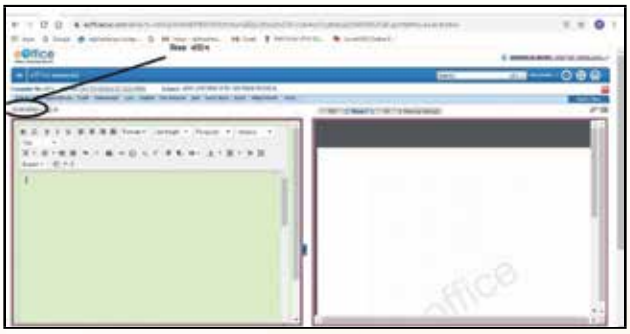

अब प्रश्न आता है हिंदी में टाइपिंग के लिए क्या करें? जिन्हें यूनिकोड में हिंदी टाइपिंग आती है, उन्हें तो इस पर कार्य करने में कोई समस्या नहीं है किंतु जिन्हें हिंदी टाइपिंग नहीं आती, वह अपना कार्य हिंदी में कैसे करें? इसके लिए आप निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाकर हिंदी में टाइप कर सकते हैं। इसमें आप रोमन लिपि में टाइप करेंगे और देवनागरी लिपि में टाइप किया हुआ दिखेगा।

सर्वप्रथम, आप गूगल में जाकर google hindi indic input tool free download टाइप करें और नीचे दिए गए **चित्र–1** में जो लिंक दिया गया है, उस पर (rajbhasha.net) क्लिक करें। पृष्ठ खुलते ही उसे स्क्रॉल कर सबसे नीचे चले जाएं और नीचे दिए गए **चित्र–2** के अनुसार **सभी वांछित फाइल ऑफलाइन डाउनलोड के लिए उपलब्ध कराई गई हैं**

तथा इंस्टालेशन निर्देश बड़े शब्दों में दिए गए हैं। यदि गूगल इनपुट व एमएस इंडिक टूल्स इंस्टाल करने की पूरी क्रिया सचित्र देखनी समझनी है तो यहाँ क्लिक कर देखें पर क्लिक करें।

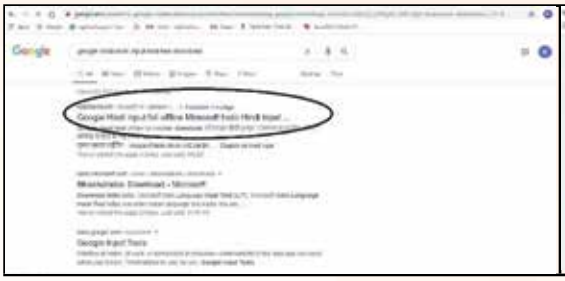

चित्र–1

चित्र–2

तत्पश्चात् जो विंडो खुलेगी उसमें स्क्रॉल कर थोड़ा नीचे आएं तो आपको **चित्र–3** के अनुसार दिखाए गए घेरे में Google Input Tools for Windows Full Offline Installer Click Here for Download पर क्लिक करना होगा और फिर एक विंडो खुलेगी जो **चित्र–4** की तरह होगी, उसमें दिए गए **फाइल को डाउनलोड करने के लिए खाली बॉक्स क्लिक करें फिर Submit करें** जैसे निदेश का अनुपालन करें।

चित्र–3

चित्र–4

सबमिट करते ही **चित्र–5** के अनुसार एक GoogleInputToolsHindi.exe फाइल डाउनलोड हो जाएगी। डाउनलोड होने के बाद **चित्र–6** के अनुसार एक छोटी विंडो खुल जाएगी जिसमें Run पर क्लिक करना होगा। क्लिक करने के बाद एक विंडो और आएगी जिसमें पूछा जाएगा Do you want to allow this app to make changes to your device? आपको Yes पर क्लिक करना होगा।

चित्र–5

चित्र–6

उसके बाद **चित्र–7** के अनुसार विंडो में Finish पर क्लिक करना होगा। **चित्र–8** के अनुसार Task Bar में EN और HI दिखाई देंगे जिसमें HI सेलेक्ट करने पर Google input tools को सेलेक्ट करना होगा और बस अब आप कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए तैयार हैं। **चित्र–9** में देखिए आप जैसे ही रोमन लिपि में **Kendriya** टाइप करेंगे तो आपको विकल्पों के साथ देवनागरी लिपि में **केंद्रीय** लिखा दिखाई देगा। इसके अतिरिक्त, आप Microsoft Indic Language Input Tool के माध्यम से भी रोमन से देवनागरी में टाइप कर सकते हैं। टाइपिंग टूल के अतिरिक्त Voice Typing की सुविधा भी यूज़र के लिए उपलब्ध है।

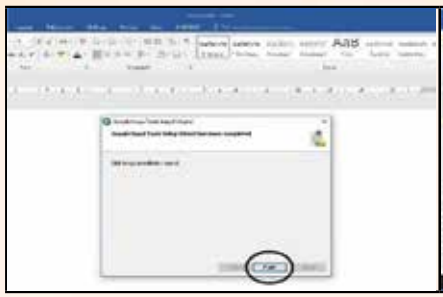

चित्र–7

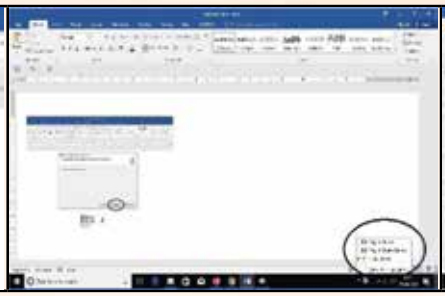

चित्र–8

चित्र–9

आपको संभवतः यह प्रक्रिया कठिन लग सकती है परंतु जब आप इसे निर्देशों के अनुसार इंस्टॉल करेंगे तो इसमें अधिक समय नहीं लगेगा। अब आप अपने कंप्यूटर या ई–ऑफिस में आसानी से हिंदी में कार्य कर सकते हैं, आप कोशिश तो करिए! आशा है आपको मेरे इस लेख के माध्यम से अवश्य ही लाभ मिलेगा और कार्यालय का काम भी हिंदी में अधिक से अधिक किया जा सकेगा। आगामी अंकों में हम आपको कंप्यूटर पर यूनिकोड इंस्टॉल करने के विषय में विस्तृत जानकारी देने की प्रयास करेंगे।

लॉजिस्टिक्स एवं संबंधित गतिविधियाँ- एक विवेचन

इस विषय को भली–भाँति समझने–जानने के लिए हमें सर्वप्रथम 'लॉजिस्टिक्स' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ को जानना चाहिए। यह शब्द फ्रेंच भाषा के लॉजिस्टिक्स शब्द से निकला है, जहाँ इसका अर्थ है– "to lodge" 19वीं शताब्दी के आखिरी दशक में इसका प्रयोग आरम्भ हुआ। कुछ विद्वान इसका स्रोत ग्रीक भाषा को भी मानते हैं जहाँ इसका प्रयोग 'लेखाकार' अथवा 'गणना के लिए उत्तरदायी व्यक्ति' के अर्थ में होता है।

वर्तमान में 'लॉजिस्टिक्स' उस कारोबार अथवा व्यवसाय को कहते हैं जिसके अन्तर्गत ग्राहकों/प्रयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन से उपभोग बिन्दु तक संबंधित सूचनाओं सहित एक कुशल तथा प्रभावकारी प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए एक एकीकृत योजना के अधीन क्रियान्वयन एवं नियंत्रण किया जाता है। कार्गों के इस प्रकार के सुनिश्चित प्रवाह अथवा उपलब्धता के लिए उसके रख–रखाव, भंडारण, लेखा–जोखा, परिवहन एवं वस्तु–सूची प्रबंधन जैसी प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। इस कार्य के लिए नेटवर्किंग एवं आउटसोर्सिंग की आवश्यकता पड़ती है। 'लॉजिस्टिक्स' के लिए सिविल इंजीनियरिंग से लेकर सूचना प्रौद्योगिकी, भंडारण, परिरक्षण, परिवहन जैसे कार्यों के लिए एवं फोर्क लिफ्ट, कनवेअर बैल्ट जैसी सुविधाओं के प्रचालन हेतु कुशल व्यक्तियों की आवश्यकता रहती है। इसके अतिरिक्त, एक अच्छे लॉजिस्टियन को संबंधित क्षेत्रों के नियमों, अधिनियमों, कराधान प्रणालियों की भी जानकारी होनी चाहिए। वास्तव में यह उद्योग आपूर्ति शृंखला प्रबंधन प्रणाली का रूप लेता जा रहा है। यह कोई नई संकल्पना नहीं है, आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए नेटवर्क स्थापित करने की आवश्यकता हमेशा से रही है।

लॉजिस्टिक्स उद्योग की नई शाखाएं जैसे अधिप्राप्ति (प्रोक्यूरमेंट) लॉजिस्टिक्स, वितरण लॉजिस्टिक्स, उत्पादन लॉजिस्टिक, निपटान लॉजिस्टिक्स, बिक्री पश्चात् लॉजिस्टिक्स, हरित लॉजिस्टिक्स, ग्लोबल लॉजिस्टिक्स इत्यादि विकसित हो गई हैं, जिनकी अपनी अलग–अलग विशिष्टताएँ हैं। सैन्य बलों के लिए 'सैन्य लॉजिस्टिक्स' का अपना अलग महत्व है कि किस प्रकार विभिन्न रणनीतिक स्थानों पर सैन्य सामग्री, खाद्य सामग्री तथा सैनिकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी।

*हिन्दी स्मारिका से साभार

जान है - जहान है

आर. पी. जोशी*

विश्व के लिए वर्ष 2020 की शुरुआत बहुत ही कष्टकर रही। वर्ष 2019 की अंतिम तिमाही में चीन के वुहान शहर से कोरोना वायरस (कोविड–19) नामक महामारी के फैलने की खबर आई। प्रारम्भ में इस संक्रमण की विकरालता का अनुमान किसी को नहीं था। जैसे–जैसे इस बीमारी ने अन्य देशों को अपने निशाने पर लेना प्रारम्भ किया तब इस बीमारी की भयावहता का अहसास विश्व को होने लगा। आज स्थिति यह है कि विश्व के लगभग सभी देश इस घातक संक्रमण की चपेट में हैं। लाखों की संख्या में लोग या तो इस बीमारी से संक्रमित हैं या फिर अपनी जान गवां बैठे हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं है। रोकथाम के अथक प्रयासों के बावजूद भारत में यह संक्रमण तेजी से फैल रहा है। यूं तो देश का बड़ा भू–भाग इस महामारी की गिरफ्त में है किन्तु दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद जैसे बड़े शहर इस संक्रमण से सबसे अधिक प्रभावित हैं। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बीमारी की भयावहता को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इसे वैश्विक महामारी घोषित कर दिया है।

इस संक्रमण के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है तथा सरकार भी दैनिक रूप से प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जनता को इस बीमारी के संदर्भ में निरन्तर जागरूक कर रही है। इतना तो स्पष्ट है कि यह बीमारी चमगादड़ों से मनुष्यों में संक्रमित हुई है और अब संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने या फिर उसकी छींक या खांसी से उत्पन्न कणों (ड्रॉप लैट्स) के कारण यह संक्रमण एक से दूसरे में फैल रहा है। संक्रमण के फैलने की रफ्तार बहुत तीव्र होने के कारण महामारी से बचाव के सारे उपाय धरे के धरे रह जाते हैं। अस्पताल, डॉक्टर, ऑक्सीजन, वेंटीलेटर, दवाइयों जैसे जीवन रक्षक उपाय एवं साधन सीमित पड़ जाते हैं और व्यवस्था चरमरा जाती है। इलाज के अभाव में रोगियों को बचा पाना कठिन हो जाता है। ऐसी विकट स्थिति में अपने आप को कैसे सुरक्षित रखा जाए यह एक यक्ष प्रश्न है। अतः इस लेख के माध्यम से हम अपने पाठकों को इस महामारी से बचने के कुछ साधारण उपाय सुझाएंगे तथा यह भी बताएंगे कि योग के माध्यम से इस संक्रमण से बचने के लिए अपने आपको कैसे स्वस्थ रखा जा सके।

*पूर्व सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), एअर इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली

यह तो स्पष्ट है कि इस बीमारी में रोगी को सांस लेने में कठिनाई होने लगती है। फेफड़े प्रभावित हो जाते हैं जिस कारण शरीर में ऑक्सीजन की कमी होने लगती है जो घातक सिद्ध होती है। प्रारंभ में गले में दर्द, जुकाम, खांसी और बुखार जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। प्रारंभिक अवस्था में इस संक्रमण को रोकना आसान होता है, फेफड़ों तक संक्रमण पहुंच जाने पर संक्रमण को नियंत्रित करने में कुछ कठिनाई अवश्य होती है। बच्चे, बूढ़े तथा पहले से ही उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग, दमा जैसी घातक बीमारियों से ग्रसित रोगियों में संक्रमण होने की संभावना अधिक होती है। स्थिति गंभीर होने पर रोगी को कृत्रिम ऑक्सीजन या वेंटीलेटर पर रखना पड़ सकता है। किन्तु यह मान लेना कि इस महामारी से संक्रमित होने पर सब कुछ समाप्त हो जाता है, उचित नहीं है। इस महामारी से ग्रसित अधिकतर रोगी ठीक हो जाते हैं। उपलब्ध आंकडों के अनुसार पांच प्रतिशत से भी कम रोगियों के लिए यह संक्रमण घातक सिद्ध होता है, इसलिए महामारी से घबराने की आवश्यकता नहीं है। बचाव पर ध्यान देना जरूरी है। देखने में आया है कि इस बीमारी का नाम सुनते ही कई रोगी मानसिक तनाव में आ जाते हैं और आत्महत्या तक की सोचने लगते हैं जो कदापि उचित नहीं है। यह सत्य है कि अभी तक इस महामारी को रोकने के लिए कोई टीका (वैक्सीन) विकसित नहीं हुआ है और न ही संक्रमित होने पर कोई अचूक दवा ही उपलब्ध

है। फिर भी कुछ साधारण उपाय कर इस महामारी से अपने आप को दूर रखा जा सकता है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, कोरोना वायरस एक संक्रमण है जो एक–दूसरे के संपर्क में आने से ही फैलता है। अतः बचाव का सबसे पहला और महत्वपूर्ण उपाय सामाजिक दूरी बना कर रखना ही है। एक–दूसरे के साथ संपर्क में नहीं आने पर बीमारी को स्वतः ही सीमित किया जा सकता है। अतः संक्रमण से बचने का पहला मंत्र है, अपने आपको क्वारंटीन करना। किन्तु कुछ मजबूरियों और सामाजिक दायित्वों के कारण एक सीमा से अधिक अपने आपको क्वारंटीन करना संभव नहीं हो पाता, इसलिए संक्रमण से बचाव के लिए अपनी दिनचर्या में कुछ बदलाव जरूरी हैं। जहां तक हो सके अधिक भीड़–भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचें। सार्वजनिक स्थानों पर नाक और मुंह को हमेशा ढक कर रखें, हाथों में दस्ताने पहन कर रखें, बार–बार हाथों को धोते रहें। बिना हाथ धोए, मुंह या आंखों को न छुएं। घर में साफ–सफाई की उचित व्यवस्था बना कर रखें। जूते–चप्पल नियत स्थान पर रखें। यह स्थान घर के बाहर हो तो बेहतर होगा। दैनिक उपयोग की चीजों जैसे मोबाईल फोन, बिजली के स्विच, दरवाजों या दराज के हैंडल, टेबल टॉप आदि को नियमित रूप से सैनिटाइज करते रहें।

इस संक्रमण की शुरुआत गले से होती है अतः नियमित रूप से नमक के गरारे करने से गला ठीक रहता है। जहां तक हो सके ठंडा या फ्रिज का पानी पीने से बचें। थोड़े–थोड़े अंतराल पर हल्का गुनगुना पानी घूँट–घूँट करके पीएं। भाप लेने से भी काफी लाभ मिलता है और गला ठीक रहता है।

कभी–कभी यह भी देखने में आता है कि व्यक्ति कोरोना वायरस से संक्रमित तो होता है किन्तु उसमें बीमारी के लक्षण नजर नहीं आते। ऐसे संक्रमित व्यक्तियों को 'असिमटोमैटिक' कहा जाता है। यानि ऐसे व्यक्तियों में बीमारी आती भी है और बिना किसी नुकसान के चली भी जाती है। ऐसा क्यों होता है? प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में कुदरती रूप से रोगों से लड़ने के लिए रोग अवरोधक क्षमता विद्यमान होती है। रोग अवरोधक क्षमता के मजबूत होने पर बीमारी हार जाती है और व्यक्ति निरोगी रहता है। रोग अवरोधक क्षमता के कमजोर होने पर बीमारी जीत जाती है और व्यक्ति रोगी हो जाता है। इसलिए सबसे महत्वपूर्ण है कि रोग अवरोधक क्षमता को मजबूत बना कर रखा जाए। रोग अवरोधक क्षमता को मजबूत बनाए रखने के लिए पौष्टिक आहार और शारीरिक व्यायाम आवश्यक है।

पहले भोजन की बात कर लेते हैं। भोजन हल्का, सुपाच्य एवं ताजा होना चाहिए और साथ ही वह पौष्टिक भी हो। जंक एवं फास्ट फूड से बचें, घर का बना भोजन स्वास्थ्य के लिए हितकर होता है। चबा–चबा कर भोजन करें ताकि वह जल्दी पच जाए और उसके पोषक तत्व शरीर में पूर्ण रूप से अवशोषित हो जाएं। जहां तक हो सके अंकुरित चीजों, फलों और सलाद का अधिक प्रयोग करें। सोने से पूर्व हल्दी मिला दूध पीना भी लाभदायक हो सकता है। रोग अवरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए च्यवनप्राश, शिलाजीत, तुलसी, गिलोय, अश्वगंधा, शहद, नींबू, आंवले आदि का सेवन भी अच्छा माना गया है।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए शारीरिक क्रियाओं का अपना महत्व है। योग, कसरत, दौड़, तैराकी, साइकिलिंग या फिर किसी अन्य खेल के माध्यम से शरीर को चुस्त और तंदुरुस्त रखा जा सकता है। कोरोना संक्रमण के इस दौर में योग की उपयोगिता और बढ़ गई है। इस लेख के माध्यम से हम ऐसे कुछ आसनों और प्राणायामों पर चर्चा करेंगे जो शारीरिक स्वस्थता के लिए तो जरूरी हैं ही, साथ ही वर्तमान संक्रमण को दूर रखने में भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

पहले आसनों को लेते हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कोरोना संक्रमण के कारण श्वसन अंग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, अतः यहां ऐसे आसन सुझाए जा रहे हैं जो शरीर को पुष्ट करने के साथ–साथ फेफड़ों को भी पुष्ट करते हैं। आसनों की शुरुआत सूर्य नमस्कार से की जा सकती है। सूर्य नमस्कार एक आसन न होकर वस्तुतः 12 क्रियाओं का समूह है जिस कारण सूर्य नमस्कार करने से शरीर के लगभग सभी अंग प्रभाव में आ जाते हैं। सूर्य नमस्कार करते समय बारी–बारी से शरीर को आगे–पीछे, ऊपर–नीचे उठाना पड़ता है। साथ ही क्रिया के साथ सांसों का समन्वय भी बैठाना पड़ता है अर्थात् एक बार सांस को भरा जाता है और अगली बार सांस को बाहर छोड़ा जाता है। इस कारण सूर्य नमस्कार से शरीर के विभिन्न अंग तो पुष्ट होते ही हैं साथ ही श्वसन अंग भी मजबूत

बनते हैं। बैठकर किए जाने वाले आसनों में गोमुखासन, अर्धमत्स्छेद्रासन, उष्ट्रासन और शशांकासन महत्वपूर्ण हैं। इन आसनों को करने से जहां एक ओर मधुमेह जैसे घातक रोग को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है, वहीं दूसरी ओर कंधों और पसलियों के फैलने के कारण फेफड़े प्रभाव में आते हैं और श्वसन अंग पुष्ट होते हैं। पेट के बल लेट कर भुजंगासन महत्वपूर्ण है। नाभी से आगे के शरीर को उपर की ओर उठाने के कारण कंधे पूरी तरह से खुल जाते हैं जिस कारण फेफड़े पूरी क्षमता में काम करने लगते हैं। पीठ के बल लेटकर सेतुबंध आसन किया जा सकता है जिससे रीढ़, कंधे, गर्दन, जंघा आदि प्रभाव में रहते हैं। आसन खाली पेट, हवादार, साफ–सुथरे एवं समतल स्थान पर करने चाहिए। साधना के लिए सुबह का समय सबसे उपयुक्त माना गया है। आसन की पूर्ण स्थिति में ठहराव आवश्यक है। धीरे–धीरे अपने अभ्यास को बढ़ाना चाहिए। आसन करते समय शरीर के साथ किसी प्रकार की जोर–जबरदस्ती या हिंसा नहीं करनी चाहिए।

प्राणायाम का सीधा–सीधा संबंध सांसों से होता है। प्राणायाम के माध्यम से सांसों को विस्तारित एवं नियंत्रित किया जाता है जिसका सीधा प्रभाव श्वसन अंगों पर पड़ता है और वे सशक्त बनते हैं। प्राणायाम का अभ्यास गहरे–लम्बे सांसों से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर अनुलोम–विलोम, कपालभाति, भस्त्रिका एवं उज्जायी प्राणायामों को भी अपनी साधना में जोड़ लें। अनुलोम–विलोम में बाईं नासिका पुट से गहरा–लम्बा सांस भरकर उसे दाईं नासिका पुट से निकाला जाता है फिर दाईं ओर से भरकर बाईं ओर से निकाला जाता है। यह एक राउंड कहलाता है यानि बाईं ओर से प्रारंभ कर प्राणायाम को बाईं ओर ही समाप्त किया जाता है। प्रारम्भ में दस राउंड करें। फिर धीरे–धीरे आवर्तियों को बढ़ाएं।

कपालभाति प्राणायाम में सांस को शक्ति से बाहर फेंकने पर बल दिया जाता है। सांस को बाहर फेंकने के लिए नाभिमूल को शक्ति से रीढ़ की ओर बार–बार संकुचित किया जाता है। सांस को बाहर फेंकते समय शरीर को स्थिर रखें। स्वभाव से जितना सांस अन्दर जाए उसे जाने दें। प्राणायाम करने के लिए सुविधाजनक स्थिति में आसन में बैठ जाएं। कमर और गर्दन को सीधा रखें। साधना के समय आंखों को बंद कर लें। क्रिया के दौरान मुंह की आकृति बिगड़ने न दें। प्रारम्भ में तीस आवर्तियां करें। धीरे–धीरे अभ्यास को बढ़ाएं। एक मिनट में साठ आवर्तियां की जा सकती हैं। कम से कम पांच मिनट का अभ्यास करें।

कपालभाति प्राणायाम का ही विस्तार भस्त्रिका प्राणायाम है। भस्त्रिका प्राणायाम में शक्ति एवं गति का प्रयोग करते हुए सांस को भरा एवं छोड़ा जाता है यानि दोनों ओर शक्ति का प्रयोग किया जाता है। सांस बाहर फेंकने के लिए नाभिमूल का संकुचन एवं सांस भरने के लिए छाती को फैलाया जाता है। इस प्राणायाम के दौरान भी शरीर स्थिर रहना चाहिए। चेहरे की आकृति नहीं बिगड़नी चाहिए। माथे पर सिलवटें आने, त्योरियों के चढ़ने तथा नाक के सिकुड़ने से तात्पर्य है कि क्रिया को स्वभाव से नहीं अपितु तनाव में रहते हुए किया जा रहा है। उपर्युक्त तीनों प्राणायामों से सांसों को गहरा व लम्बा बनाए जाने के कारण शरीर में ऑक्सीजन अधिक मात्रा में पहुंचती है जिस कारण रक्त शोधन एवं रक्त संचार बढ़ जाता है। फेफड़े अपनी पूर्ण क्षमता में फैलते व सिकुड़ते हैं जिस कारण वे निरोगी बनते हैं। पेट की मांसपेशियों के साथ–साथ शरीर के अन्य महत्वपूर्ण अंग जैसे गुर्दे, लीवर, पैनक्रियाज आदि प्रभावित होते हैं। सांस एवं गले संबंधी रोग ठीक हो जाते हैं।

उज्जायी प्राणायाम में कठ–कूप को अंदर की ओर सिकोड़ कर सांस को भरते हुए मधुर खर्राटे की ध्वनि उत्पन्न की जाती है। खर्राटा तीखा न होकर मधुर होना चाहिए। ऐसा करने से फेफड़ों में ऑक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है। गले, हृदय और फेफड़ों संबंधी रोगों में इस क्रिया से लाभ प्राप्त होता है।

जीवन अनमोल है। महामारी काल में सावधानी से ही जीवन को बचाया जा सकता है। कहते है न कि 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'। इसीलिए सभी कार्य करें किन्तु सुरक्षा का भी उतना ही ध्यान रखें यानि जब तक बाजार में कोई वेक्सीन नहीं आ जाती, संक्रमण के साथ जीने की तरीके खोजें। सामाजिक दूरी बना कर रखें, मुँह पर मास्क लगाएं, हाथों में दस्ताने पहनें, समय–समय पर हाथ धोते रहें। पौष्टिक भोजन करें। योग को अपनी दिनचर्या में अपनाएं। हौंसला बना कर रखें। मानकर चलें कि जल्द ही यह विकट समय भी गुजर जाएगा। बताए गए उपायों को अपना कर अपने और अपने परिवार को स्वस्थ एवं सुरक्षित रखें।

हमारे प्रयास हमारा भविष्यः भुखमरी मुक्त विश्व की संकल्पना

वरुण भारद्वाज*

भोजन मनुष्य की पहली आवश्यकता है, इस आवश्यकता की पूर्ति का सहारा मूल रूप में कृषि है। इस प्रकार कृषि, मनुष्य अथवा किसी भी देश का प्राथमिक और सबसे ज्यादा जरूरी उद्यम है। इस धरती पर जो खुद अपनी आवश्यकता का अन्न नहीं उपजा सकता या किसी उपजाने वाले से अन्न को प्राप्त करने का सामर्थ्य नहीं रखता, वही भूखा है। भुखमरी मुक्ति एवं खाद्य सुरक्षा दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जहाँ पहले खाद्य सुरक्षा से तात्पर्य पेट भर रोटी उपलब्ध होने से था वहीं आज खाद्य सुरक्षा से आशय भौतिक और सामाजिक स्थितियों की पहुँच के अलावा संतुलित आहार, साफ पीने का पानी, स्वच्छ वातावरण एवं प्राथमिक स्वास्थ्य रख–रखाव तक जा पहुँचा है। **मानव अधिकारों की वैश्विक घोषणा (1948) का अनुच्छेद 25(।) कहता है कि "हर व्यक्ति को अपने और अपने परिवार का बेहतर जीवन स्तर बनाने, स्वास्थ्य की स्थिति प्राप्त करने का अधिकार है जिसमें भोजन, कपड़े और आवास की सुरक्षा शामिल है।"** भुखमरी एवं खाद्य सुरक्षा की इकाई देश भी हो सकता है, राज्य भी और गाँव भी। खाद्यान्न का खूब उत्पादन होने पर अनाज की उपलब्धता तो बढ़ती है परन्तु यह जरूरी नहीं की हर परिवार के पास भी भोजन की उपलब्धता हो, जब तक कि उसके पास खाद्यान्न हासिल करने के साधन (जैसे– रोजगार या सामाजिक सुरक्षा (Social Security) या सरकारी योजना का संरक्षण) न हो। भूख मनुष्य के अभावों की सबसे गंभीर व पीड़ाजनक स्थिति है। भूखे का भगवान भले ही किसान हो, किंतु अन्न उपजाने के लिए किसान को भी जमीन चाहिए, संसाधन चाहिए और कृषि की लागत निकालने व जीवन–यापन के लिए उपज का समुचित मूल्य चाहिए। वह अपना अन्न भूखे इंसानों को निःशुल्क नहीं बाँट सकता। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक व्यापक जन–वितरण प्रणाली के माध्यम से गरीबों को सस्ती दरों पर खाद्यान्न वितरित किए जाने के बावजूद बढ़ती हुई आबादी एवं बढ़ रही आर्थिक विषमता के कारण भूख का दायरा बढ़ता ही जा रहा है। भुखमरी की समस्या दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रही है। **स्वामी विवेकानंद** ने एक बार कहा था **"जो व्यक्ति अपना पेट भरने के लिए जूझ रहा हो उसे दर्शनवाद नहीं समझाया जा सकता।"**

* हिन्दी अनुवादक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भुखमरी के कारण

जब विश्व में पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्नों का उत्पादन हो रहा है तो भुखमरी समाप्त क्यों नहीं हो रही है, यह एक यक्ष प्रश्न है। रोम में संपन्न हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन के सम्मेलन में मैक्डॉगल स्मृति व्याख्यान देते हुए नोबल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री **प्रो. अमर्त्य सेन** ने कहा–**"भुखमरी की समस्या का मुख्य कारण अधिकृत भोजन की अप्राप्यता ही होती है। हालांकि यह सही है कि भूख गरीबी से ही पैदा होती है तथा अपर्याप्त आय के कारण भोजन खरीदने की क्षमता न होना ही भुखमरी की मुख्य वजह होती है।"** संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट भुखमरी के कारणों में युद्ध, संघर्ष, हिंसा, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदा आदि की तो बात करती है लेकिन आज दुनिया के विकासशील देशों में व्याप्त भुखमरी और कुपोषण का कारण इन देशों में सदियों से फैला सामाजिक व आर्थिक शोषण भी है, जिसके कारण इन देशों में आधी से ज्यादा आबादी हमेशा ही दबी–कुचली पड़ी रही है। अन्नदाता की किसान बिरादरी कर्ज और खराब मौसम की दोहरी मार में पिस रही है। बीज और खाद की उपलब्धता का रास्ता निजी कंपनियों से होकर जा रहा है, पानी सूख रहा है, खेत सिकुड़ रहे हैं, निवेश के जोन पनप रहे हैं, तेल और ईधन की कीमतें उछाल पर हैं और लोग जैसे–तैसे बसर कर रहे हैं। इस दुर्दशा में उस अशांति, हिंसा और भय को भी जोड़ लीजिए जो कभी धर्म–जाति के नाम पर, कभी खाने–पीने या पहनने–ओढ़ने के नाम पर बेतहाशा हो रही है। बढ़ती भुखमरी और कुपोषण इस बात के भी द्योतक हैं कि अन्तरराष्ट्रीय नेतृत्व भुखमरी के खिलाफ संघर्ष में ईमानदार नहीं है। भुखमरी सबसे बड़ा घोटाला है। यह मानवता के खिलाफ अपराध है, जिसमें अपराधी को सजा नहीं मिलती।

भुखमरी मुक्ति के व्यावहारिक उपाय

भुखमरी मुक्ति एवं खाद्य सुरक्षा की अवधारणा व्यक्ति के मूलभूत अधिकार को परिभाषित करती है। अपने जीवन के लिए हर किसी को निर्धारित पोषक तत्वों से परिपूर्ण भोजन की जरूरत होती है। सर्वप्रथम सरकारें जन–जन के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने का संकल्प लें। यदि समाज की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित रहेगी तो लोगों में भुखमरी की प्रवत्ति कम होगी। इस परिप्रेक्ष्य में सरकार का दायित्व है कि खाद्यान्न के बाजार मूल्यों को समुदाय के हितों के अनुरूप बनाये रखें ताकि भुखमरी को रोका जा सके। भुखमरी को रोकने के लिए खाद्य सुरक्षा में निवेश करना आवश्यक है। इनके अतिरिक्त, भुखमरी मुक्त विश्व की संकल्पना को सुनिश्चित करने के लिए कुछ प्रमुख व्यावहारिक उपाय निम्नलिखित हैं:–

» **उत्पादन**– यह माना जाता है कि खाद्य आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन में वृद्धि करने के निरन्तर प्रयास होते रहना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के अनुरूप नई तकनीकों का उपयोग करने के साथ–साथ सरकारों को कृषि व्यवस्था की बेहतरी के लिये पुर्ननिर्माण की नीति अपनानी चाहिए।

» **वितरण**– उत्पादन की जो भी स्थिति हो राज्य के समाज के सभी वर्गों को उनकी जरूरत के अनुरूप अनाज का अधिकार मिलना चाहिए। यह सुनिश्चित होना चाहिए कि खाद्यान्न की कीमत इतनी अधिक न हो कि व्यक्ति या परिवार अपनी जरूरत के अनुरूप मात्रा एवं पोषण पदार्थ का उपभोग न कर सके। स्वाभाविक है कि समाज के उपेक्षित और वंचित वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के जरिये खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि भुखमरी की भयावह स्थिति से बचा जाए।

» **आपाताकालीन व्यवस्था**– प्राकृतिक आपदायें समाज के अस्तित्व के सामने अक्सर चुनौतियाँ खड़ी करती हैं। ऐसे में प्रत्येक देश यह व्यवस्था करें कि आपातकालीन अवस्था (जैसे– सूखा, बाढ़ या चक्रवात) में प्रभावित लोगों को भुखमरी का सामना न करना पड़े।

» **ग्रामीण भंडारण**– यह सर्वविदित तथ्य है कि छोटे किसानों की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि बाजार मूल्य के अनुकूल होने तक वे अपने उत्पादकों को अपने पास रख सकें, देश में कृषक समाज को उनके उत्पाद को क्षरण और ह्रास से बचाने के लिए वैज्ञानिक भंडारण सुविधायें उपलब्ध करने के लिए ग्रामीण भंडारण पर बल दिया जाना चाहिए। केन्द्रीय भंडारण निगम इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहा है।

» **वेब आधारित प्रणाली**– अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत एक ऐसी वेबसाइट विकसित की जा सकती है जिस पर प्रत्येक लाभार्थी परिवार जो भोजन पाने का अधिकार कानून के तहत खाद्यान्न की एक निर्धारित मात्रा रियायती मूल्य पर पाने का हकदार है, का विवरण उपलब्ध हो। इनके अलावा इसकी जांच वितरण केन्द्र पर अधिकारियों एवं लाभार्थी परिवार के मुखिया द्वारा कभी भी की जा सकती है।

» **बफर स्टॉक बढ़ाना अत्यावश्यक**– सार्वजनिक वितरण प्रणाली में खाद्यान्नों, दालों, चीनी इत्यादि वस्तुओं के भंडारण व आयात का पूर्वानुमान लगाकर बफर स्टॉक बनाए जाने की रणनीति तैयार की जानी चाहिए जिससे कि भ्रष्टाचार और जमाखोरी को रोका जा सके तथा भुखमरी मुक्त विश्व की संकल्पना को साकार किया जा सके।

» **फूड संग्रह केन्द्रों की स्थापना**– जगह–जगह बची हुई खाद्य सामग्री को संग्रहित (मोबीलाइजेशन) करने के लिए सरकार की तरफ से संग्रहण केन्द्र खोले जाएं तथा इसके अलावा फूड मोबीलाइजेशन वैन की व्यवस्था भी शहरों में की जा सकती है, ताकि जो खाद्य सामग्री व्यक्ति तथा होटल संचालक कूड़े में फेंक देते हैं उससे किसी की भूख शांत की जा सके। उन संग्रहण केन्द्रों की निगरानी में कोई कोताही न बरती जाए।

» **जन–भागीदारी**– 'उतना ही लें थाली में व्यर्थ न जाए नाली में' वाक्य के मूलमंत्र को जन–जन को अपनाना चाहिए ताकि जो खाना हम व्यर्थ करते हैं, उससे किसी जरूरतमंद का पेट भर सके। भुखमरी की पीड़ा समझने के लिए संपूर्ण विश्व को अपने भीतर विशेष संवेदनशीलता जगानी होगी। हमें एक संवेदनशील मानसिकता के सहारे ऐसा माहौल तैयार करना होगा जिसमें इन गरीब लोगों के लिए न केवल भरपूर उदर–पोषण का इंतजाम हो सके बल्कि उन्हें रोजगार व शिक्षा के ऐसे अवसर भी

मिल सकें जिसके सहारे वे भुखमरी की बीमारी से हमेशा के लिए मुक्त हो जाएँ।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भुखमरी मुक्ति हेतु प्रयास

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं–

» **खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO)**– वर्ष 1945 में स्थापित संयुक्त संघ प्रणाली में खाद्य एवं कृषि संगठन विशिष्ट एजेंसियों में से एक है। इसका मुख्य कार्य पोषण, कृषि उत्पादकता में सुधार करना, जीवन–स्तर में वृद्धि करना और विशेषकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाना है। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रणाली में विश्व खाद्य सुरक्षा पर बनी समिति एक फोरम के रूप में कार्य करती है। **खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) ने 1965 में अपने संविधान की प्रस्तावना में घोषणा की कि "मानवीय समाज की भूख से मुक्ति सुनिश्चित करना उनके बुनियादी उद्देश्यों में से एक है।"**

» **विश्व खाद्य कार्यक्रम**– गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारों के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु और अधिक जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में भुखमरी मुक्ति के उपाय

जलवायु परिवर्तन का खतरा ऐसी चुनौती है जिससे युद्ध स्तर पर निपटे जाने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन भी भुखमरी के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है, जिसका सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। जलवायु परिवर्तन के कारण सूखे एवं बाढ़ दोनों की स्थितियाँ गंभीर हो जाएंगी। ऐसी स्थिति में जल सुरक्षा व्यवस्था बनानी होगी और पानी की हर बूँद पर ज्यादा फसल उगाने की तकनीकों को प्राथमिकता देनी होगी। अतः ऐसी फसलें विकसित करनी पड़ेंगी जो सूखे और गर्मी की स्थितियाँ बर्दाश्त कर सकें। फसलों को बाढ़ के बाद बचाने के उपाय करने होंगे और चावल की ऐसी किस्में विकसित करनी होगी जो पानी में डूबने पर जीवित रहें। बाढ़ का पानी घट जाने पर विशेष किस्मों के आलू और जल्दी पकने वाली मक्के की फसल और सूरजमुखी तथा चारे के काम आने वाली फसलें उगानी होंगी। वैकल्पिक फसलों की कार्यनीति लागू करने के लिए बीज गोदामों के निर्माण पर बल देना होगा।

इस प्रकार, समय की मांग है कि भुखमरी के उन्मूलन के लिए और भुखमरी से होने वाली घटनाओं को बीते समय की बात बनाने के लिए सरकारों की वर्तमान और भविष्य की योजनाओं को एक मिशन के साथ लागू किया जाना चाहिए और भुखमरी मुक्त विश्व की संकल्पना को साकार करने के लिए, प्रशासनिक प्रयासों के अलावा, सामान्य रूप से गैर–सरकारी संगठनों और आम नागरिकों को करूणा और भाईचारे की भावना के साथ प्रयास करना होगा। इन सभी के समन्वित सहयोग एवं प्रयासों से जो लक्ष्य हमने तय किया है उसमें निश्चित ही **'हम होंगे कामयाब एक दिन।'**

» हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है –**कमलापति त्रिपाठी**

» हिंदी भाषा को भारतीय जनता तथा संपूर्ण मानवता के लिए बड़ा उत्तरदायित्व संभालना है – **सुनीति कुमार चाटुर्ज्या**

» हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है – **राहुल सांकृत्यायन**

» जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता – **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

» हिंदी समस्त आर्यावर्त की भाषा है – **शारदाचरण मित्र**

» हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता – **पं0 गोविन्द बल्लभ पंत**

» उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करूंगा–**शारदाचरण मित्र**

डिजिटलीकरण की दिशा में निगम के बढ़ते कदम

एचआरएमएस पोर्टल में एक नया मॉड्यूल ई–एसीआर

निगम में मानव संसाधन प्रक्रियाओं के डिजिटलीकरण की दिशा में प्रयासों को जारी रखते हुए, एचआरएमएस पोर्टल में एक नया मॉड्यूल ई–एसीआर शामिल किया गया है। इससे समूह 'ग' एवं 'घ' के कर्मचारियों के लिए एपीएआर के समान एचआरएमएस द्वारा वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट (एसीआर) की प्रोसेसिंग सुविधाजनक होगी। अतः यह एसीआर की मैनुअल प्रक्रिया को दूर करने में सहायक होगा।

यह नया सिस्टम 30.04.2020 से शुरू किया गया और समूह 'ग' एवं 'घ' के सभी कर्मचारियों की निर्धारण वर्ष 2019–20 की वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट केवल ई–एसीआर मॉड्यूल का उपयोग करके भरी जाएगी। वर्ष 2019–20 से समूह 'ग' एवं 'घ' कैडर के किसी भी कर्मचारी की एसीआर मैनुअल स्वीकार नहीं की जाएगी।

इस मॉड्यूल को वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट की प्रारंभिक अवस्था अर्थात संबंधित द्वारा (यदि समूह 'ग' का कार्मिक वेअरहाउस प्रबंधक है) सेल्फ–अप्रेजल के लिए केपीए की सैटिंग तथा रिपोर्टिंग, समीक्षक एवं प्रतिहस्ताक्षर/अंतिम स्वीकृति प्राधिकारी द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया (जहाँ लागू हो) के प्रबंधन और ऑटोमेशन के लिए डिजाइन किया गया है। ई–एसीआर के विभिन्न फार्मेट का मूल्यांकन करने वाले मूल्यांकन प्राधिकारियों का अनुक्रम **परिशिष्ट क** पर संलग्न है।

इस मॉड्यूल को निगम में मूल्यांकन प्रक्रिया को पेपर लैस करने के उद्देश्य से शामिल किया गया है ताकि पारदर्शिता सुनिश्चित हो सके, जवाबदेही को बढ़ाया जा सके, सभी के लिए बेहतर परिणाम प्राप्त हो सके और प्राधिकृत अधिकारी द्वारा वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट के तत्काल एक्सेस में दक्षता, एसीआर को भेजे जाने के दौरान खोने तथा रिपोर्टिंग अधिकारियों द्वारा प्रतिकूल टिप्पणी सहित तारीख के साथ उचित टिप्पणी की रिकार्डिंग न करना आदि स्थिति से बचा जा सके। इन सभी मुद्दों को ई–एसीआर मॉड्यूल में दिया गया है। इसके अलावा, प्रत्येक क्षेत्र के लिए ई–एपीएआर के नोडल अधिकारी को ई–एसीआर मॉड्यूल के लिए नामांकित किया जाना है और साथ ही उन्हें अपने संबंधित क्षेत्रों में ऑनलाइन ई–एसीआर लागू करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा।

अधीनस्थों के निष्पादन का मूल्यांकन करते समय संबंधित प्राधिकारी द्वारा ध्यान रखने और अनुपालन के लिए निम्नलिखित मुख्य बिंदु दिए गए हैं:–

(क) यदि रिपोर्टिंग अधिकारी द्वारा किसी अधिकारी की ''ईमानदारी'' ''संदिग्ध'' पाई जाती है, तो टेक्सट बॉक्स में आवश्यक टिप्पणियां लिखी जानी चाहिए और टिप्पणियों से संबंधित एक गोपनीय नोट एसीआर के साथ संलग्न करना होगा। चूंकि ''ईमानदारी'' का कॉलम अत्यंत महत्वपूर्ण है, अतः इस कॉलम को भरते समय रिपोर्टिंग अधिकारियों द्वारा समुचित सावधानी रखी जानी चाहिए।

(ख) यह देखा गया है कि समूह 'ग' एवं 'घ' के कर्मचारियों के संबंध मे, वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट के कॉलम भरते समय प्रतिकूल प्रविष्टियों का उल्लेख/रिकार्ड करने के बाद भी, रिपोर्टिंग अधिकारी अंत में उसी कर्मचारी को ''अच्छा या बहुत अच्छा'' की श्रेणी में रखते हैं, जिसमें विरोधाभास होता है। रिपोर्टिंग अधिकारी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि निर्धारण निष्पक्ष, पारदर्शी और कर्मचारी के व्यावसायिक आचरण के बारे में किया जा रहा है।

(ग) निष्पक्ष और न्यायपूर्ण मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए, केवल संदेह के आधार पर प्रविष्टियों से बचा जा सकता है। ई–एसीआर में दर्ज किसी भी प्रतिकूल प्रविष्टि के लिए दस्तावेजी प्रमाण भी संलग्न किए जाने चाहिए।

नए शामिल किए गए मॉड्यूल के लिए उपयोगकर्ता पुस्तिका को संदर्भ के लिए पोर्टल पर उपलब्ध कराया गया है जिससे मॉड्यूल का उपयोग बेहतर तरीके से किया जा सके।

*सीआर अनुभाग के सौजन्य से

ई–एसीआर के विभिन्न फार्मेट का मूल्यांकन करने वाले मूल्यांकन प्राधिकारियों का अनुक्रम

1. निजी सचिव, आशुलिपिक के लिए ई–एसीआर (प्रथम स्तर)

मूल्यांकक

2. ग्रुप डी के लिए ई–एसीआर (तीन स्तर)

मूल्यांकक > समीक्षक > प्रतिहस्ताक्षर प्राधिकारी

3. ड्राइवर के लिए ई–एसीआर (दो स्तर)

मूल्यांकक > समीक्षक या प्रतिहस्ताक्षर प्राधिकारी

4 तकनीकी सहायक/कनिष्ठ तकनीकी सहायक के लिए ई–एसीआर (तीन स्तर)

मूल्यांकक > समीक्षक > प्रतिहस्ताक्षर प्राधिकारी

5. कनिष्ठ अधीक्षक, हिंदी अनुवादक, वेअरहाउस सहायक–I, II के लिए ई–एसीआर (तीन स्तर)

मूल्यांकक > समीक्षक > प्रतिहस्ताक्षर प्राधिकारी

6. इलैक्ट्रीकल मिस्त्री के लिए ई–एसीआर (तीन स्तर)

मूल्यांकक > समीक्षक > प्रतिहस्ताक्षर प्राधिकारी

7. वेअरहाउस प्रबंधक के लिए ई–एसीआर (चार स्तर)

कर्मचारी/मूल्यांकिती > मूल्यांकक > समीक्षक > प्रतिहस्ताक्षर प्राधिकारी

ई–ऑफिस का प्रयोग करने के लिए मानक प्रचालन प्रक्रिया (एसओपी)

1. कार्यालय को पेपरलेस बनाने और कार्बन फुट प्रिंट को कम करने के अतिरिक्त पारदर्शिता और कार्यकुशलता बढ़ाने तथा फाइलों में लगने वाले समय को कम करने के प्रयास में निगम ने 25 मार्च 2020 से ई–ऑफिस प्रणाली को लागू किया है। ई–ऑफिस प्रणाली के कार्यान्वित होने से कोविड–19 के कारण देशव्यापी लॉकडाउन के बीच निगम को आवश्यक कार्य कार्यालय/घर से करने में भी सुगमता एवं सरलता हुई है।

2. सुधार एक सतत प्रक्रिया है और उपयोगकर्ताओं के अनुभव में वृद्धि करने तथा कार्य को अधिक आसानी से करने के लिए ई–ऑफिस में विभिन्न सुविधाएं हैं जिनका लाभ उठाया जा सकता है। ई–ऑफिस के माध्यम से यह भी देखा गया है कि पत्र/फाइल को प्रॉसेस करते समय एवं ई–ऑफिस की विशेषताओं का उपयोग करते हुए एकरूपता नहीं रखी जाती, इसलिए ई–ऑफिस पर कार्य करने के दौरान उपलब्ध सुविधाओं का प्रयोग करने के लिए निम्नलिखित मानक प्रचालन प्रक्रियाओं का पालन किया जाए।

3. **ड्राफ्ट पत्र/प्रस्ताव/टेंडर आदि में संशोधन के लिए:** ई–फाइल में एक रेफेरेंस विकल्प है, जहां उपयोगकर्ता इस तरह के ड्राफ्टों को संशोधन/पुनरीक्षण/अनुमोदन अथवा किसी अन्य उपयोगकर्ता से जानकारी/डेटा प्राप्ति हेतु वर्ड/एक्सेल फाइल के रूप में अपलोड कर सकते हैं।

लोकल रेफरेंस का उपयोग करने के लिए उपयोगकर्ताओं द्वारा निम्नलिखित स्टेप का पालन किया जाना चाहिए:

स्टेप 1: – फाइल ओपन करने के बाद टॉप मेन्यू में दिए गए 'रेफरेंस' टैब पर क्लिक करें।

स्टेप 2: – 'लोकल रेफरेंस' पर क्लिक करें।

स्टेप 3: – यहाँ दो ऑप्शन्स दिखाई देंगे 1. 'अपलोड फाइल' 2. 'अपलोड फ्रॉम केएमएस'। अब उपयोगकर्ताओं को वर्ड, एक्सेल या पॉवर पॉइंट में तैयार की गई फाइल अपलोड करने के लिए 'अपलोड फाइल' विकल्प का चयन करना होगा।

स्टेप 4: – उपयोगकर्ता (ग्रीन नोट में) उल्लेख कर सकते हैं कि ड्राफ्ट परिपत्र/पत्र आदि (फाइल का नाम), अवलोकन या अनुमोदन या किसी अन्य टिप्पणियों हेतु लोकल रेफरेंस में संलग्न हैं।

स्टेप 5: – फाइल प्राप्तकर्ता अपने स्थानीय डेस्कटॉप/लैपटॉप में फाइल डाउनलोड कर सकते हैं और फाइल में संशोधन तथा/या पीडीएफ फाइल पर डिजिटल हस्ताक्षर कर सकते हैं तथा उक्त ऊपर वर्णित स्टेप्स की सहायता से संशोधित फाइल को अपलोड कर सकते हैं।

स्टेप 6: – फाइल प्राप्तकर्ता (ग्रीन नोट में) उल्लेख कर सकते हैं कि रेफरेंस के तहत अपलोड की गई फाइल अनुमोदित कर दी गई है/या कोई अन्य टिप्पणी दे सकते हैं। प्रत्येक अपलोड और डाउनलोड फाइलों का

ब्यौरा ई–ऑफिस प्रणाली द्वारा रखा जाएगा। रेफरेन्स में सृजित दस्तावेज ई–फाइल के साथ स्थायी रूप से रहेंगे। उपयोगकर्ता विषय/तिथि के अनुसार लोकल रेफरेन्स में फाइल को देख सकते हैं।

4. **पत्र/प्रस्ताव/निविदा आदि पर डिजिटल सिग्नेचर सर्टिफिकेट (DSC) लगाने हेतु:** प्राप्तकर्ता यदि आवश्यक हो तो वर्ड फाइल को संशोधित करके तथा उस फाइल को पीडीएफ प्रारूप में परिवर्तित करके अपने डीएससी का प्रयोग कर हस्ताक्षर कर सकते हैं। ऐसा करने के लिए डेस्कटॉप/लैपटॉप में 'एक्रोबैट रीडर डीसी' का नवीनतम संस्करण इंस्टॉल होना चाहिए। इसे ऑनलाइन निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

   प्रबंध निदेशक के हस्ताक्षर से जारी किये जाने वाले पत्र/परिपत्र के लिए निम्नलिखित उदाहरण देखे जा सकते हैं : –

क) डीलिंग अधिकारी / कर्मचारी अपने डेस्कटॉप/लैपटॉप में मसौदा पत्र (लेटर हेड के साथ वर्ड फाइल) तैयार करेंगे और लोकल रेफेरेंस के माध्यम से इसे अपलोड करेंगे। तत्पश्चात, डीलिंग अधिकारी/कर्मचारी ग्रीन नोट को जोड़ने के बाद फाइल को रिपोर्टिंग अधिकारी/विभागाध्यक्ष को अग्रेषित करेंगे।

ख) रिपोर्टिंग अधिकारी / विभागाध्यक्ष / निदेशक, यदि आवश्यक हो तो पत्र को डाउनलोड करके उसे संशोधित कर सकते हैं तथा ऊपर दिए गए स्टेप 1 से 3 का प्रयोग करके फाइल को अपलोड करके प्रबंध निदेशक को भेज सकते हैं।

ग) ई–फाइल प्राप्त होने पर प्रबंध निदेशक अंतिम अपलोड किए गए पत्र या पत्र के किसी अन्य संस्करण को अपने डेस्कटॉप/लैपटॉप में डाउनलोड कर सकते हैं तथा यदि आवश्यक हो तो उसे संशोधित कर पीडीएफ प्रारूप में परिवर्तित भी कर सकते हैं। इसके बाद प्रबंध निदेशक पीडीएफ पत्र पर डिजिटल रूप से हस्ताक्षर कर सकते हैं तथा लोकल रेफेरेंस के माध्यम से उसे अपलोड करके वांछित उपयोगकर्ता को फाइल वापस भेज सकते हैं।

घ) ई–फाइल प्राप्त होने पर डीलिंग अधिकारी/कर्मचारी द्वारा डिजिटल हस्ताक्षरित पत्र को डाउनलोड कर

ब्राउज और डायरिज टैब का उपयोग करके रिसीट बनाकर फाइल को संबंधित उपयोगकर्ताओं को भेजना है। डीलिंग अधिकारी/कर्मचारी स्वयं को भी उस पत्र की एक प्रति भेजेंगे और ऑफिस कॉपी के लिए उसे संबंधित फाइल में रख सकते हैं ।

ड) यदि कोई पत्र आदि निगमित कार्यालय/क्षेत्रीय कार्यालय के बाहर के अधिकारियों के लिए है तो उसको डेस्कटॉप/लैपटॉप पर डाउनलोड किया जाना चाहिए और यदि प्राप्तकर्ता की ईमेल आई डी उपलब्ध है तो उसे ई–मेल के माध्यम से भेजा जाना चाहिए, अथवा पत्र की हार्ड कॉपी ई आफिस के डिस्पैच ऑप्शन के माध्यम से संबंधित को भेजी जा सकती है।

7. रेफेरेंस सुविधा का उपयोग केवल पत्र/परिपत्र/इस्टीमेट/बीओक्यू/बीओएम/टेंडर आदि के सुधार /पुनरीक्षण/अनुमोदन के लिए किया जाना चाहिए। रेफेरेंस सुविधा का उपयोग तब भी किया जाना चाहिए, जब किसी एक्सेल फाइल का पुनरीक्षण करना होता है (जिसका उपयोग ज्यादातर इंजीनियरिंग विभाग द्वारा किया जाता है) या किसी भी अधिकारी/कर्मचारी से किसी भी डेटा को एक्सेल प्रारूप में माँगा जाता है। उपरोक्त के अलावा अन्य सभी दस्तावेजों को ब्राउज और डायरिज ऑप्शन का उपयोग करके इनकी रिसीट बनाकर फाइल के साइड में संलग्न किया जाना चाहिए।

8. रेफेरेंस टैब शुरू करने के साथ, 'ड्राफ्ट' विकल्प का उपयोग किसी भी पत्र/प्रस्तावों/परिपत्र/निविदा /एस्टिमेट/बीओक्यू/बीओएम आदि के सुधार/पुनरीक्षण/अनुमोदन के लिए बंद कर दिया जाना चाहिए।

9. ई–फाइल के ग्रीन नोट साइड के अंतर्गत एक अटैच ऑप्शन है। इस सुविधा का उपयोग किसी भी प्रकार की फाइल को ग्रीन नोट साइड पर संलग्न करने के लिए उपयोग नहीं किया जाना है। यह ध्यान रखा जाए कि अटैच ऑप्शन का उपयोग करके अपलोड किया गया कोई भी दस्तावेज ई–ऑफिस में प्रोसेसिंग के लिए वैध दस्तावेज नहीं होगा।

10. समिति के सदस्यों द्वारा बैठक के कार्यवृत (एमओएम) पर हस्ताक्षर करने के लिए निम्नलिखित पद्धति अपनाई जाए:

पद्धति – 1: – बैठक के अंतिम स्वीकृत कार्यवृत्त को ग्रीन नोट साइड पर लिखा जा सकता है और इसे डीलिंग अधिकारी/कर्मचारी द्वारा समिति के सबसे कनिष्ठ सदस्य को भेजा जाना चाहिए जिनके द्वारा समिति के अगले वरिष्ठ सदस्य को फाइल अग्रेषित की जानी चाहिए। हस्ताक्षर होने पर समिति के अध्यक्ष ई–फाइल को डीलिंग अधिकारी/कर्मचारी को वापस भेजेंगे।

पद्धति – 2: – बैठक के अंतिम स्वीकृत कार्यवृत्त को पीडीएफ फाइल में परिवर्तित किया जा सकता है और समिति के प्रत्येक सदस्य उस पर अपना डीएससी लगा सकते हैं। डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित बैठक के कार्यवृत्त को ब्राउज और डायरीज ऑप्शन के माध्यम से ई–फाइल में रख सकते हैं।

पद्धति – 3: – बैठक के कार्यवृत्त को पेपर पर प्रिंट कर समिति के सदस्यों द्वारा मैनुअली हस्ताक्षरित किया जा सकता है तथा ई–ऑफिस में ब्राउज और डायरीज ऑप्शन के माध्यम से आगे की कार्रवाई के लिए स्कैन किया जा सकता है।

11. **मुख्य सूची और समूह:** उपयोगकर्ता नियमित प्राप्तकर्ताओं को फाइल/पत्र आदि भेजने के लिए 'मुख्य सूची' और 'समूह' तैयार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए जैसे – निगमित कार्यालय आमतौर पर सभी विभागाध्यक्ष और क्षेत्रीय प्रबंधको को पत्र/परिपत्र/एसओपी/निर्देश भेजता है। इस प्रकार निगमित कार्यालय में उपयोगकर्ता ऐसे प्राप्तकर्ताओं को अपने एकाउंट में 'मुख्य सूची' या 'समूह' में रख सकते हैं।

12. **स्वीकृति आदेश :** सक्षम प्राधिकारी द्वारा स्वीकृति के बाद वेंडर आदि को भुगतान करने के लिए डीलिंग अधिकारी/कर्मचारी द्वारा अपने डेस्कटॉप/लैपटॉप में स्थानीय रूप में स्वीकृति आदेश तैयार कर उस पर सक्षम अधिकारी के डीएससी लगाकर तथा ब्राउज और डायरीज ऑप्शन का प्रयोग करके स्वीकृति आदेश को संबंधित फाइल में रखकर उसे वित्त विभाग के संबंधित अधिकारी/कर्मचारी के पास भुगतान करने के लिए भेजना होगा। वित्त विभाग भुगतान करने और अपने रिकॉर्ड के लिए बिल और स्वीकृति आदेश की प्रति को डाउनलोड कर सकता है। डीलिंग अधिकारी/कर्मचारी द्वारा डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित स्वीकृति आदेश की एक प्रति वेंडर को भी भेजेगा। पेपरलेस वर्किंग सुनिश्चित करने के लिए स्वीकृति आदेश को अनिवार्य रूप से ईमेल अथवा ई–ऑफिस में 'डिस्पैच' ऑप्शन के माध्यम से भेजना चाहिए।

13. **येलो नोट:** ई–ऑफिस में उपयोगकर्ता नोट लिखने के लिए ग्रीन नोट जोड़ सकता है, जिसे किसी भी उपयोगकर्ता को भेजे जाने पर उसे बदला या हटाया नहीं जा सकता है। इसलिए फाइल में ड्राफ्ट नोट बनाने के लिए येलो नोट की सुविधा उपलब्ध है। यदि एक बार येलो नोट सही बन जाता है तो इसे ग्रीन नोट शीट में परिवर्तित किया जा सकता है। येलो नोट का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जा सकता है:

स्थिति 1: निजी सहायक/निजी सचिव/प्रधान निजी सचिव आदि मसौदा नोट बना सकते हैं: डिक्टेशन या कोई अन्य कार्य करते समय येलो नोट जोड़ें तथा ड्राफ्ट नोट लिखें और उस फाइल को रिपोर्टिंग अधिकारी को भेजें। अधिकारी उस येलो नोट को संशोधित/रद्द/पुष्टि कर सकता है और एक बार पुष्टि हो जाने के बाद येलो नोट ग्रीन नोट में बदल जायेगा और रिपोर्टिंग अधिकारी फाइल पर हस्ताक्षर करके उसे संबंधित उपयोगकर्ता को भेज सकता है। निजी सहायक/निजी सचिव/प्रधान निजी सचिव आदि के हस्ताक्षर ग्रीन नोट पर ई–ऑफिस द्वारा प्रिंट नहीं किये जायेंगे अर्थात केवल येलो नोट की पुष्टि करने वाले उपयोगकर्ता के ही हस्ताक्षर होंगे।

स्थिति 2: नोट्स की पुष्टि/सुधार के लिए : जब कोई उपयोगकर्ता ग्रीन नोट शीट पर लिखी जाने वाली

विषयवस्तु के बारे में आश्वस्त नहीं होता है और उसे रिपोर्टिंग अधिकारी या किसी अन्य उपयोगकर्ता से नोटशीट पर सुधार/पुष्टि की आवश्यकता होती है तो ऐसी स्थिति में उपयोगकर्ता येलो नोट पर विषयवस्तु लिख सकता है तथा उसे संशोधन के लिए रिपोर्टिंग अधिकारी को भेज सकता है। रिपोर्टिंग अधिकारी येलो नोट में सुधार कर सकता है और नोट को उस उपयोगकर्ता को वापस भेजकर ग्रीन नोट तैयार करने के लिए येलो नोट की पुष्टि कर सकता है। इस स्थिति का प्रयोग ज्यादातर तब किया जाता है जब डीलिंग सहायक प्रस्ताव देता है और उस प्रस्ताव को ग्रीन नोट पर लाने से पहले, रिपोर्टिंग अधिकारी द्वारा सुधार/अवलोकन की आवश्यकता होती है।

14. डिजिटल सिग्नेचर सर्टिफिकेट (डीएससी) वाले दस्तावेजों को जब ई–ऑफिस में अपलोड किया जाता है तो उनमें डीएससी नहीं दिखा जा सकता है। हालाँकि, जब उन दस्तावेजों को डाउनलोड किया जाता है और 'एक्रोबेट रीडर डीसी' सॉफ्टवेयर में खोला जाता है तब डीएससी दिखाई देगा। हालांकि 'एक्रोबेट रीडर डीसी' के उचित कॉन्फिगरेशन होने पर डीएससी को ई–ऑफिस में भी दिखाया जा सकता है। रेलटेल के सपोर्ट स्टाफ ऐसे कॉन्फिगरेशन के लिए उपयोगकर्ताओं की सहायता करेंगे।

15. मैसर्स रेलटेल का स्टाफ विभाग/क्षेत्रीय कार्यालयों में तैनात किये गए हैं जो कार्मिकों को 'एक्रोबेट रीडर डीसी' की इंस्टालेशन और प्रशिक्षण सहित दूर से सहायता प्रदान करेंगे, इसलिए उपयोगकर्ताओं से अनुरोध है कि दूर से सहायता प्राप्त करने के लिए डेस्कटॉप/लैपटॉप पर 'ऐनी डेस्क' सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करें। दूर से सहायता 'सोशल डिस्टेंसिंग' को बनाए रखने के लिए भी उपयोगी होगी।

16. उपयोगकर्ता निगम की वेबसाइट (www.cewacor.nic.in) के नीचे दाईं ओर उपलब्ध 'ई–ऑफिस कॉर्नर' लिंक पर क्लिक करके उपयोगकर्ता मैनुअल्स, परिपत्रों और वीडियो ट्यूटोरियल्स को देख सकते हैं।

*एमआईएस विभाग के सौजन्य से

पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेशन के पश्चात् ग्राहकों द्वारा रखी जाने वाली सावधानियाँ

ऐसा करें	ऐसा न करें
1. सभी खाद्य पदार्थों को एअर टाइट कंटेनरों में रखें अथवा प्लास्टिक से पूरी तरह ढक कर रखें।	1. कीटनाशक द्वारा उपचारित क्षेत्र में विषैले प्रभाव से बचने के लिए पालतू जानवरों एवं बच्चों को न जाने दें।
2. जिस क्षेत्र को कीटनाशक द्वारा उपचारित किया गया है, उससे बच्चों, वृद्धों, रोगियों एवं पालतू जानवरों को दूर रखें।	2. रसोई के सामान को डिटर्जेंट एवं पानी से पूरी तरह धोए बिना प्रयोग न करें।
3. कृपया पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेटर से परिसर का पूरा क्षेत्र अर्थात् स्टोर, स्नानागर/शौचालय, शयन कक्षों आदि में छिड़काव/उपचार करवाएं।	3. यदि कीटनाशक उपचार के समय कोई खाद्य पदार्थ अथवा अन्य खाने योग्य वस्तु या कागज/पेपर बिना ढके रह गई है तो उसका प्रयोग न करें।
4. पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेशन के पश्चात् परिसरों को कम–से–कम दो घण्टे के लिए बन्द रखें।	4. विषैले प्रभाव से बचने के लिए उपचारित कक्षों के दरवाजों, खिड़कियों अथवा दीवारों को न छुएं।
5. ऑपरेशन के दौरान फर्श पर बिखरे रसायन के घोल को हटाने के लिए फर्श को अच्छी प्रकार पोंछें/धोंएं ताकि पालतू जानवरों, बच्चों आदि को विषैले तत्वों से बचाया जा सके।	5. कीटनाशक उपचार के दौरान सामने खुले पड़े रह गए कपड़ों को न पहनें।
6. परिसरों में प्रवेश करने से पहले सभी दरवाज़े, खिड़कियाँ तथा रोशनदान खोल दें और लगभग एक घण्टे तक पंखे चला दें।	6. छिड़काव के तुरंत बाद सफाई न करें।
7. ऑपरेशन के लिए प्रयोग किए गए कीटनाशकों का नाम/गुणवत्ता एवं सावधानियों के बारे में पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेटर से अवश्य पूछें।	

*पीसीएस अनुभाग के सौजन्य से

मानव संसाधन विकास में प्रबन्धन की भूमिका

किसी भी संगठन की प्रगति के लिए मानव संसाधन विकास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि मानव संसाधन विकास उस संगठन की प्रगति का केन्द्र बिन्दु होता है। आज के दौर में जब कई क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा के कारण कार्यों में नवीनता एवं क्वालिटी में तत्परता की जरूरत महसूस की जा रही है, तब मानव संसाधन विकास की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इसके अलावा संगठन के कामकाज के तौर–तरीके भी तेजी से बदलने के कारण मानव संसाधन विकास में प्रबन्धन का योगदान अत्यन्त उपयोगी हो गया है। संगठन में कार्य की गति को बढ़ाने के लिए मानव संसाधन एवं अन्य संसाधनों का उपयोग उचित एवं प्रभावी ढंग से होने पर कार्य संतुष्टि बढ़ने के साथ–साथ उत्पादकता में भी वृद्धि होती है।

वर्तमान समय में आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में व्यापार में आई चुनौतियों के कारण मानव संसाधन विकास की भूमिका लगातार बढ़ रही है जिसके लिए निम्न उद्देश्यों को आत्मसात करना जरूरी है अर्थात् उच्च प्रबन्धन एवं कर्मचारियों के बीच संपर्क बनाकर कार्य करना, समुचित जन शक्ति को व्यवस्थित रखना तथा प्रबन्ध करना, कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण देना ताकि उत्पादकता में वृद्धि हो सके और संगठन के कार्यनिष्पादन में वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकें। इसके अतिरिक्त, संगठन के अन्दर तथा बाहर कर्मचारियों के बीच नैतिक मूल्यों तथा व्यवहार को बनाए रखने में सहायता प्रदान करना मानव संसाधन विकास का महत्वपूर्ण भाग है।

मानव संसाधन विकास का मुख्य उद्देश्य संगठन के कर्मचारियों का अधिकाधिक लाभ सुनिश्चित करना तथा वित्तीय जोखिम को कम करना है जिसके लिए गतिविधियों का संचालन प्रभावी ढंग से सुनिश्चित किया जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः सफल प्रबन्धन के लिए मानव संसाधन विकास एक चुनौतीपूर्ण एवं प्रभावशाली कार्य है क्योंकि यह किसी संगठन की बहुमूल्य एवं विशेष संपत्ति होती है।

मानव संसाधन विकास प्रबंध को समझने के लिए इसके संरचनात्मक अर्थ को समझना जरूरी है। यह तीन शब्दों से मिलकर बना है, मानव, संसाधन व प्रबंध। मानव संसाधन प्रबंध पर चर्चा करने से पूर्व इन तीनों के अलग–अलग अर्थ जानना उपयोगी होगा।

1. **मानव (Human Being)** – मानव शब्द का अर्थ बड़ा ही सामान्य है। मानव में स्त्री व पुरूष दोनों ही सम्मिलित हैं। यद्यपि मानव में सभी उम्र के व्यक्ति सम्मिलित किए जाते हैं, तथापि उद्योग व व्यवसाय के क्षेत्र में कार्य करने की क्षमता रखने वाले व्यक्तियों को ही मानव के अर्थ में सम्मिलित किया जा सकता है।

2. **संसाधन (Resource)** – मानव आदि काल से ही विकास की ओर प्रवृत्त रहा है। प्रारंभ में उसकी आवश्यकताएं अत्यन्त सीमित थीं किन्तु समय के साथ–साथ उसने उत्तरोत्तर अपने जीवन स्तर का उन्नयन किया है। उसकी आवश्यकताओं पर इच्छाएं हावी होने लगी हैं। मानव विभिन्न वस्तुओं व सेवाओं की आवश्यकता व इच्छा महसूस करता है। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए विभिन्न वस्तुओं को जुटाता

*हिंदी स्मारिका से साभार

है, उत्पादन करता है, उपयोगिता बढ़ाता है। उसकी आवश्यकता व इच्छाओं की पूर्ति के लिए उत्पादन कार्य में योग देने वाले साधन ही संसाधन कहलाते हैं, जैसे– भूमि, पूंजी, तकनीक, श्रम, प्रबंध व उद्यम आदि।

3. **प्रबंधन (Management)**– प्रबंध यह जानने की कला है कि आप क्या करना चाहते हैं? तत्पश्चात पूर्वानुमान एवं नियोजन करना, संगठित करना, निर्देश देना, समन्वय करना तथा नियन्त्रण करना तथा यह सुनिश्चित करना कि कर्मचारी उस कार्य को सर्वोत्तम व मितव्ययिता पूर्ण ढंग से करें। लोगों के साथ मिलकर कार्य कराने की प्रक्रिया को प्रबंध कहा जाता है। सार रूप में लोकतन्त्र की भाषा में कहा जा सकता है, ''मानव के लिए मानव द्वारा कार्य कराना ही प्रबंध है।''

''मानव संसाधन प्रबंध'' शब्द का प्रयोग विगत 30–35 वर्षों से होने लगा है। "मानव संसाधन प्रबंध" व "मानव संसाधन विकास" शब्दावली का प्रयोग दिनों–दिन बढ़ रहा है। यहां तक कि शिक्षा मंत्रालय का नाम मानव संसाधन विकास मंत्रालय कर दिया गया है। कम्पनियों में मानव संसाधन प्रबंधक की नियुक्तियां होने लगीं हैं। मानव संसाधन प्रबंध, प्रबंध की वह महत्वपूर्ण शाखा है जिसके अन्तर्गत संगठन के उद्देश्यों को मितव्ययितापूर्ण व प्रभावकारी तरीके से प्राप्त करने के उद्देश्य से संगठन के विभिन्न स्तरों हेतु मानव संसाधनों को प्राप्त करके, विकास करने व उन्हें सन्तुष्टि प्रदान करते हुए व्यवस्थित करने के लिए प्रबंधकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है।

मानव संसाधन प्रबंधन (HRM) किसी प्रतिष्ठान की सबसे मूल्यवान उन आस्तियों के प्रबंधन का कौशलगत और सुसंगत दृष्टिकोण है, जो वहां काम कर रहे हैं तथा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से व्यापार के उद्देश्यों की प्राप्ति में योगदान दे रहे हैं। ''मानव संसाधन प्रबंधन'' (HRM) और ''मानव संसाधन'' (HR) शब्दों का स्थान मुख्यतः ''कार्मिक प्रबंधन'' (Personnel Management) शब्द ने ले लिया है, जो प्रतिष्ठान में लोगों के प्रबंधन में शामिल प्रक्रियाओं की व्याख्या करता है। सामान्य अर्थ में HRM का मतलब लोगों को रोजगार देना, उनके संसाधनों का विकास करना, उपयोग करना, उनकी सेवाओं को काम और प्रतिष्ठान की आवश्यकता के अनुरूप बनाये रखना और बदले में (भरण–पोषण) मुआवजा देते रहना है। मानव संसाधन प्रबंधन विभाग किसी भी संगठन का महत्वपूर्ण विभाग माना जाता है। मानव संसाधन प्रबंधन किसी भी सुस्थापित संगठन में मुख्य भूमिका निभाता है। मानव संसाधन प्रबंधन (HRM) के कार्यों में विभिन्न गतिविधियां, जिनमें मुख्य रूप से यह महत्वपूर्ण फैसला है कि आपको कितने स्टाफ की जरूरत है और क्या उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वतंत्र ठेकेदारों या भाड़े पर कर्मचारियों की सेवा लेने की जरूरत है। भर्ती और बेहतरीन कर्मचारी प्रशिक्षण, उच्च कार्य प्रदर्शन को सुनिश्चित करना, प्रदर्शन के मुद्दों से निपटना और अपने कर्मचारियों और प्रबंधन के तरीकों को नियमों के अनुरूप सुनिश्चित करना शामिल हैं। गतिविधियों में कर्मचारी के हित और मुआवजे, कर्मचारी के रिकार्ड्स और कार्मिक नीतियों तक आपकी पहुंच का प्रबंधन भी शामिल है।

मानव संसाधन के मुख्य कार्य–क्षेत्र इस प्रकार हैं :

1. **भर्ती एवं चयनः** कार्य विवरण तैयार करना, उपयुक्त योग्यता तथा कौशल के साथ–साथ सही सोच और मनोवृत्ति रखने वाले व्यक्तियों को आकर्षित करना।

2. **जनशक्ति की योजनाः** संगठन में जनशक्ति की वर्तमान तथा भावी आवश्यकताओं का मूल्यांकन करते हुए जनशक्ति की योजना बनाना, पदारोहण नियोजन और कॅरिअर नियोजन। यह एक ऐसा महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसमें किसी संगठन की भावी सुदृढ़ता निहित होती है।

3. **मानव संसाधन प्रशासनः** संगठन की मानव संसाधन नीतियां तथा कार्य–पद्धतियां निर्धारित करना तथा उन्हें कार्यान्वित करना।

4. **वेतन तथा लाभः** वेतन–ढांचा कर्मचारी अनुलाभ आदि निर्धारित करना, स्वास्थ्य, सुरक्षा, संरक्षा, अंतिम लाभ तथा कर्मचारी कल्याण सुविधाएं देना। यह क्षेत्र प्रतिभावान व्यक्तियों को संगठन में बनाए रखने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।

5. **औद्योगिक संबंधः** प्रबंध–तंत्र एवं कर्मचारी संगठनों के बीच स्वस्थ संबंधों को बढ़ावा देना, कर्मचारियों के संबंधों व मामलों का पता लगाना, श्रम–न्यायालयों में श्रम–आयुक्तों के यहां कानूनी मामलों की देख–रेख करना।

6. **प्रशिक्षण एवं विकासः** प्रभावी कार्य–निष्पादन के लिए कर्मचारी ऑरिएंटेशन कार्यक्रमों की व्यवस्था करना और तकनीकी कौशल तथा आचरण प्रशिक्षण देना। संगठन में किसी कर्मचारी के कॅरिअर की उन्नति के लिए यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

7. **कार्य निष्पादन मूल्यांकनः** प्रशिक्षण, पदोन्नति और प्रोत्साहन आदि के उद्देश्य से मूल्यांकन सूचना का उपयोग करते हुए समय–समय पर कर्मचारियों के कार्य–निष्पादन की मूल्यांकन प्रणाली की समीक्षा करना। कर्मचारियों में विश्वास भावना का विकास करने तथा प्रणाली में पारदर्शिता लाने के लिए कर्मचारियों के कार्य–निष्पादन का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त साधनों तथा तकनीकों का उपयोग करना।

मानव संसाधन विशेषताओं में शामिल हैं:
प्रतिष्ठानात्मक प्रबंधन (Organizational Management)
कार्मिक प्रशासन (Personnel Administration)
मानव शक्ति प्रबंधन (Human Power Management)
औद्योगिक प्रबंधन (Industrial Management)
मानव संसाधन प्रबंधक की भूमिका (Role Of Human Resource Manager) मानव संसाधन प्रबंधक अन्य प्रबंधकों की भांति मूलतः एक प्रबंधक है। प्रबंधक का कार्य प्रबंध करना है। प्रबंध एक बहुआयामी कार्य है, जिसके अन्तर्गत तीन प्रमुख कार्य सम्मिलित हैं:–

1. व्यवसाय का प्रबंध करना (Managing a Business)

2. प्रबंधकों का प्रबंध करना (Managing Managers)

3. कार्य तथा कार्यकर्ताओं का प्रबंध करना (Managing the Work and the Workers)

इस प्रकार संगठन के प्रमुख घटकों में मानव, मुद्रा, माल, मशीन तथा कुशल प्रबन्धन आदि शामिल हैं। मानव शक्ति में अपार संभावनाएं होती हैं और असीमित क्षमता होती है। अतः निर्धारित कार्मिकों द्वारा कार्यों को सम्पादित करना उनकी योग्यता, कार्यक्षमता एवं कार्यकुशलता संगठन के विकास का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ होता है। हम कह सकते हैं कि मानव संसाधन उत्पादन में प्रयुक्त होने वाली पूंजी है तथा इसमें उत्पादन के ज्ञान का भंडार समाहित है। इन तथ्यों के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि संगठन के विकास में मानव संसाधन की नैतिक, रचनात्मक भागीदारी से कार्यस्थल का माहौल बदलकर, उसे एक नया आयाम दिया जा सकता है जो संगठनात्मक स्तर पर कॉरपोरेट संस्कृति की विशेषताओं को उजागर करने में सहायक हो सकता है। इसके अतिरिक्त, संगठन की कुशलता, तकनीकी योग्यता और क्षमता आदि को निर्धारित करने में मानव संसाधन विकास का योगदान उल्लेखनीय होता है।

हम कह सकते हैं कि मानव संसाधन विकास एक संरचना है जो संगठन के लक्ष्यों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने के साथ व्यक्ति विशेष के विकास की अनुमति देता है जिससे राष्ट्रीय उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक रचनात्मक योगदान हो सकता है। निःसंदेह मानव संसाधन विकास संगठन में मानव पूंजी के विस्तार के लिए एक ढ़ांचा है। मोटे तौर पर यह प्रशिक्षण तथा सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने का एक माध्यम है। इस प्रकार मानव संसाधन विकास एक परिभाषित वस्तु नहीं है अपितु व्यवस्थित प्रक्रियाओं की एक शृंखला है जिसका उद्देश्य सीखना है। अतः एक संगठन में कार्य करने वाले लोग इसके मानव संसाधन हैं जिन्हें सामान्य रूप से किसी व्यवसाय के महत्वपूर्ण भाग को विकसित करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। संगठनात्मक सफलता में महत्वपूर्ण योगदान के लिए मानव संसाधन की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण बनी रहेगी जिससे कार्यक्षमता में वृद्धि और विकास की गति को बढ़ावा मिलेगा।

कमलेश्वर की कहानी

कमलेश्वर (6 जनवरी, 1932 – 27 जनवरी, 2007) हिन्दी के बीसवीं शती के सबसे सशक्त लेखकों में से एक समझे जाते हैं। कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता, स्तंभ लेखन, फिल्म पटकथा जैसी अनेक विधाओं में उन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया। कमलेश्वर का लेखन केवल गंभीर साहित्य से ही जुड़ा नहीं रहा बल्कि उनके लेखन के कई तरह के रंग देखने को मिलते हैं। उन्होंने फिल्मों के लिए पटकथाएँ तो लिखी ही, उनके उपन्यासों पर फिल्में भी बनीं।

कमलेश्वर को 'पद्मभूषण' से नवाजा गया और उन्हें 'कितने पाकिस्तान' (उपन्यास) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे 'सारिका' 'धर्मयुग', 'जागरण' और 'दैनिक भास्कर' जैसे प्रसिद्ध पत्र–पत्रिकाओं के संपादक भी रहे। उन्होंने दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक जैसा महत्वपूर्ण दायित्व भी निभाया। उनके प्रमुख उपन्यास – एक सड़क सत्तावन गलियाँ, तीसरा आदमी, डाक बंगला, समुद्र में खोया हुआ आदमी, लौटे हुए मुसाफिर, कितने पाकिस्तान, अंतिम सफर आदि हैं। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं जिसमें नीली झील, तलाश, नागमणि, कस्बे का आदमी आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त उनके तीन नाटक अधूरी आवाज, रेत पर लिखे नाम, हिंदोस्ता हमारा भी प्रसिद्ध हैं।

कहानी बहुत छोटी सी है, मुझे ऑल इण्डिया मेडिकल इंस्टीट्यूट की सातवीं मंजिल पर जाना था। आई०सी०यू० में गाड़ी पार्क करके चला तो मन बहुत ही दार्शनिक हो उठा था। कितना दुःख और कष्ट है इस दुनिया में... लगातार एक लड़ाई मृत्यु से चल रही है... और उसके दुःख और कष्ट को सहते हुए लोग – सब एक से हैं। दर्द और यातना तो दर्द और यातना ही है – इसमें इंसान और इंसान के बीच भेद नहीं किया जा सकता। दुनिया में हर माँ के दूध का रंग एक है। खून और आंसुओं का रंग भी एक है। दूध, खून और आँसुओं का रंग नहीं बदला जा सकता... शायद उसी तरह दुःख, कष्ट और यातना के रंगों का भी बँटवारा नहीं किया जा सकता। इस विराट मानवीय दर्शन से मुझे राहत मिली थी.... मेरे भीतर से सदियाँ बोलने लगी थीं। एक पुरानी सभ्यता का वारिस होने के नाते यह मानसिक सुविधा जरूर है कि तुम हर बात, घटना या दुर्घटना का कोई दार्शनिक उत्तर खोज सकते हो। समाधान चाहे न मिले, पर एक अमूर्त दार्शनिक उत्तर जरूर मिल जाता है।

और फिर पुरानी सभ्यताओं की यह खूबी भी है कि उनकी परम्परा से चली आती संतानों को एक आत्मा नाम की अमूर्त शक्ति भी मिल गई है – और सदियों पुरानी सभ्यता मनुष्य के क्षुद्र विकारों का शमन करती रहती है... एक दार्शनिक दृष्टि से जीवन की क्षण–भंगुरता का एहसास कराते हुए सारी विषमताओं को समतल करती रहती है...

मुझे अपने उस मित्र की बातें याद आईं जिसने मुझे संध्या के संगीन ऑपरेशन की बात बताई थी और उसे देख आने की सलाह दी थी। उसी ने मुझे आई०सी०यू० में संध्या के केबिन का पता बताया था – आठवें फ्लोर पर ऑपरेशन थिएटर्स हैं और सातवें पर संध्या का आ०सी०यू०। मेजर ऑपेरशन में संध्या की बड़ी आँत काटकर निकाल दी गई थी और अगले अड़तालीस घण्टे क्रिटिकल थे...

रास्ता इमरजेंसी वार्ड से जाता था। एक बेहद दर्द भरी चीख़ इमरजेंसी वार्ड से आ रही थी... वह दर्द–भरी चीख़ तो दर्द–भरी चीख़ ही थी– कोई घायल मरीज असह्य तकलीफ से चीख़ रहा था। उस चीख़ से आत्मा दहल रही थी... दर्द की चीख़ और दर्द की चीख़ में क्या अन्तर था! दूध, खून और आँसुओं के रंगों की तरह चीख़ की तकलीफ भी तो एक–सी थी। उसमें विषमता कहाँ थी?...

मेरा वह मित्र जिसने मुझे संध्या को देख आने की फर्ज अदायगी के लिए भेजा था, वह भी इलाहाबाद का ही था। वह भी उसी सदियों पुरानी सभ्यता का वारिस था। ठेठ इलाहाबादी मौज में वह भी दार्शनिक की तरह बोला था– अपना क्या है? रिटायर होने के बाद गंगा किनारे एक झोपड़ी डाल लेंगे। आठ–दस ताड़ के पेड़ लगा लेंगे... मछली मारने की एक बंसी...दो चार मछलियाँ तो दोपहर तक हाथ आएँगी ही... रात भर जो ताड़ी टपकेगी उसे फ्रिज में रख लेंगे...

–फ्रिज में?

– और क्या... माडर्न साधु की तरह रहेंगे! मछलियां तलेंगे, खाएँगे और ताड़ी पीएँगे...और क्या चाहिए... पेंशन मिलती रहेगी। और माया–मोह क्यों पालें? पालेंगे तो प्राण अटके रहेंगे... ताड़ी और मछली... बस, आत्मा ताड़ी पीकर, मछली खाके आराम से महाप्रस्थान करे... न कोई दुःख, न कोई कष्ट... लेकिन तुम जाके संध्या को देख जरूर आना. .. वो क्रिटिकल है...

मेरा मित्र अपने भविष्य के बारे में कितना निश्चिन्त था, यह देखकर मुझे अच्छा लगा था।

यह बात सोच–सोचकर मुझे अभी तक अच्छा लग रहा था, सिवा उस चीख़ के जो इमरजेंसी वार्ड से अब तक आ रही थी... और मुझे सता रही थी... इसीलिए लिफ्ट के आने में जो देरी लग रही थी वह मुझे खल रही थी।

आखिर लिफ्ट आयी! सेवन–सात – मैंने कहा और संध्या के बारे में सोचने लगा। दो–तीन वार्ड बॉय तीसरी और चौथी मंजिल पर उतर गए।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी तो कुछ लोग ऊपर जाने के लिए इन्तजार कर रहे थे। इन्हीं लोगों में था वह पाँच साल का बच्चा– अस्पताल की धारीदार बहुत बड़ी–सी कमीज पहने हुए... शायद उसका बाप, वह जरूर ही उसका बाप होगा, उसे गोद में उठाए हुए था... उस बच्चे के पैरों में छोटी–छोटी नीली हवाई चप्पलें थी, जो गोद में होने के कारण उसके छोटे–छोटे पैरों में उलझी हुई थीं।

अपने पैरों से गिरती हुई चप्पलों को धीरे से उलझाते हुए बच्चा बोला– बाबा! चप्पल...।

उसके बाप ने चप्पलें उसके पैरों में ठीक कर दीं। वार्ड बॉय व्हील–चेयर बढ़ाते हुए बोला–– आ जा, इसमें बैठेगा! बच्चा हल्के से हँसा। वार्ड बॉय ने उसे कुर्सी में बैठा दिया... उसे बैठने में कुछ तकलीफ हुई पर वह कुर्सी के हत्थे पर अपने नन्हें–नन्हें हाथ पटकता हुआ भी हँसता रहा। दर्द का अहसास तो उसे भी था पर दर्द के कारण का अहसास उसे बिल्कुल नहीं था। वह कुर्सी में ऐसे बैठा था जैसे सिंहासन पर बैठा हो... कुर्सी बड़ी थी और वह छोटा। वार्ड बॉय ने कुर्सी को पुश किया। वह लिफ्ट में आ गया। उसके साथ ही उसका बाप भी। उसका बाप उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरता रहा।

लिफ्ट सात पर रुकी, पर मैं नहीं निकला। दो–एक लोग निकल गए। लिफ्ट आठ पर रुकी। यहीं ऑपरेशन थिएटर थे। दरवाजा खुला तो एक नर्स जिसके हाथ में सब पर्चे थे, उसे देखते हुए बोली– आ गया तू!

उस बच्चे ने धीरे से मुस्कराते हुए नर्स से जैसे कहा – हाँ ! उसकी आँखें नर्स से शर्मा रही थीं और उनमें बचपन की बड़ी मासूम दूधिया चमक थी। व्हील–चेयर एक झटके के साथ लिफ्ट से बाहर गई नर्स ने उसका कंधा हल्के से थपका...।

'बाबा ! चप्पल– वह तभी बोला–– 'मेरी चप्पल'...

उसकी एक चप्पल लिफ्ट के पास गिर गई थी उसके बाप ने वह चप्पल भी उसे पहना दी। उसने दोनों पैरों की उँगलियों को सिकोड़ा और अपनी चप्पलें पैरों में कस लीं।

लिफ्ट बंद हुई और नीचे उतर गई।

वार्ड बॉय बच्चे की कुर्सी को पुश करता हुआ ऑपरेशन थिएटर वाले बरामदे में मुड़ गया। नर्स उसके साथ ही चली गई। उसका बाप धीरे–धीरे उन्हीं के पीछे चला गया।

तब मुझे याद आया कि मुझे तो सातवीं मंजिल पर जाना था। संध्या वहीं थी। मैं सीढ़ियों से एक मंजिल उतर आया। संध्या के डॉक्टर पति ने मुझे पहचाना और आगे बढ़कर मुझसे हाथ मिलाया। हाथ की पकड़ में मायूसी और लाचारी थी। कुछ पल खामोशी रही। फिर मैंने कहा – मैं कल ही वापस आया तभी पता चला। यह एकाएक कैसे हो गया?

– नहीं, एकाएक नहीं, ब्लीडिंग तो पहले भी हुई थी, पर तब कंट्रोल कर ली गई थी। पंद्रह दिनों बाद फिर होने लगी। एक्सेसिव ब्लीडिंग। ...चार घण्टे ऑपरेशन में लगे... एण्ड यू नो, वी डॉक्टर्स आर वर्स्ट पेशेंट्स ! वो संध्या के बारे में भी कह रहे थे। संध्या भी डॉक्टर थी।

– यस ! आप तो सब समझ रहे होंगे। संध्या को भी एक–एक बात का अंदाज हो रहा होगा ! मैंने कहा।

– लेकिन वो बहुत करेजसली बिहेव कर रही है ! संध्या के डॉक्टर पति ने कहा – बोल तो सकती नहीं... पल्स भी गर्दन के पास मिली... आर्टीफिशियल रेस्पटेशन पर है... एक तरह से देखिए तो उसका सारा शरीर आराम कर रहा है और सब कुछ आर्टीफिशिल मदद से ही चल रहा है। संध्या के डाक्टर पति ज्यादातर बातें मुझे मेडिकल टर्म्स में ही बताते रहे और मैं उन्हें समझने की कोशिश करता रहा।

बीच–बीच में मैं इधर–उधर की बातें भी करता रहा।

– संध्या का भाई भी आज सुबह पहुँच गया... किसी तरह उसे जापान होते हुए टिकट मिल गया ! उन्होंने बताया।

– यह बहुत अच्छा हुआ। मैंने कहा।

– आप देखना चाहेंगे?

– हाँ, अगर पॉसिबिल हो तो...।

–आइए, देख तो सकते हैं। भीतर जाने की इजाजत नहीं है। वैसे तो सब डॉक्टर फ्रेंड्स ही हैं, पर...।

–नहीं–नहीं, वो ठीक भी है...।

–वो बोल भी नहीं सकती... वैसे आज कांशस है... कुछ कहना होता है तो लिख के बता देती है। उन्होंने कहा और एक केबिन के सामने पहुँचकर इशारा किया।

मैंने शीशे की दीवार से संध्या को देखा। वह पहचान में ही नहीं आई। दो डॉक्टर और नर्स उसे अटैण्ड भी कर रहे थे... और फिर इतनी नलियाँ और मशीनें थीं कि उनके बीच संध्या को पहचानना मुश्किल भी था।

संध्या होश में थी। डॉक्टर को देख रही थी। डॉक्टर उसका एक हाथ सहलाते हुए उसे कुछ बता रहा था। मैंने संध्या को इस हाल में देखा तो मन उदास हो गया। वह कितनी लाचार थी। बीमारी और समय के सामने आदमी लाचार होता है... कुछ कर नहीं पाता। मैंने मन ही मन संध्या के लिए प्रार्थना की, किससे की यह नहीं मालूम –ऐसी जगहों पर आकर भगवान पर ध्यान जाता भी है और किसी के शुभ के लिए उसके अस्तित्व को स्वीकार कर लेने में अपना कुछ नहीं जाता – सिवा प्रार्थना के कुछ शब्दों के।

हम आई०सी०यू० से हटकर फिर बरामदे में आ गए। वहाँ बैठने के लिए कोई जगह नहीं थी। बरामदे बैठने के लिए बनाए भी नहीं गए थे। संध्या या डॉक्टर की बहन नीचे चादर बिछाए बैठी थी डॉक्टर के कुछ दोस्त एक गुच्छे में खड़े थे।

– अभी तो, बाद में, एक ऑपरेशन और होगा। संध्या के डॉक्टर पति ने बताया – तब छोटी आँत को सिस्टम से जोड़ा जाएगा। खैर, पहले वो स्टेबलाइज करे, फिर रिकवरी का सवाल है... इसमें ही करीब तीन महीने लग जाएँगे... उसके बाद मैं सोचता हूँ – उसे अमेरिका ले जाऊँगा !

– यह ठीक रहेगा !

इसके बाद हम फिर इधर–उधर की बातें करते रहे। मैं संध्या की संगीन हालत से उनका ध्यान भी हटाना चाहता था। इसके सिवा मैं और कर भी क्या सकता था। और डॉक्टर के सामने यों खामोश खड़े रहना अच्छा भी नहीं लग रहा था।

यह जताते हुए कि अस्पताल वालों से छुपाकर मैं सिगरेट पीना चाहता हूँ – मैं खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। बाहर लू चल रही थी। नीचे धरातल पर कुछ लोग आ–जा रहे थे। वे ऊपर से बहुत लाचार और बेचारे लग रहे थे और मेरे मन से सबके शुभ के लिए सद्भावना की नदियाँ फूट रही थीं... ऐसे में तुम सोचो –लगता है मनुष्य ने मनुष्य के साथ तो सघन और उदात्त सम्बन्ध बना लिए हैं, पर ईश्वर के साथ वह ऐसा नहीं कर पाया है। मनुष्य अपने ईश्वर के दुःख–सुख में शामिल नहीं हो सकता। ईश्वर से उसका सम्बन्ध सिर्फ दाता और पाता का है। वह देता है और मनुष्य पाता है। कितना इकतरफा रिश्ता है यह... और फिर अगर तुम यह भी मान लो कि ईश्वर ही मनुष्य को बनाता है तो ईश्वर की क्षमता पर विश्वास घटने लगता है – सृष्टि के आदि से वह मनुष्य को बनाता आ रहा है परंतु असंख्य प्राणियों को बनाने के बावजूद वह आज तक एक सहज सम्पूर्ण और मुकम्मिल मनुष्य नहीं बना पाया। कुछ कमी कहीं तो ईश्वर की व्यवस्था में भी है.. हो सकता है उनका आदि –कलाकार कुम्भकार उन्हें मिट्टी सप्लाई करने में कुछ घपला कर रहा हो। ...इस रहस्य का पता कौन लगाएगा? रहस्य ही रहस्य को जन्म देता है। शायद इसीलिए मनुष्य ने ईश्वर को रहस्य ही रहने दिया... जो सत्ता या शक्ति विश्वास के निकष पर खरी न उतरे, उसे रहस्य बना देना ही बेहतर है... और किया भी क्या जा सकता है...।

लू के एक थपेड़े ने मेरा मुँह झुलसा दिया। डॉक्टर अपने चिन्ताग्रस्त शुभचिन्तकों के गुच्छे में खड़े थे – और सबके चेहरे कुछ ज्यादा सतर्क थे।

ब्लडप्रेशर गिर रहा है...

आई०सी०यू० में डॉक्टरों और नर्सों की आमदरफ्त से लग रहा था कि कोई कठिन परिस्थिति सामने है। कुछ देर बाद पता चला कि नीडिल कुछ ढीली हो गई थी...उसे ठीक कर दिया गया है और ब्लडप्रेशर ठीक से रिकॉर्ड हो रहा है...सबने राहत की साँस ली। मौत से लड़ना कोई मामूली काम नहीं है। ईश्वर ने तो मौत पैदा की ही है, पर मौत तो मनुष्य भी पैदा करता है। एक तरफ जीवन के लिए लड़ता

है और दूसरी तरफ मौत भी बांटता है – यह द्वंद्व ही तो जीवन है... यह द्वंद्व और द्वैत ही जीवित रहने की शर्त है और अद्वैत या समानता तक पहुँचने का साधन और आदर्श भी। आध्यात्मिक अद्वैत जब भौतिकता की सतह पर आता है और मनुष्य के प्रश्न सुलझाता है तभी तो वह समवेत समानता का दर्शन कहलाता है...।

सिगरेट से मुँह कड़वा हो गया था। लू वैसे ही थपेड़े मार रही थी। सीमेण्ट के पलस्तर का दहकता–चिलचिलाता तालाब सामने फैला था – कोई एक आदमी जलते नंगे पैरों से उसे पार कर रहा था।

मैंने पलटते हुए लिफ्ट की तरफ देखा। डॉक्टर मेरा आशय समझ गए थे, लेकिन तभी राजनीतिज्ञ–से उनके कोई दोस्त आ गए थे। शुरु की पूछताछ के बाद वे लगभग भाषण–सा देने लगे – अब तो अग्नि मिसाइल के बाद भारत दुनिया का सबसे शक्तिशाली तीसरा देश हो गया है और आने वाले दस वर्षों में हमें अब कोई शक्ति महाशक्ति बनने से नहीं रोक सकती। इंग्लैंड और फ्रांस की पूरी जनसंख्या से ज्यादा बड़ा है आज भारत का मध्यवर्ग... अपनी संपन्नता में... भारतीय मध्यवर्ग जैसी शक्ति और संपन्नता उन देशों के मध्यवर्ग के पास भी नहीं है...।

तभी एक चिन्ताग्रस्त नर्स तेजी से गुजर गई और सन्नाटा छा गया। चिन्ता के भारी क्षण जब कुछ हल्के हुए तो मैंने फिर लिफ्ट की तरफ देखा। डॉक्टर साहब समझ गए – आपको ढाई –तीन घण्टे हो गए...क्या–क्या काम छोड़ के आए होंगे...। और वे लिफ्ट की ओर बढ़े। लिफ्ट आई, पर वह ऊपर जा रही थी। डॉक्टर साहब को मेरी खातिर रुकना न पड़े, इसलिए मैं लिफ्ट में घुस गया।

लिफ्ट आठ पर पहुँची। वहाँ ज्यादा लोग नहीं थे। पर एक स्ट्रेचर था और दो–तीन लोग। स्ट्रेचर भीतर आया उसी के साथ लोग भी। स्ट्रेचर पर चादर में लिपटा बच्चा पड़ा हुआ था। वह बेहोश था। वह आपरेशन के बाद लौट रहा था। उसके गालों और गर्दन के रेशमी रोएँ पसीने से भीगे हुए थे। माथे पर बाल भी पसीने के कारण चिपके हुए थे।

उसका बाप एक हाथ में ग्लूकोज की बोतल पकड़े हुए था... ग्लूकोज की नली की सुई उसकी थकी और दूधभरी बाँह की धमनी में लगी हुई थी... उसका बाप लगातार उसे देख रहा था... वह शायद पसीने से माथे पर चिपके उसके बालों को हटाना चाहता था, इसलिए उसने दूसरा हाथ ऊपर किया, पर उस हाथ में बच्चे की चप्पलें उसकी उंगलियों में उलझी हुई थीं... वह छोटी–छोटी नीली हवाई चप्पलें....।

मैंने बच्चे को देखा। फिर उसके निरीह बाप को।

मेरे मुँह से अनायास निकल ही गया – इसका...

– इसकी टाँग काटी गई है – वार्ड बॉय ने बाप की मुश्किल हल कर दी।

– ओह ! कुछ हो गया था? मैंने जैसे उसके बाप से ही पूछा। वह मुझे देखकर चुप रह गया... उसके ओंठ कुछ बुदबुदाकर थम गए... लेकिन वह भी चुप नहीं रह सका। एक पल बाद ही बोला – जांघ की हड्डी टूट गई थी...।

– चोट लगी थी ?

– नहीं, सड़क पार कर रहा था... एक गाड़ी ने मार दिया– वह बोला और मेरी तरफ ऐसे देखा, जैसे टक्कर मारने वाली गाड़ी मेरी ही थी।

फिर वह वीतराग होकर अपने बेटे को देखने लगा।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी। बच्चों का वार्ड इसी मंजिल पर था। लिफ्ट में आने वाले कई लोग थे। वे सब स्ट्रैचर निकाले जाने के इन्तजार में बेसब्री से रुके हुए थे... वार्ड बॉय ने झटका देकर स्ट्रेचर निकाला तो बच्चा बोरे की तरह हिल उठा, अनायास ही मेरे मुंह से निकल गया– धीरे से...।

– ये तो बेहोश है इसे क्या पता? स्ट्रेचर को बाहर पुश करते हुए वार्ड बॉय ने कहा।

उस बच्चे का बाप खुले दरवाजे से टकराता हुआ बाहर निकला तो एक नर्स ने उसके हाथ की ग्लूकोज की बोतल पकड़ ली।

लिफ्ट के बाहर पहुँचते ही उसके बाप ने उसकी दोनों नीली हवाई चप्पलें वहीं कोने में फेंक दीं... फिर कुछ सोचकर कि शायद उसका बेटा होश में आते ही चप्पलें माँगेगा, उसने पहले एक चप्पल उठाई... फिर दूसरी भी उठा ली और स्ट्रेचर के पीछे–पीछे वार्ड की तरफ जाने लगा।

मुझे नहीं मालूम कि उसका बेटा जब होश में आएगा तो क्या माँगेगा, चप्पल माँगेगा या चप्पलों को देखकर अपना पैर माँगेगा...।

बेसब्री से इन्तजार करते लोग लिफ्ट में आ गए थे। लिफ्टमैन ने बटन दबाया। दरवाजा बन्द हुआ और वह लोहे का बन्द कमरा नीचे उतरने लगा।

केन्द्रीय भंडारण निगम ने

केन्द्रीय भंडारण निगम ने दिनांक 02.03.2020 को 64वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर माननीय उपभोक्ता मामले, श्री एस. चार्ल्स, निदेशक (वित्त), श्री आर.के. सिन्हा, निदेशक (कार्मिक) भी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि ने निगम की उपलब्धियों अतिथि ने क्षेत्रीय कार्यालयों को उत्कृष्ट कार्य–निष्पादन पुरस्कार, राजभाषा पुरस्कार तथा खेल पुरस्कार वितरित किए। श्री अरुण साथ–साथ निगम द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों के बारे में भी बताया। कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित

स्थापना दिवस मनाया

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री राम विलास पासवान जी, मुख्य अतिथि तथा श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक, की सराहना करते हुए यह इच्छा व्यक्त की है कि यह निगम भविष्य में भी और सफलताएं हासिल करेगा। इस अवसर पर मुख्य कुमार श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक ने इस अवसर पर निगम की भावी योजनाओं एवं विविधिकरण के बारे में जानकारी देने के किया गया जिसमें प्रसिद्ध गायक श्री उदित नारायण जी ने सभी को अपने गीतों से आनंदित किया।

राजभाषा के प्रयोग में सरलता और व्यावहारिकता

राकेश कुमार*

संविधान के अनुच्छेद 351 में दिए गए प्रावधानों के अनुसार– "संघ सरकार का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना, हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट, भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए तथा जहां आवश्यक और वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।"

राजभाषा विभाग के 17 मार्च, 1976 के कार्यालय ज्ञापन के अनुसार, नोट या पत्र लिखते समय सरल हिन्दी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि सभी उसे आसानी से समझ सकें। सरकारी कामकाज में प्रचलित शब्दों का अधिक से अधिक ही प्रयोग होना चाहिए और लिखते समय दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

जहां कहीं भी ऐसा लगे कि पढ़ने वाले को हिंदी में लिखे किसी तकनीकी शब्द या पदनाम को समझने में कठिनाई हो सकती है, वहाँ उस शब्द के पदनाम के सामने कोष्ठक में अंग्रेजी रूपांतर भी लिख देना उपयोगी होगा।

केंद्रीय सरकार की शुरू से ही यह नीति रही है कि सरकारी कामकाज में सरल और सुबोध हिंदी का प्रयोग किया जाए। अंग्रेजी या दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों के कठिन हिंदी पर्याय इस्तेमाल करने की बजाय उन शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में आयोजित केंद्रीय हिंदी समिति की बैठकों में भी कुछ सदस्यों ने यह विचार व्यक्त किया कि हिन्दी में किए गए अनुवाद में भी सरल, सुबोध और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

*संयुक्त निदेशक (राजभाषा), गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

संविधान के अनुच्छेद 351 में किए गए प्रावधानों के अनुसार, राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार का दायित्व केंद्र सरकार का होने के नाते यह जरूरी है कि सरकार इसे सम्पूर्ण भारत की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाए। इसी परिप्रेक्ष्य में, यह आवश्यक है कि प्रादेशिक भाषाओं में प्रचलित शब्दों को महत्व देते हुए, कार्यालयीन हिन्दी में इनका प्रयोग बढ़ाया जाए। इससे निश्चित रूप से भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों को सम्मिलित किया जा सकेगा। भाषा का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि सरकारी कार्यालयों में कार्यरत सभी कार्मिकों को यह महसूस हो कि सरकारी भाषा में प्रत्येक प्रांत और प्रत्येक भाषा–भाषी के शब्दों को शामिल किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित ज्ञान–विज्ञान, संचार, सूचना प्रौद्योगिकी, वाणिज्य और विपणन आदि क्षेत्रों के शब्दों को यथासंभव उसी रूप में अपनाया जाना चाहिए, परंतु उन क्षेत्रों के पहले से ही स्थापित हिन्दी शब्दों को अंग्रेजी के शब्दों से प्रतिस्थापित नहीं किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को भी हिन्दी भाषा में प्रचुरता से शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही, अंग्रेजी के शब्दों का हिन्दी पर्याय ढूँढने की बजाय, उन्हे ज्यों का त्यों रखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए Lift, Computer, Police Station, Rail, Metro, Ticket, Airport, Internet, Website, Key-Board, E-Mail, Pendrive, Blog, Station, Cycle, Car, Bus, Truck, Scooter, Folder, Software, Virus, Desktop आदि शब्दों का अनुवाद न करना ही बेहतर होगा। "रेलगाड़ी," "टाई" और "साइकिल" जैसे शब्दों की हिन्दी ढूँढना, उसका शाब्दिक अनुवाद करना, और फिर अपनी ही भाषा का स्वयं मजाक उड़ाना कहाँ तक उचित है?

इसी प्रकार 'Police' शब्द के लिए बिहार तथा झारखंड जैसे राज्यों में 'आरक्षी' शब्द का प्रयोग होता है जबकि अधिकांश राज्यों में 'पुलिस' शब्द का ही प्रयोग होता है।

इस प्रकार की प्रवृत्ति से बचा जाना चाहिए। सशस्त्र पुलिस बलों में Commandant के लिए 'सेनानायक' और 'समादेष्टा' दोनों ही शब्दों का प्रयोग होता है जो निश्चित ही भाषा मे दुरूहता पैदा करता है। इसी तरह Entry शब्द के लिए 'प्रविष्टि', 'इंदराज' तथा 'अंकित करना' – शब्दों का प्रयोग चल रहा है जो भ्रामक स्थिति पैदा करता है।

सरकारी भाषा में प्रचलित और आसान शब्दों का ही प्रयोग किया जाना व्यावहारिकता है। विधिक अथवा तकनीकी होने के नाम पर क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से बचा जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए 'Miscellaneous' शब्द के लिए प्रचलित पर्याय 'विविध' शब्द है जबकि विधि विभाग द्वारा इसके लिए 'प्रकीर्ण' शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऐसे प्रयोगों से भाषा दुरूह और नीरस हो जाती है। राजस्थान में 'Bus depot' के लिए 'आगार' शब्द का प्रयोग किया जाता है जबकि अधिकांश राज्यों में 'डिपो' शब्द का प्रयोग होता है। इसी प्रकार मराठी में शिक्षा का अर्थ 'दंड' होता है जबकि अन्य भाषाओं में यह "Education" अथवा "पढ़ाई" का पर्याय है।

इसी प्रकार अंग्रेजी शब्द – 'Circle' के लिए राजस्थान में 'वृत,' मध्य प्रदेश में 'आवृत,' उत्तर प्रदेश में 'क्षेत्र' तथा कई राज्यों में 'परिधि' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। इस तरह की विविधता से भाषा में एकरूपता नहीं आ सकती तथा इसके प्रयोग से दुविधा उत्पन्न होती है। इसी प्रकार, कार्यालयों के संदर्भ में circle के लिए मण्डल, परिमंडल, क्षेत्र, मंडलीय आदि शब्दों का प्रयोग होता है जो व्यावहारिकता की दृष्टि से कदापि उचित नहीं है। Zonal शब्द के लिए 'आंचलिक' और 'क्षेत्रीय' दोनों शब्द चल रहे है जो उचित नहीं है।

"कौन बनेगा करोड़पति" जैसे लोकप्रिय कार्यक्रम में अक्सर अंग्रेजी में– "I will go with A" का अनुवाद आपने सुना होगा कि– मैं ए के साथ जाना चाहूँगा, जो शब्दानुवाद है तथा गलत अनुवाद है। इसका अनुवाद होना चाहिए –"मेरा उत्तर A होगा या 'मेरा विकल्प A है"। हमें इस तरह के शाब्दिक अनुवाद से सदैव बचना चाहिए।

अंग्रेजी के – I met with an accident का अनुवाद– 'मैं दुर्घटना से मिला' नहीं होगा बल्कि 'मैं दुर्घटनाग्रस्त हो गया' होना चाहिए क्योंकि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं की प्रकृति अलग–अलग होती है और अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार ही होना चाहिए। इसी प्रकार "Green Delhi" का अनुवाद "हरी दिल्ली" नहीं होगा बल्कि "हरित दिल्ली" होगा। National Green Tribunal का अनुवाद "राष्ट्रीय हरा अधिकरण" नहीं होगा बल्कि "राष्ट्रीय हरित अधिकरण" होगा। Provided के हिन्दी अनुवाद के लिए "बशर्ते कि" के स्थान पर केवल "बशर्ते" ही लिखना पर्याप्त होता है।

ठीक इसी तरह "सज्जन पुरुष" के स्थान पर केवल "सज्जन" लिखना ही काफी है। "बैठक आहूत की गई" की जगह "बैठक आयोजित की गई" अधिक आसान और सुविधाजनक होता है। ऐसे ही "फूल खिलना" अशुद्ध प्रयोग है जबकि "कली खिलना" सही प्रयोग होता है क्योंकि कली खिलती है, फूल नहीं।

जहाँ तक भाषा के शुद्ध प्रयोग का प्रश्न है, हमें बोलचाल की भाषा के अशुद्ध शब्दों से बचना चाहिए। हिन्दी में– उसको, मुझको, तुझको, उनको, तुमको जैसे अशुद्ध रूपों की बजाय क्रमशः उसे, मुझे, तुझे उन्हें, तुम्हें, जैसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

किसी भी प्रयोग की जा रही भाषा में अन्य अनेक भाषाओं के शब्द अनायास ही आ जाते हैं और ऐसे शब्दों को उसके मूल रूप में ही लेना उचित होता है। उदाहरण के लिए– ज़रा, ज़लील, कालीन, ज़रूरी, ज़मीन, दरख़्त, अज़ीज, राज, शफाखाना, अर्जी, ख़िलाफ, बाजार, कागज, फन ख़ैयाम, गरीब, गालिब, गाजियाबाद जैसे लफ्ज़ों को ज्यों का त्यों रखा जाना ही उचित है। अगर इन शब्दों से नुक्ते को हटा दिया जाये तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा और यह एक प्रकार से शब्द की हत्या करने जैसा ही हो जाएगा।

अंग्रेजी भाषा ने हमसे– करी, गुरु, ठग, कर्मा, निर्वाण, चटनी, वेरान्डा आदि शब्दों को लेकर अपनी भाषा में शामिल

किया है। "मानसून" शब्द ना तो अंग्रेजी का है और न ही हिन्दी का। यह शब्द तो अरबी भाषा का है जो हिन्दी, अंग्रेजी तथा कई अन्य भाषाओं में धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। MALARIA शब्द– Mala और Area से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है– "गंदी हवा"। यह शब्द आज भी हिन्दी और अंग्रेजी सहित कई भाषाओं में धड़ल्ले से चल रहा है।

आज का जमाना इंटरनेट, मोबाइल, फेसबुक, ट्वीटर और ब्लॉग लिखने का जमाना है। कम्प्यूटर और मोबाइल के प्रयोग ने भाषा के क्षेत्र में बहुत अच्छा काम किया है। परेशानी की बात यह है कि हमने कई शब्दों का बहुत शाब्दिक अनुवाद किया है जो मूल भाव से बहुत अलग है। इंटरनेट के लिए हमने हिन्दी में, 'अंतरजाल' और कम्प्यूटर के लिए 'संगणक' शब्द बनाए हैं किन्तु ये शब्द उस भाव को पूरा अर्थ नहीं देते हैं। ऐसे शब्दों का अनुवाद करने की आवश्यकता भी नहीं है।

वर्तमान में माउस, डिस्क, साइबर कैफे, हार्डवेयर, ई–मेल, वायरस, इंटरफेस, स्पेसबार, की–बोर्ड, सर्वर, लैपटॉप जैसे न जाने कितने शब्द हमारे प्रयोग में आ गए हैं। हिन्दी ने आज तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी तथा अनेक भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं और इसी कारण यह और समृद्ध हो गई है। हिन्दी में आज तमिल, तेलुगू, मलयालम, मराठी, गुजराती, उड़ीया, बांग्ला, गुरमुखी आदि के अनेक शब्दों का प्रयोग हो रहा और सही मायनों में यह आज भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

निष्कर्ष यह निकलता है कि हिन्दी एक जीवंत भाषा है और बंदिशे लगाकर इसे मृत भाषा नहीं बनाया जा सकता है। हिन्दी ने पहले से ही अपने समस्त द्वार खोले हुए हैं। यही कारण है कि इसने हर भाषा के शब्दों को अपनाया है और इतनी आत्मीयता से अपनाया है कि हिन्दी में आकर अन्य भाषाओं के शब्द भी हिन्दी के हो गए हैं। भाषा किसी भी पूर्वाग्रह को नहीं मानती और न ही बंधनों को स्वीकार करती है। विश्व प्रचलित अंग्रेजी भाषा, जिसका अपना शब्द भंडार बहुत सीमित है, ने भी तो लेटिन, फ्रेंच, अरबी, पुर्तगाली, स्पेनिश, संस्कृत जैसी भाषाओं से शब्दों को लेकर अपनाया है। फिर, हिन्दी तो इससे कहीं अधिक समृद्ध लोकप्रिय, व्यापक और वैज्ञानिक भाषा है।

तो आइए! हिन्दी को इसके इसी सरल, सहज और व्यावहारिक रूप में अपनाएं।

महंगा नाश्ता

एक बहुत बड़े मुल्क का सुलतान कहीं दूर की यात्रा पर एक गांव से गुजरा। रास्ते में वह एक बहुत मामूली चायघर में नाश्ता करने के लिए रुक गया। उसने खाने में आमलेट की फरमाइश की। चायघर के मालिक ने बहुत सलीके से उसे चायघर के मामूली बर्तनों में आमलेट परोसा।

चायवाले ने टूटे–फूटे टेबल–कुर्सी और मैले बिछावन के लिए सुलतान से माफी मांगी और कहा, 'मुझे बेहद अफसोस है हुजूर–ए–आला कि यह मामूली चायघर आपकी इससे बेहतर खातिरदारी नहीं कर सकता। 'कोई बात नहीं।' सुलतान ने उसे दिलासा दिया और पूछा,

'आमलेट के कितने पैसे हुए?'

'आपके लिए सुलतान इसकी कीमत है सिर्फ सोने की हजार अशर्फियां।' चायवाले ने कहा। 'क्या?' सुलतान को हैरत हुई। 'क्या यहां अंडे इतने महंगे मिलते हैं? या फिर यहां अंडे मिलते ही नहीं हैं?'

'नहीं हुजूर–ए–आला, अंडे तो यहां खूब मिलते हैं, लेकिन आप जैसे सुलतान कभी नहीं मिलते।' चायवाले ने कहा।

भारतीय संस्कृति एवं अहिंसा

सच्चिदानंद राय*

दुनिया में कहीं वसुधैव कुटुंबकम की सोच रखने वाला देश है तो वह भारत है। भारतीय संस्कृति अहिंसा पर आधारित है। भ्रातृत्व इसमें कूट–कूट कर भरा है। साथ ही निर्भीकता तो राजा भरत जैसी, जिन्होंने शकुंतला की कोख से जन्म लेकर शेरनी का दुग्धपान कर वन्य प्राणियों से एकात्मत्व की भूमिका स्थापित की जो यह दिखाता है कि सभी में प्राणी मात्र का बोध है और हर प्राणी में ईश्वर की मौजूदगी का बोध होता है। यह भारतीय संस्कृति का परिणाम है।

सत्य, अहिंसा, अस्तेय आदि मौलिक मानवीय गुणों से संपन्न प्राचीन भारत शिक्षा से परिपूर्ण था। संस्कृत ही भाषा थी विचार–विनिमय की। गणित, विज्ञान, भूगोल समस्त विषयों की शिक्षा संस्कृत में ही होती थी। नालंदा विश्वविद्यालय दुनिया में अपनी ख्याति के लिए विख्यात था। वह समय ईसा से 6 सौ साल पहले का था। किसी दूसरी सभ्यता का इतिहास इतना पुराना नहीं है। लोग इतने प्रकांड विद्वान होते थे कि उनकी विद्वत्ता को पहचानना आम लोगों के लिए मुश्किल होता था। नम्रता, सादगी, आपसी भाई–चारा, संवेदनशीलता के गुण अपने आप परिलक्षित होते रहते थे। ईमानदारी तो सर्वत्र थी। बिना मेहनत कोई कुछ लेना हराम समझता था। भारत भूमि का अपना महत्व था, है और रहेगा। तथापि, बाहरी आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण कर इसकी सभ्यता को नष्ट करना चाहा था, लेकिन दृढ़ इरादे, पक्का निश्चय, सत्यव्रती संकल्प संस्कृति का बाल तक बांका नहीं कर पाए।

ईशावासिमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्याम जगत।
तेन त्यक्तेन भुज्जीथा मा गृधः कस्य स्वीद्र धनं।।

पूरे संसार में ईश्वर ज़र्रे–ज़र्रे में समाया हुआ है। अब जब ईश्वर की बात होती है तो एक अजीबोगरीब स्थिति मन में बनने लगती है और मनुष्य वहीं से मुँह मोड़ लेता है एवं अनभिज्ञ की भाँति अपनी मनमानी करने से मानता नहीं है। यही समाज की समरसता को खराब कर उसमें असंतोष एवं असमानता को बरकरार रखने में सफल होता दिखता है। हर मनुष्य समान है जीवन जीने के मामले में। यही नहीं भारतीय संस्कृति में धरती की संपदा अनंत है और यहाँ निवास करने वाले सभी प्राणियों के पालन–पोषण हेतु प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। पर स्वार्थ की घनिष्ठता से ओत–प्रोत मनुष्य अपनी उदार प्रवृत्ति को दबाता चला गया है। संसार में आज मनुष्य के सिवा अन्य प्राणियों की तो गणना नहीं के बराबर हो गयी है। भारतीय संस्कृति की विशेषता को अन्य मुल्क नकार नहीं सकते क्योंकि वसुधैव कुटुंबकम सिर्फ भारत की देन है।

भारतीय परंपरा में वैदिक धर्म का समावेश मिलता है, सम्प्रदाय नहीं। सम्प्रदाय एक संकीर्ण मानसिकता की देन है, जबकि ईश्वर सर्व व्यापक सत्ता है। इसको संकुचित कर नहीं देखा जा सकता। जब वसुधैव कुटुंबकम की बात आती है तो सिर्फ एक देश की जनता की बात नहीं होती है। वहाँ तो पूरे विश्व का संदर्भ लिया जाता है। जनता में भेद–भावना का तो प्रश्न ही नहीं उठता और यही विचार भारत की अलग पहचान कराने की नींव है। इस विचारधारा पर बना सौहार्दपूर्ण वातावरण समस्त विश्व को आकृष्ट कर लेता है।

मानव मूल्यों पर आधारित संस्कृति विश्व में विशेष स्थान रखती है। देश गुलामी यानी बाहरी आक्रमणकारियों जैसे मुगलों, अंग्रेजों के चँगुल से मुक्त तो हुआ पर देश में एक निष्पक्ष समानता नहीं दिख पा रही है। मिथ्या अहम् एवं भोग विलासिता की चाह ने मनुष्य को

*अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

मनुष्य का दुश्मन बना दिया है। कहाँ तो जब संत तुकाराम के घर से एक कुत्ता रोटी लेकर भागा तो उसमें भी भगवान को निहारने वाले संत श्री तुकाराम जी पीछे–पीछे घी की कटोरी लेकर दौड़े और कहते गए भगवन रोटी में घी तो लगा लेने दीजिए। एक ओर ईश्वर का सर्वत्र दर्शन और दूसरी ओर, पाश्चात्य संस्कृति में मनुष्यों को भी पूरा का पूरा महत्व न मिलना, भारतीय संस्कृति की समृद्धि को इंगित करता है। पलड़ा भारतीय संस्कृति का भारी है। इस प्रकार भारतीय दर्शन व आध्यात्म, इसकी समृद्ध संस्कृति पर आधारित है, न कि आधुनिक बनावटी भौतिकवाद पर।

जब बात होती है विकास की तो पाश्चात्य जगत जहन में आता है कि जरूर कोई विकसित देश, जहाँ आर्थिक समृद्धि हो, नजर आने लगता है पर भारत या ये जो अजनाभ खंड या भारतीय महाद्वीप की बात होती है तो स्वर्ण युग की याद दिलाती है।

भारत अनादि काल से समृद्ध देश रहा है और यही यहाँ के भूमिपुत्रों व पुत्रियों में संतुष्ट, संपुष्ट वृत्ति को विकसित करने का कारण है। यहाँ मानव–मूल्यों का महत्त्व सर्वोपरि रहा है। प्रेम का भाव इतना समृद्ध कि गोस्वामी तुलसीदास जी तो संपूर्ण विश्व को सियाराममय देखने लगे थे। यह शुद्ध, पवित्र मन की झलक दर्शाता है। भौतिकवाद में भौतिक जगत के पदार्थों की शुद्धता पर जोर रहता है, जबकि अध्यात्म में मनुष्य अपनी चेतना शक्ति के प्रभाव से आंतरिक वृतियों के साथ–साथ बाह्य भौतिक पदार्थो को भी शुद्ध व पवित्र रखने में सफल रहा है। भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम का विचार इसी समानता भरे दर्शन पर आधारित है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि जो भारतीय योग दर्शन के अंग हैं, ये मनुष्य के होने के कारणों पर आधारित हैं जिससे जीवन सफल होता है।

आओ हम सब मिलकर डिजिटल निगम बनायें

कविता

एस. के. दुबे*

आओ हम सब मिलकर डिजिटल निगम बनायें
डिजिटल इंडिया के, सपनों को साकार बनायें।

कागज़ अगर बचे तो, वृक्ष भी बच जाए
लेख भी हो सुन्दर, सबकी समझ में आये।
हाथ की लिखावट के, समय को बचाये
एक ही बटन से, मनचाहा प्रिंट पाए।

पर्यावरण सुरक्षित कर, सुन्दर परिवेश बनाये
आओ हम सब मिलकर, डिजिटल निगम बनायें।

डीओएस, डब्ल्यूएमएस में, अब काम करें ज्यादा
ई–मेल, मैसेज, व्हाटसएप का, उपयोग करें ज्यादा
लागत भी कम लगेगी, आवक भी रहे ज्यादा
अपने निगम को होगा, डिजिटल से लाभ ज्यादा।

डिजिटल में कार्य करके, निगम लाभ को बढ़ाएं
आओ हम सब मिलकर डिजिटल निगम बनायें।

आकडों का विश्लेषण कर, निष्कर्ष शीघ्र लाते
नेट कनेक्शन से, सब सूचना पहुंचाते
कम स्टाफ में भी, सभी का काम चलाते
पारदर्शक कार्यशैली और जागरूकता लाते।

विश्वास को बढ़ाकर, निगम की साख को बढ़ाएं
आओ हम सब मिलकर डिजिटल निगम बनायें।

सभी प्रविष्टि, पर्यवेक्षण, ऑडिट, निरीक्षण सरल बने।
अभिलेख, लेख उत्कृष्ट बने, भुगतान प्रक्रिया सरल बने
नेट बैंकिंग, आरटीजीएस, निफ्ट, ई–ट्रान्सफर तरल बने
केंद्रो से लेकर मुख्यालय तक, हर सूचनाएं सरल बने।

मिनी रत्न निगम को, नवरत्न तक पहुचायें
आओ हम सब मिलकर डिजिटल निगम बनायें
डिजिटल इंडिया के, सपनों को साकार बनायें।

*अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

निगम के अधीनस्थ वेअरहाउस-एक परिचय

केंद्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद अक्तूबर, 1966 में अस्तित्व में आया था। इस क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्य शामिल हैं। इन दोनों राज्यों में केंद्रीय भंडारण निगम के वेअरहाउसों का विशाल नेटवर्क फैला हुआ है। भंडारण भारती के इस अंक में हम आंध्र प्रदेश में स्थित सैन्ट्रल वेअरहाउस, दुग्गीराला एवं तेलंगाना राज्य में स्थित सैन्ट्रल वेअरहाउस, आदिलाबाद तथा गुजरात में स्थित सैन्ट्रल वेअरहाउस, बड़ौदा–। का परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-आदिलाबाद

सैन्ट्रल वेअरहाउस, आदिलाबाद में रामपुर मार्ग पिन कोड–504001 पर स्थित है। यह वेअरहाउस आदिलाबाद शहर/नगर पालिका के नजदीक है। जिला आदिलाबाद हैदराबाद–नागपुर राष्ट्रीय राजमार्ग, 44 पर स्थित है।

» आदिलाबाद जिले की मुख्य विशेषताएं:

आदिलाबाद जिले में उत्कृष्ट बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हैं और यह जिला सड़क मार्ग और रेल मार्ग द्वारा व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है। आदिलाबाद जिले में कृषि आधारित उद्योग जैसेः कपास, सोया और दाल मिलों सहित खनिज आधारित उद्योग जैसे– मेंगनीज, चूना पत्थर और लेटराइट स्थित हैं।

» सैन्ट्रल वेअरहाउस, आदिलाबाद में उपलब्ध सुविधाएं:

1. इस वेअरहाउस में 2,10,000 वर्ग फुट का कवर्ड भंडारण स्थान उपलब्ध है।
2. यह वेअरहाउस आईएसओ 9001:2015, ईएमएस 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 प्रमाणन प्राप्त वेअरहाउस है।
3. यह वेअरहाउस सीसीटीवी निगरानी प्रणाली से युक्त है।
4. वेअरहाउस के चारों ओर वाहनों के पर्याप्त आवागमन का स्थान है। इन स्थानों पर राज्य पुलिस विभाग के होम गार्ड हर समय तैनात रहते हैं।
5. वेअरहाउस का परिसर पूरी तरह अग्निशमन के अनुरूप है।
6. वेअरहाउस में 60 मीट्रिक टन का एक इलेक्ट्रॉनिक कांटा पूर्ण रूप से चालू है।
7. यह वेअरहाउस डब्ल्यू.डी.आर.ए. के तहत पंजीकृत है।
8. इस वेअरहाउस से आदिलाबाद कृषि उत्पाद मंडी समिति की दूरी 1.1 किमी है तथा आदिलाबाद गुड्स शेड इस वेअरहाउस से 2.3 किमी की दूरी पर है।
9. वेअरहाउस में पर्याप्त श्रमशक्ति उपलब्ध है।
10. इस वेअरहाउस में कीट नियंत्रण (पैस्ट कंट्रोल) सेवाएं भी उपलब्ध हैं।
11. इस वेअरहाउस में लाइव लेनदेन करने तथा वेअरहाउस के सुगमता से प्रचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) को लागू किया गया है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-दुग्गीराला

सैन्ट्रल वेअरहाउस, दुग्गीराला, भवन संख्या 2–88 रेलपेट, दुग्गीराला, गुंटूर जिला, आन्ध्र प्रदेश– 522330 में स्थित है। दुग्गीराला मंडल में उत्कृष्ट बुनियादी सुविधाएँ हैं और यह सड़क और रेल मार्ग द्वारा 1 किमी की दूरी पर निकटतम राज्य राजमार्ग और 20 किमी की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग–16 से व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है।

दुग्गीराला की मुख्य विशेषताएं:

दुग्गीराला कृषि उत्पाद मंडी समिति के मार्केट यार्ड में हल्दी का व्यवसाय प्रमुखता से किया जाता है। यहाँ का यह व्यवसाय आंध्र प्रदेश में द्वितीय तथा भारत में तीसरे स्थान पर है। यहाँ पर विभिन्न मसाले जैसे हल्दी एवं खाद्यान्न जैसे– मक्का, धान, ज्वार आदि के उत्पादक बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं। प्रत्येक वर्ष यहां से मुम्बई, बांग्लादेश और पाकिस्तान के लिए हल्दी का बहुतायत में निर्यात होता है।

» सैन्ट्रल वेअरहाउस, दुग्गीराला में उपलब्ध सुविधाएं:

1. इस वेअरहाउस में 60,600 वर्ग फुट का कवर्ड भंडारण स्थान उपलब्ध है।
2. यह वेअरहाउस आईएसओ 9001:2015, ईएमएस 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 प्रमाणन प्राप्त वेअरहाउस है।
3. वेअरहाउस के चारों ओर वाहनों के पर्याप्त आवागमन का स्थान है।
4. वेअरहाउस में राज्य पुलिस विभाग के माध्यम से हर समय होम गार्ड तैनात रहते हैं।
5. यह वेअरहाउस डब्ल्यू.डी.आर.ए. के तहत पंजीकृत है।
6. वेअरहाउस का परिसर पूरी तरह अग्निश्मन के अनुरूप है।
7. इस वेअरहाउस से दुग्गीराला कृषि उत्पाद मंडी समिति बिल्कुल निकट है।
8. वेअरहाउस से 11 किमी की दूरी पर तेनाली में रेलवे का गुड्स शेड है।
9. इस वेअरहाउस से दुग्गीराला रेलवे स्टेशन 0.5 किमी की दूरी पर और गन्नावरम हवाई अड्डा 36 किमी की दूरी पर स्थित है जो परिवहन को सुगम बनाता है।
10. स्टॉक को संभालने के लिए पर्याप्त श्रमशक्ति उपलब्ध है।
11. इस वेअरहाउस में कीट नियंत्रण (पैस्ट कंट्रोल) सेवाएं भी उपलब्ध हैं।
12. इस वेअरहाउस में लाइव लेन देन करने तथा वेअरहाउस के सुगमता से प्रचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) को लागू किया गया है।

सैन्ट्रल वेअरहाउस-बडौदा-I

केन्द्रीय भंडारण निगम का अहमदाबाद क्षेत्र 1969 के दौरान अस्तित्व में आया। क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद अप्रैल, 1979 तक गुजरात और मध्य प्रदेश राज्य में गोदामों की देखरेख और कामकाज कर रहा था। मई, 1979 में अहमदाबाद से अलग भोपाल क्षेत्र की स्थापना की गई थी। क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद के अधीनस्थ बड़ौदा–I स्थित वेअरहाउस का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

» द्विभाजन के समय, गुजरात क्षेत्र में 1.90 लाख मीट्रिक टन क्षमता वाले 16 गोदाम थे। वर्तमान में, हम गुजरात राज्य में 5.35 लाख टन की कुल क्षमता वाले 23 गोदामों का संचालन कर रहे हैं।

» केन्द्रीय भंडारण निगम का सैंट्रल वेअरहाउस, बडौदा–I 1972 के दौरान अस्तित्व में आया।

» वर्तमान में इसकी कुल भण्डारण क्षमता 16581 मीट्रिक टन है, जो शहर के मध्य में 5.9 एकड़ (23876 वर्ग मीटर) क्षेत्र में फैला हुआ है।

» भण्डारण से अतिरिक्त सैंट्रल वेअरहाउस, बडौदा–I सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, रेलवे और निजी पार्टियों को कीट नियंत्रण सेवाएं (पीसीएस) भी प्रदान करता है। पीसीएस में धूमन, कीट, कृंतक और दीमक नियंत्रण शामिल हैं।

» सैंट्रल वेअरहाउस, बड़ौदा–I ने केंद्रीय और राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरण से FSSAI के लाइसेंस प्राप्त किए हुए है एवं हैंडलिंग एवं ट्रांसपोर्टेशन कॉन्ट्रैक्ट के लिए लेबर लाइसेंस भी प्राप्त किया हुआ है।

» इस सैंट्रल वेअरहाउस को राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत दिनांक 29.05.2017 से अधिसूचित कर दिया गया है।

जल है तो जिंदगानी है

महिमानन्द भट्ट*

पृथ्वी पर जीवन के लिए दो प्राथमिक चीजें हैं, एक हवा और दूसरा पानी। पानी हमारे जीवन के लिए हवा के बाद सर्वाधिक आवश्यक तत्व है। यह शाश्वत सत्य है कि जल ही जीवन है तथा जल और स्वास्थ्य का अटूट संबंध है। मानव शरीर का 70% भाग पानी से ही निर्मित है। प्रकृति ने भी पृथ्वी के तीन चौथाई भाग में पानी संग्रहित किया हुआ है।

जल एक ऐसी धुरी है जिस पर जीवन घूमता है जिसके अभाव में सब शून्य है। पुराणों में भी जल के महत्व को दर्शाया गया है। कहा भी जाता है कि भगीरथ प्रयत्न से ही गंगा माता का धरा पर अवतरण हुआ था, गंगा की चंचल धारा को भी शिवजी की जटाओं से बांधा गया था।

आज के समय में जल संरक्षण की आवश्यकता है, इससे कई लाभ हो सकते हैं, जैसेः– जल की उपलब्धता बढ़ती है, गिरते भूजल के स्तर को बढ़ाया जा सकता है, पर्यावरण को शुद्ध बनाया जा सकता है, भू–जल की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है, भू–क्षरण को रोका जा सकता है तथा बाढ़ आदि से शहरी क्षेत्रों को बचाया जा सकता है। अतः वर्षा बूंदों को सहेज कर और उसका समुचित उपयोग कर ही धरा पर खुशहाल जीवन संभव है। जल, जीवन और समाज तीनों का गहरा और घनिष्ठ संबंध है। जल पर ही जीवन और समाज का अस्तित्व टिका हुआ है। जल–जीवन और समाज एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं।

जल संरक्षण की ओर ध्यान न देने के कारण कभी–कभी जल–संकट की स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि हमारे समक्ष राष्ट्रीय आपदा जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में पेयजल का संकट तो इस कदर बढ़ जाता है कि चारों तरफ हा–हाकार जैसी स्थिति हो जाती है। आज नगर से लेकर महानगरों में बोतलबंद पीने के पानी की बिक्री आम होती जा रही है और बोतलबंद पानी का संसार फलता–फूलता जा रहा है।

देश के कई शहरों में पीने लायक पानी के लिए सुबह से शाम तक जगह–जगह लंबी–लंबी कतारें देखने को मिलती हैं, खासतौर पर गर्मी के मौसम में और जहाँ पर पानी की समुचित मात्रा या सप्लाई है, वहाँ पर इसकी बर्बादी देखने को मिलती है। जल का संकट केवल शहरों में ही नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी दिखाई देता है। देश के अनेक ग्रामीण इलाकों से प्रतिवर्ष सूखे की समस्या के समाचार सुनाई देते हैं। कहीं–कहीं तो यह भी स्थिति है कि खाने के लिए अनाज है तो पीने के लिए शुद्ध पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। अतः हमें यह ध्यान रखना होगा किः

"जल है जीवन का अनमोल रतन
इसे बचाने का करो जतन"

शहरों में कल–कारखानों को नदी के किनारे बनाना और उनका कचरा नदियों में बहाना जल–प्रदूषित होने का

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

एक अहम कारण है। विभिन्न शहरों के गंदे नालों को नदियों में बहाने से नदी का जल गंदा हो जाता है जिसके कारण इसका पानी पीने लायक नहीं होता। एक तरफ ग्लोबल वार्मिंग से वर्षा की मात्रा कम होने से भी जल–संकट की स्थिति पैदा होती जा रही है और दूसरी तरफ वृक्षों की अंधा–धुंध कटाई से वन–क्षेत्र कंक्रीट के जंगलों का रूप धारण कर रहे हैं। निश्चित तौर पर पेड़ों के कटाव और वर्षा की कमी के कारण पारम्परिक जल–स्त्रोत भी लुप्त होते जा रहे हैं। गर्मी के मौसम में वनों में लगने वाली आग से करोड़ों की वन–संपदा तो नष्ट होती ही है, साथ ही जल के प्राकृतिक स्त्रोतों में भी कमी आती है।

विभिन्न प्रकार के रसायनों और कल–कारखानों से निकले जहरीले रसायनों से पानी की गुणवत्ता में कमी आई है और वह विषैला भी होता जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार विकासशील देशों के गांवों में करीब 80% लोग ऐसे हैं जिन्हें स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं है, जल के प्रदूषण की समस्या एक जटिल समस्या है। बढ़ती जनसंख्या एवं जल–संसाधनों का इष्टतम उपयोग न होने के कारण जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जल प्रदूषण का प्रभाव न केवल मानव पर पड़ रहा है बल्कि यह पशु–पक्षियों एवं मछलियों के लिए भी उतना ही घातक सिद्ध हो रहा है। अतः समय की मांग है कि हमें जल संरक्षण एवं इसको प्रदूषित होने से बचाने के लिए भरपूर प्रयास करने होंगे और प्रकृति द्वारा प्रदत्त इस अनमोल उपहार को संजोकर रखना होगा।

जिस प्रकार जल का हमारे शरीर के लिए विशेष महत्व है, उसी प्रकार भाषा के सौंदर्य के लिए भी हम इसका निरंतर प्रयोग करते हैं जिसमें से कुछ मुहावरे एवं लोकोक्तियों का उल्लेख यहां किया जा रहा है, जैसे – आसमान से गिरना (अचानक प्रस्तुत होना), उल्टी गंगा बहना (रीति विरुद्ध कार्य करना), गागर में सागर भरना (थोड़े में बहुत करना), जल–भुनना (कुढ़ना), मुँह में पानी

आना (ललचाना), एक–एक बूँद से सागर भरना (थोड़े–थोड़े से ही विशाल संग्रह करना), गंगा नहा लिए (सभी कार्य निपटाना), गरजने वाले बरसते नहीं (डींग मारने वाले कुछ नहीं करता), घर बैठे गंगा आई (बिना प्रयत्न लक्ष्मीजी को पाना), घाट–घाट का पानी पीना (जगह–जगह की खाक छान मारना), चुल्लू भर पानी में डूब मरो (अत्यंत हीन आचरण करने वाले व्यक्ति को लज्जित करना), जल में रहकर मगरमच्छ से बैर (जहाँ रहना वहाँ के राजा से बैर न लेना), डूबते को तिनके का सहारा (मुसीबत के समय थोड़ी सी सहायता भी पर्याप्त है), थोड़े से प्यास नहीं बुझती (बड़े कार्य करने के लिए साधारण उपाय काफी नहीं है), नेकी कर दरिया में डाल (किसी पर किये गये उपकार का उल्लेख नहीं करना चाहिए), पानी में आग नहीं लगती (असंभव कार्य करना), प्यासा कुएँ के पास जाता है (जरूरतमंद दूसरों के पास जाता है), बहती गंगा में हाथ धोना (मौके का फायदा उठाना), मन चंगा तो कठौती में गंगा (मन साफ हो तो गंगा भी उसकी कठौती में होती है), सावन हरे न भादों सूखे (हर अवस्था में एक रहना), सिर मुंडाते ही ओले पड़े (किसी कार्य के प्रारंभ में ही रुकावट आना)।

इन प्रसिद्ध पानी पर आधारित लोकोक्तियों के अलावा 'पानी रे पानी तेरा रंग कैसा, जिसको मिलाओ लगे उसके जैसा, खाना तो नहीं, पानी तो पूछो' आदि कई बातें जन–जीवन में भाषा की शोभा भी बढ़ाते हैं। जिस प्रकार जल के बिना किसी काम की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार मुहावरों और कहावतों के बिना भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि

"साफ–सुथरा पानी, अच्छे स्वास्थ्य की निशानी
जब तक है पानी, तब तक है जिन्दगानी।"

देवनागरी हिंदी बनाम रोमन हिंदी

डॉ. हरीश कुमार सेठी*

हिंदी की लोकप्रियता में देवनागरी लिपि को बाधक मानते हुए गाहे–बगाहे यह तथाकथित चर्चा उठती ही रहती है कि हिंदी भाषा को रोमन लिपि में लिखा जाए। देवनागरी के स्थान रोमन लिपि को अपनाने की वकालत करने वाले विद्वान यह मानकर चलते हैं कि इससे हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में अभिवृद्धि होगी। ऐसी ही आड़ लेकर कुछ समय पहले हिंदी प्रेमी चेतन भगत के 'रोमन लिपि अपनाओ हिंदी भाषा बचाओ' लेख ने यह बहस छेड़ने का प्रयास किया था कि देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि को अपनाकर हिंदी भाषा को बचाया जा सकता है। यह बहस का वह मुद्दा है जिस पर जब भी बात चलेगी तो तर्क और वितर्क में चर्चा आगे ही बढ़ती जाएगी।

चेतन भगत ने इसे 'राजनीतिक रूप से संवदेनशील मसला' कहा है, जो न केवल हिंदी भाषा बल्कि स्थानीय भाषाओं और उनकी लिपियों से भी जुड़ा हुआ है। इसके लिए लेखक ने तुर्रा यह दिया है कि अंग्रेजी इन भाषाओं को खत्म कर रही है। लेखक को यह लगता है कि अंग्रेजी भाषा समाज में रुतबा बढ़ाती है और यह 'लोगों को बेहतर करियर की उम्मीद बँधाती है।' इस स्थिति में उनका यह कहना है कि 'बहुत से हिंदी प्रेमी और शुद्धतावादी आज के नए समाज से दुखी हैं, जहाँ युवा अपनी मातृभाषा को दरकिनार कर जल्द से जल्द अंग्रेजी की दुनिया में जाने को आतुर हैं।' उनके अनुसार, 'एक भाषा को हमें शुद्धता के नजरिए से नहीं देखना चाहिए। उसे समय के साथ चलना और विकसित करना होगा।'

हालाँकि हम इस सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ सकते कि सूचना–संचार, इंटरनेट और मोबाइल क्रांति के आज के युग में ज्यादातर ई–मेल और एस.एम.एस. आदि में रोमन लिपि के जरिए हिंदी को व्यवहार में लाया जा रहा है। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त देश के आधुनिक नेता–राजनेता आदि हिंदी के अपने भाषण रोमन लिपि में लिखते हैं। इसी तरह से फिल्म जगत से जुड़ी कई हस्तियाँ रोमन लिपि में हिंदी का प्रयोग करते हैं। वहीं, दूसरी ओर, सूचना प्रौद्योगिकी में रोमन लिपि आधारित हिंदी का निरंतर विकास हो रहा है, मोबाइल कंपनियाँ भारत को बहुत बड़े बाजार के रूप में देखती हैं, जहाँ वे अंग्रेजी का सहारा लेकर अपने पाँव नहीं पसार सकतीं। इसलिए वे मोबाइल फोन में देवनागरी लिपि की सुविधा भी प्रदान करने लग गई हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, वे तो इसे अन्य भारतीय भाषाओं की लिपियों तक विस्तार भी प्रदान कर रही हैं। यहाँ हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि रोमन लिपि प्रेमी हिंदी प्रयोक्ता ही 'नर्मदा बाँध' को रोमन लिपि के आधार पर 'नरमादा बाँध' बना देते हैं। ऐसे में हिंदी प्रयोक्ता वर्ग को गंभीरता से यह विचार करना होगा कि क्या रोमन लिपि को अपनाकर हिंदी भाषा को बचाया जाए या फिर बाजारवादी शक्तियों के प्रभाव से निरंतर विकसित हो रही हिंदी के प्रचलन के कारण वैश्विक पटल पर उभर रही 'विश्व नागरी' की महत्ता को स्वीकार किया जाए।

यहाँ डॉ. परमानंद पांचाल के ये विचार भी ध्यान देने योग्य हैं कि 'यदि हिंदी को रोमन में लिखा जाए तो क्या वह हिंदी रह जाएगी? वह तो 'हिंग्लिश जैसी एक नई भाषा बन जाएगी। इतिहास साक्षी है कि जब हिंदी (हिंदवी) को फारसी लिपि में लिखा जाने लगा तो वह 'उर्दू' बन गई।' इसलिए यह चिंतन जरूरी है कि क्या हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए रोमन को अपनाना चाहिए। वास्तव में हिंदी के लिए रोमन लिपि अपनाने संबंधी विचारों के मूल में वैश्विक पटल पर अंग्रेजी भाषा के साम्राज्यवाद की स्थापना करना निहित है। ऐसी स्थिति–परिस्थिति में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली अपनी हिंदी भाषा को शुद्धता के नजरिए से देखने के स्थान पर उसकी वैज्ञानिकता और भाषायी अस्मिता के संदर्भ में फिर से ध्यान देना जरूरी हो गया है। लेकिन, यहाँ हम इस चर्चा को देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता तक ही सीमित रख रहे हैं।

हिंदी का अनेक प्रकार से अपना वैशिष्ट्य है। इस वैशिष्ट्य को ध्वनि व्यवस्था, शब्द समूह और इसकी रचनात्मक प्रकृति के संदर्भ में देखा जा सकता है। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी की लिपि–व्यवस्था सबसे अधिक वैज्ञानिक है। विद्वानों का यह मानना है कि जो लिपि लेखन की दृष्टि से जितनी आदर्श होगी, वह उतनी ही सक्षम होगी। अगर इस दृष्टि से देवनागरी लिपि पर विचार

*असिस्टेंट प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

करें तो यह कहा जा सकता है कि यह उन आदर्शों पर खरी उतरती है जो किसी भी अच्छी लिपि के लिए आवश्यक माने जाते हैं। आदर्श लिपि के संदर्भ में यह अपेक्षा की जाती है कि ध्वनि और लिपि में सामंजस्य हो (अर्थात् जो बोला जाए वही लिखा जाए और जो लिखा जाए तो वही बोला जाए) और एक ध्वनि के लिए एक ही संकेत हो (अर्थात् ध्वनि और उसके संकेत में निश्चितता हो)। इसके अलावा, किसी भी आदर्श लिपि में भाषा की सभी ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता अपेक्षित होती है। आज संसार में जो भी लिपियाँ प्रचलित हैं, उनमें से किसी अन्य लिपि में इतने गुण नहीं हैं जितने देवनागरी में हैं। यह हिंदी ही नहीं, संस्कृत, मराठी, मैथिली, डोगरी, बोडो और यहाँ तक कि नेपाली भाषा की भी आधिकारिक लिपि है। स्थिति यहाँ तक नजर आती है कि नागरी लिपि में लिखा उर्दू साहित्य भी काफी अधिक लोकप्रिय हो रहा है। इस तरह नागरी, विभिन्न भाषाओं के बीच 'संपर्क लिपि' का दायित्व निभाते हुए लगातार प्रचलित हो रही है।

देवनागरी लिपि में स्वरों और व्यंजनों का क्रम बड़ी ही वैज्ञानिक रीति से रखा गया है। लिखने के लिए इसमें अंग्रेजी की तरह दो अलग–अलग छोटे–बड़े (स्माल–कैपिटल) रूप भी नहीं हैं। इसमें लिखे शब्दों की सभी ध्वनियों का उच्चारण किया जाता है, जबकि अंग्रेजी में अनुच्चरित ध्वनियों को भी शब्दों में स्थान दिया जाता है। इस लिपि का सुपाठ्य, संदेह–रहित और सौंदर्य–युक्त होना भी एक महत्वपूर्ण गुण है। मुख्य बात यह भी है कि यह लिपि अत्यंत व्यावहारिक भी है। समय के साथ–साथ इसमें आवश्यकता के अनुसार फारसी की 'क़', 'ख़', 'ग़', 'ज़', 'फ़' तथा अंग्रेजी की 'ऑ' ध्वनि आदि अनेक ध्वनियों के लिए चिह्नों को शामिल किया गया। इसी तरह से इसने अंग्रेजी के कोमा आदि अनेक प्रकार के विराम चिह्नों को भी अपनाया और मानकीकरण की प्रक्रिया में वर्णों के रूपाकार में परिवर्तन करके 'ख' जैसे व्यंजन भी संशोधित किए गए हैं।

मुद्रण और टाइपिंग की सुविधा की दृष्टि से भी देखें तो देवनागरी लिपि यांत्रिक सुविधा और विशेष तौर पर कंप्यूटर सहज है। आज के वैज्ञानिक युग में यह विशेष महत्व रखता है क्योंकि इस युग में कंप्यूटर के बिना मानव जीवन और जीवन–व्यवहार की कल्पना करना मुश्किल है। आधुनिक और नवीनतम ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में कंप्यूटर अनुप्रयोग का विशेष महत्व है, जो भाषा के बिना संभव नहीं है। इसलिए यह स्वीकार किया जाता है कि देवनागरी अन्य किसी भी लिपि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक एवं निर्दोष है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता रूपी इस वैशिष्ट्य ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को आधुनिकीकृत भाषा के रूप में उद्घाटित किया है। राजा राममोहन राय, बंकिम चंद्र चटर्जी, बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, आचार्य विनोबा भावे, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, श्री केशव वामन पैठे, दयानंद सरस्वती, सेठ गोविंद दास, डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, डॉ. देवेंद्र कुमार शास्त्री, कृष्णस्वामी अय्यर, अनंत शयनम आयंगर, पंडित गौरीदत्त, वीर सावरकर, काका कालेलकर, डॉ. श्यामसुंदरदास और न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र जैसे भारतीय ही नहीं, अपितु जॉन क्राइस्ट, मोनियर विलियम्स, पिटमैन और ग्राउस जैसे पाश्चात्य विद्वानों ने भी देवनागरी को आदर्श और वैज्ञानिक लिपि स्वीकार किया है। शारदा चरण मित्र जैसों ने 1905 में 'लिपि विस्तार परिषद' की स्थापना तक की और 'देवनागर' नामक पत्रिका के माध्यम से नागरी लिपि के प्रचार–प्रसार का सूत्रपात भी किया।

देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि को अपनाने में कंप्यूटर और मोबाइल फोन के विविध अनुप्रयोगों के संदर्भ को भी इस लेख में चर्चा का आधार बनाया गया है। हालाँकि यह सही है कि आज मोबाइल फोन कंप्यूटर को स्थानापन्न कर रहा है और इसके व्हाट्सऐप जैसे अनुप्रयोग में रोमन लिपि के रूप में हिंदी को अधिक व्यवहार में लाया जा रहा है, किंतु अब कई ऐसे स्मार्टफोन भी आ चुके हैं जिनमें देवनागरी में लिखने की सुविधा उपलब्ध है। यह बात अलग है कि उसके लिए रोमन कुंजी पटल के जरिए देवनागरी लिप्यंतरण का सहारा लिया जा रहा है किंतु इसके लिए दोष लिपि का न होकर देवनागरी के संदर्भ में प्रौद्योगिकीय विकास एवं आवश्यक परिवर्तनों की कमी का ही है। वास्तविकता यह है कि आज यूरोप और अमेरिका आदि देशों में सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में हो रहे विकास एवं शोध में नागरी लिपि की वैज्ञानिकता ने विशेषज्ञों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। उन्होंने देवनागरी लिपि को कंप्यूटर के लिए सर्वश्रेष्ठ लिपि स्वीकार किया है। डॉ. रिग ब्रिग्स, डॉ. रिप्लू मूर, डॉ. व्यास हूस्तन और डॉ. डेविड लेविन आदि अनेक विद्वानों ने नागरी लिपि की उपयुक्तता के संबंध में व्यापक रूप से लिखा

है। डॉ. ब्रिग्स की स्पष्ट रूप से यह धारणा है कि संस्कृत भाषा कंप्यूटर प्रोग्राम की दृष्टि से आदर्श भाषा है इसलिए देवनागरी लिपि में काम करना मुश्किल नहीं है।

अब अगर हम इंटरनेट की ही बात करें तो आरंभिक चरण में जहाँ इस पर प्रत्येक सूचना रोमन लिपि में उपलब्ध होती थी, वहीं आज देवनागरी में लिखी हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में भी जानकारी उपलब्ध होने लग गई है। समाचार, साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, मनोरंजन, शिक्षा आदि अनेकानेक क्षेत्रों में इंटरनेट पर देवनागरी में जानकारियाँ देखी–पढ़ी जा सकती हैं। आज स्थिति यह है कि सरकारी कार्यालयों, वित्तीय संस्थाओं, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों आदि में ई–मेल, वेबसाइट, इंटरनेट आदि सूचना प्रौद्योगिकी के विविध व्यवहारों में नागरी लिपि का प्रयोग होते देखा जा सकता है। हिंदी में प्रकाशित होने वाले कई समाचार–पत्रों के अलावा न्यूज चैनलों द्वारा हिंदी में अपनी–अपनी वेबसाइट भी शुरू की गई हैं। इसके अलावा, साहित्य, शिक्षा, समाचार और ज्ञान–विज्ञान से संबंधित कई नई वेबसाइट भी हिंदी में शुरू हुई हैं।

हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए आज कई पोर्टलों का शुभारंभ हो चुका है। 'वेबदुनिया' विश्व की पहली हिंदी वेबसाइट है। 'वेबदुनिया' ने जहाँ इंटरनेट पर हिंदी को एक सुदृढ़ मंच प्रदान किया, वहीं तमिल, तेलुगु, मलयालम आदि कई भारतीय भाषाओं के पोर्टलों को भी विकसित किया है। इसके अलावा, कई ऐसे पोर्टल भी हैं जहाँ से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में ई–मेल भेजे जा सकते हैं। www.webduniya.com, www.bharatmail.com, www.mailjol.com, www.cdacindia.com आदि अनेक वेबसाइटों पर हिंदी में ई–मेल की सुविधाएँ हैं। वेबदुनिया ने प्रथम बहुभाषी ई–मेल सेवा 'ई–पत्र' और विश्व के प्रथम हिंदी पोर्टल 'वेबदुनिया.कॉम' के जरिए इंटरनेट पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का शंखनाद किया। ई–मेल सेवा को जन–जन तक पहुँचाने के लिए 'वेब दुनिया' द्वारा ही सर्वप्रथम ई–पत्र (e.patra) की शुरुआत की गई है। इसकी सहायता से हिंदी में ई–मेल भेजा जा सकता है। इस वेबसाइट का पता है– www.epatra.com। यह ई–मेल सेवा केवल देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा तक ही सीमित न होकर बहुभाषीय भी है। इसमें हिंदी के अलावा दस अन्य भारतीय भाषाओं में ई–मेल किया जा सकता है। ये भाषाएँ हैं – तमिल, तेलुगू, गुजराती, पंजाबी, मराठी, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, असमिया और बांग्ला भाषा। इन भाषाओं की लिपियों में ई–मेल करने के लिए व्यक्ति को रोमन लिपि में तो टाइप करना होता है किंतु वह इच्छित लिपि एवं भाषा में परिवर्तित होकर इच्छित व्यक्ति तक पहुँच जाता है। ई–पत्र के अलावा, 'मेलजोल डॉट कॉम', 'भारतमेल.कॉम', 'रेडीफमेल डॉट कॉम', 'दैनिक जागरण डॉट कॉम' आदि वेबसाइटों में भी हिंदी में ई–मेल की सुविधा है। आज अंतरराष्ट्रीय ई–मेल सुविधा प्रदान करने वाले गूगल आदि में देवनागरी में मेल करने की सुविधा तक है। इंटरनेट से ई–पत्र की भाँति ई–वार्ता की संभावना भी बनी है। हिंदी पोर्टल वेबदुनिया के जरिए ई–वार्ता भी की जा सकती है। वस्तुतः विभिन्न प्रकार की वेबसाइटों–पोर्टलों आदि ने देवनागरी लिपि के जरिए हिंदी में इंटरनेट उपलब्ध कराकर इसे जन–जन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

हालाँकि इंटरनेट पर पहले की तुलना में आजकल देवनागरी लिपि का उपयोग बढ़ा है, किंतु इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी, कोरियाई, अरबी भाषाओं की लिपियों और मंदारिन लिपि की तुलना में देवनागरी का प्रयोग कम होता है। देवनागरी लिपि को इंटरनेट के क्षेत्र में और विकसित करने की जरूरत है। देश की विशाल जनता को सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जोड़ने के लिए हमें देवनागरी को इंटरनेट पर और अधिक स्थापित करना होगा।

हालाँकि कंप्यूटर और इंटरनेट पर देवनागरी के प्रयोग के लिए अलग–अलग फोंट प्रयोग जैसी कतिपय समस्याओं ने कई चुनौतियाँ खड़ी की हैं, किंतु इंटरनेट पर देवनागरी और अन्य भारतीय लिपियों को स्थापित करना आज के व्यावसायिकता से जुड़े भूमंडलीकरण के युग में आवश्यक हो गया है। यूनिकोड ने फोंट की इस प्रकार की समस्या को हल करने का रास्ता दिखाया है। इसलिए आशा है कि भविष्य में भी सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि का प्रयोग बढ़ेगा। मूल बात इन चुनौतियों का सामना करते हुए भारतीय भाषाओं और लिपियों के प्रति देश के विशाल जनमानस में स्वाभिमान और जागरूकता की भावना पैदा करने की है, मानसिकता को बदलने की है।

'वक्त के साथ बदलना जरूरी है' की आड़ लेकर रोमन लिपि को विकास का आधार मानना उचित नहीं है। हालाँकि यह सही है कि रोमन लिपि विश्व के मानचित्र पर साम्राज्यवादी दौर में भी छायी रही है और आज के

भूमंडलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में भी अपना वर्चस्व स्थापित किए हुए है। लेकिन, हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि रूस, जापान, चीन आदि विश्व के कई ऐसे देश भी हैं जिन्होंने अपनी लिपि और भाषा का ही आधार लेकर आश्चर्यजनक प्रगति और विकास किया है। ये देश अपनी–अपनी भाषा और लिपि को ही व्यवहार में लाते हैं, इसलिए रोमन लिपि को अपनाने में हिंदी के विकास की कल्पना अपनी अस्मिता को मिटाकर दूसरे के आवरण को ओढ़कर आगे बढ़ना है, जो भारत जैसे बहुभाषा–भाषी देश–समाज के अस्तित्व पर प्रश्न–चिह्न बन जाएगा। यदि ऐसा कहा भी जाता है तो ऐसी ही मांग देश की अन्य भाषाओं की लिपियों को बदलने के लिए भी की जाएगी। आज जहाँ वैश्विक पटल पर भाषाओं के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं, देश–विदेश की सैकड़ों भाषाएँ मर गई हैं और मर रही हैं, संख्या की बल की दृष्टि से उनका प्रयोक्ता वर्ग निरंतर सिकुड़ रहा है। ऐसी स्थिति में उनमें प्राण फूँकने के बदले उन्हें मारने की जुगात भिड़ाना कहाँ की समझदारी है। हमें इस पक्ष की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

'वक्त के साथ बदलना जरूरी है' की आड़ में 'रोमन लिपि अपनाओ, हिंदी भाषा बचाओ' का नारा वास्तव में अपनी भाषा–लिपि को दुर्बल बनाना है, उन्हें क्रमशः नष्ट करना है। भाषा के अस्तित्व और निरंतरता को अक्षुण्ण बनाए रखने का आधार लिपि में यह बदलाव, अपनी अस्मिता को खोकर ही हो सकेगा, जो किसी भी समृद्ध–सम्पन्न भाषा और किसी भी संप्रभु राष्ट्र के लिए किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है। बल्कि आज तो जरूरत इस बात की है कि किसी भी भाषा की ध्वनियों को व्यक्त करने में सक्षम–समर्थ देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता से विश्व को और अधिक परिचित कराया जाए ताकि अंग्रेजी भी रोमन जैसी अपूर्ण लिपि को छोड़कर देवनागरी लिपि को अपना ले।

सत्य वचन

विनीत निगम*

कविता

सत्य वचन अपने आप सूर्य है
जिसकी ताकत अद्भुत है
तुम शिव धनुष हिला नहीं सकते जिस तरह
सूर्य के ताप को सह नहीं सकते उसी तरह

तुम आत्मा और परमात्मा का मिलन हो
जीवन का केंद्र बिंदु हो
अंतरिक्ष से धरती पर आगमन हो
तुम स्वयं में ब्रह्म हो

तुम ही ओंकार हो जग का आधार हो
भाषा और विज्ञान की नई परिभाषा हो

समुद्र मंथन की जिज्ञासा हो
कर्म में महाभारत का ज्ञान हो

तुम ही रात्रि तुम ही दिन हो
तुम ही प्यास हो तुम ही मुस्कान हो
तुम ही आदि हो तुम ही अनन्त हो
तुम ही ब्रह्मांड हो

तुम ही सृष्टि का आदि और अंत हो
तुम ही महाकाल हो, तुम ही आदि शक्ति हो
तुम ही विनाश, तुम ही रचनाकार हो
तुम ही काशी, तुम ही काबा, तुम ही कैलाश हो

*पूर्व प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

सत्य का खजाना

एक बार परमेश्वर ने मनुष्य के सिवाय सभी प्राणियों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा– 'मैं मनुष्य से कुछ छुपाना चाहता हूं। वह चीज है परम सत्य। पर मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि उसे कहा रखूं!' गरुड़ ने कहा, 'वह मुझे दे दो। मैं उसे चांद में छुपा दूंगा।' परमेश्वर ने कहा, 'नहीं। एक दिन वे वहां पहुंचकर उसे ढूंढ लेंगे।' मछली ने कहा, 'मैं उसे सागरतल में गाड़ दूंगी।' 'नहीं। एक दिन वे वहां भी पहुंच जाएंगे।' भैंस ने कहा, 'मैं उसे चारागाहों में छुपा दूंगी।' परमेश्वर ने कहा, 'एक दिन वे धरती की खाल को उधेड़ देंगे और उसे खोज लेंगे।' सभी प्राणियों की दादी चीटीं जो हमेशा धरती मां की छाती से चिपकी रहती थी, उसे कोई कुछ नहीं समझता था। हर कोई उपेक्षा ही करता। वह तुरंत बोली– 'उसे उन्हीं के भीतर रख दो।' परमेश्वर ने ऐसा ही किया।

अनुवाद एवं अनुवादक की भूमिका

रेखा दुबे*

प्राचीन समय में गुरू जो कुछ अपने शिष्यों के समक्ष कहते थे और शिष्य उसे दोहराते थे, इस विद्या को अनुवाद कहा जाता था। जैसे–जैसे नई खोजें हमारे समक्ष आईं और नए–नए विषय उभरे तो अनुवाद शब्द का भी विस्तार हुआ और इसे दो भाषाओं के सेतु के रूप में देखा जाने लगा। कई विद्वानों ने अनुवाद की अलग–अलग परिभाषाएं दीं किंतु सभी परिभाषाओं का एक ही निष्कर्ष है कि एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में अंतरित करने को अनुवाद कहते हैं, परंतु ऐसा करते समय दोनों भाषाओं की भाषा रूपी विशेषताओं पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। अनुवाद करते समय स्रोत भाषा (source language) में कही गई बात को लक्ष्य भाषा (target language) में निकट एवं सहज समतुल्य अभिव्यक्ति के साथ व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। अतः अनुवादक का दायित्व बेहद ही महत्वपूर्ण एवं गंभीर है। उसे दोनों ही भाषाओं की समुचित जानकारी होनी चाहिए जिससे वह मूल पाठ का विश्लेषण करके उसका अर्थ ग्रहण कर सके और ग्रहण किए गए अर्थ को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने के लिए उस भाषा की प्रकृति के अनुरूप वाक्य संरचना कर सके। यह कार्य कहने में जितना आसान लग रहा है, करने में उतना ही कठिन है। सरल और संयुक्त वाक्यों के अनुवाद में खास कठिनाई नहीं होती है। वास्तव में कठिनाई मिश्रित वाक्यों के अनुवाद में होती है, जहां प्रधान वाक्य के साथ–साथ कई उप–वाक्य भी होते हैं। हिंदी की परंपरा सरल एवं संयुक्त वाक्य लिखने की है जबकि अंग्रेजी में मिश्र वाक्यों की परंपरा अधिक है। अतः अनुवाद करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि अनुदित वाक्य की संरचना हिंदी की प्रकृति के अनुरूप हो। इसका उदाहरण इस वाक्य से देखा जा सकता है ''The leave application of Shri Vivek Kumar, Supdt. from your office, who is at present under training in Ministry of Food and Public distribution is forwarded herewith for further necessary action". ''आपके कार्यालय के अधीक्षक श्री विवेक कुमार, जो इस समय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, का छुट्टी का आवेदन आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए अग्रेषित किया जा रहा है।''

उक्त वाक्य से स्पष्ट है कि अनुदित वाक्य की संरचना हिंदी की प्रकृति के अनुरूप नहीं है। यदि मूल संरचना का अनुसरण न करके हिंदी की सहज प्रकृति के अनुसार अनुवाद करेंगे तो वह सरल और सहज होगा जैसे ''आपके कार्यालय के अधीक्षक श्री विवेक कुमार इस समय खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, उनका छुट्टी का आवेदन आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए अग्रेषित किया जा रहा है।''

इस प्रकार अनुवाद जितना सहज और सरल होगा उतना ही श्रेष्ठ माना जाएगा। अब कुछ उन बातों का जिक्र करते हैं जो अनुवाद करते समय अनुवादक को ध्यान में रखना चाहिए।

1. अनुवाद की सामग्री को ध्यान से पढ़ा जाए और वाक्य संरचना का भली–भांति विश्लेषण किया जाए और उसमें निहित भाव को ग्रहण किया जाए।
2. मूल पाठ के लंबे और जटिल वाक्यों को लक्ष्य भाषा की प्रवृति के अनुसार अलग करें।
3. मूल पाठ के अंतर्गत वाक्य में शब्द के स्थान पर पूरा ध्यान दें। वाक्य में शब्द का स्थान बदल जाने से कभी–कभी अर्थ का अनर्थ हो जाता है।
4. लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द ढूंढते समय मूल पाठ के विषय/संदर्भ को ध्यान में रखें। अनुवाद में अभिव्यक्ति सरल, सुबोध और सहज भाषा में करें ताकि जिसके लिए अनुवाद किया जा रहा है, वह उसे अच्छी तरह समझ सके।
5. लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति करते समय मूल पाठ के भाव को बरकरार रखा जाए और वाक्य लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप हो।
6. हमेशा कोशजीवी अनुवाद नहीं होना चाहिए किंतु पारिभाषिक, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों के लिए केवल स्वीकृत पर्याय ही प्रयोग में लाएं।

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

7. किसी संस्था के नाम का अनुवाद तब तक न करें, जब तक यह सुनिश्चित न हो कि उसका नाम लक्ष्य भाषा में भी अनुमोदित है।

8. शब्द प्रतिशब्द अनुवाद से बचें क्योंकि वाक्य का अपना वाक्यार्थ होता है।

9. अनुवादक को निंदक या त्रुटि निकालने वाले व्यक्ति को सदैव अपने पास रखना चाहिए। कहा भी गया है कि

निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटि छवाय,
बिन पानी साुबन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

10. अनुवाद केवल सिद्धांत जान लेने से नहीं आता। ''करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान'' के मूल मंत्र को गांठ बांधकर अनुवाद के मैदान में उतरना चाहिए।

11. अनुवादक को रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता के गुणों को भी आत्मसात करना चाहिए। अनुवाद ''मक्षिका स्थाने मक्षिका'' जैसा न हो, इसका प्रयास करना चाहिए।

12. अनुवादक मूल रचनाकार तथा पाठक के बीच सेतु बनाता है। यह सेतु ईमानदारी, परिश्रम तथा निष्ठा के सीमेंट से ही बनता है इसलिए कभी–कभी अनुवादक को ''कुछ जोड़ कुछ छोड़'' की नीति भी अपनानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त भी कई सावधानियाँ हैं जो अनुवादकों को ध्यान में रखनी चाहिए। अनुभव से अनुवाद प्रतिदिन निखरता है और जो शब्दों के सागर में जितना डूबेगा और जितना गहरा जाएगा, उसे ही गहरे समुद्र से मोती मिलेंगे।

अंत में इतना ही कहूंगी कि अनुवाद वास्तव में ज्ञान–विज्ञान के विस्तार, प्रतिभा को पंख लगाने का महान कार्य है। अनुवादक इस महान कार्य को लक्ष्य तक पहुंचाता है, अतः वह सामान्य प्राणी नहीं अपितु सामान्य होकर भी एक विशिष्ट प्राणी है, अतः इस धरा पर उसके महत्व को किसी से कम न आंका जाए।

धीरे चलो

नदी के पास से होते हुए एक भिक्षु गुजर रहे थे। वहीं पास में एक बुजुर्ग बैठे थे। भिक्षु ने बूढ़े से पूछा, 'यहां से नगर कितनी दूर है ? सुना है, सूरज ढलते ही नगर का द्वार बंद हो जाता है। अब शाम होने ही वाली है। क्या मैं वहां पहुंच जाऊंगा?'

बूढ़े ने कहा, 'धीरे चलो तो पहुंच भी सकते हो।' भिक्षु यह सुनकर हैरत में पड़ गया। वह सोचने लगा कि लोग कहते हैं कि जल्दी से जाओ, पर यह तो विपरीत बात कह रहा है। यह तो मुझ भिक्षु का मज़ाक उड़ा रहा है। जरूर ये कोई मसखरा है।

वह तेजी से भागने लगा। रास्ता उबड़–खाबड़ और पथरीला था। थोड़ी देर बाद ही भिक्षु लड़खड़ा कर गिर पड़ा। किसी तरह वह उठ तो गया, पर दर्द से परेशान हो रहा था। उससे चला नहीं जा रहा था। चलने में काफी दिक्कत हो रही थी। वह किसी तरह आगे बढ़ा, लेकिन तब तक अंधेरा हो गया। उस समय वह नगर से थोड़ी–ही दूर पर था। उसने देखा कि दरवाजा बंद हो रहा है। वह दुखी होने लगा।

यादें

मीनाक्षी गम्भीर*

एहसासों के कारवां को कुछ अल्फाज़ों पर समेटने चली हूँ। हर दर्द, हर खुशी, हर ख्वाब को कुछ लफ्ज़ों में बदलने चली हूँ। न जाने कौन सी हसरत है, अनकहे, अनगिनत अरमानों को अपनी कलम से लिखने चली हूँ।

नगमे हैं, शिकवे हैं, किस्से हैं, बातें हैं,
बातें भूल जाती हैं, यादें याद आती हैं।

सभी पाठकों को स्नेहिल अभिवादन, जी हाँ आप सही समझे, इस लेख में मैं यादों के बारे में ही बात करने चली हूँ – सभी की जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा –यादें। सभी के पास होती हैं, किसी के पास कुछ कम तो किसी के पास कुछ ज्यादा।

हम सभी की जिंदगी में तमाम यादें होती हैं जो हमारे दिल में बसी होती हैं। ये यादें किसी डायरी, फोटो, कार्ड, गिफ्ट या लैटर के रूप में हमारी यादों के पिटारे में कैद होती हैं। जब भी हम अपने उस पिटारे को खोलते हैं तो उन सभी यादों के स्पष्ट चित्र हमारी आँखों के सामने बन जाते हैं और हमारे दिल को शायद ठीक ऐसा महसूस होता है कि हम किसी मशीन के जरिये वापस उस वक्त में लौट गये हैं। ये वो लम्हें होते हैं जिनको जीते वक्त हमको ये एहसास भी नहीं होता है कि इनके बीतने के बाद इनकी हू–ब–हू तस्वीर हमारे दिल में छप जायेगी। ऐसे लम्हें से हर एक की जिंदगी सजी होती है। इन लम्हों को इंसान अपनी आखिरी सांस तक नहीं भूलता। पहली बार स्कूल जाना, लाइफ की पहली मित्र, परीक्षा के टाइम माँ का रात भर साथ में जागना, दोस्तों के साथ आढ़े–तिरछे मुँह बनाते हुए तस्वीरें खिंचवाना, सरप्राइज पार्टी देना, कॉलेज में एड्मिशन के उत्साह के साथ बारहवीं क्लास की फेअरवेल, पहली बार खुद को साड़ी में सँभालना, पापा की दी हुई सीख को याद रखना, ऐसी न जाने कितनी ही यादें हम अपने उस बक्से में कैद कर के रखते हैं। अगर अपने जीवन के इन सभी पलों को किसी न किसी रूप में अपने पिटारे में ना भी संजोया होता, फिर भी हम इनका चित्र अपनी आंखें बंद करने पर देख सकते हैं और अगर चित्रकार होते तो इन सभी खूबसूरत चित्रों को कागज पर जरूर उकेरते।

आप सबको ये लग रहा होगा कि मैं सिर्फ खूबसूरत यादों की बात कर रही हूँ जबकि जीवन में तो कड़वी यादें भी होती हैं। हमने जब उन बुरे पलों को जिया था तब हमें जितना घुटना था, सहना था, वो सह चुके। अब अगर हम फिर से उन बुरी यादों को टटोलेंगे तो अपना आज खराब करेंगे, तो क्यूँ हम बार–बार उन पलों को याद करें जिसमें सिर्फ दर्द, तकलीफ, सन्नाटा और आंसू हों। यादें हमारे बीते जीवन के खट्टे–मीठे पलों का एक खजाना होती हैं। जो हमारे हृदय के किसी कोने में दबी होती हैं। एक झलक, किसी पन्ने पर लिखे कुछ शब्द, मिट्टी की सोंधी खुशबू, किसी की मुक्त हंसी कुछ भी दिल की गहराइयों में छिपे यादों के इस सागर में हलचल मचा देती हैं। जब कभी तन्हाई में हम बहुत अकेलापन महसूस करते हैं, तब हमारे मानस पटल पर किसी चलचित्र की भांति हम इन्हें देख सकते हैं। इन यादों के साथ कभी हंसते हैं तो कभी हमारी आँखें छलक उठती हैं।

वैसे बीती बातों को याद करना आसान है किन्तु जब कोई हमें उनके बारे में लिखने को कहता है तो हम दुविधा में पड़ जाते हैं। क्या सचमुच जो हमारे जीवन में बीता वह लिखने के योग्य है। यदि हाँ, तो कहाँ से प्रारंभ करें। किन घटनाओं का जिक्र करें और किन्हें छोड़ दें इत्यादि। सबसे बड़ी बात यह है कि जो यादें हमारे व्यक्तिगत जीवन से इतनी गहराई से जुड़ी हैं, उन्हें सब के साथ साझा करने में एक झिझक सी होती है। क्योंकि अपने व्यक्तिगत पलों को दूसरों के साथ बाँटने में पूर्ण ईमानदारी बरतने की जरूरत होती है। हम तोड़–मरोड़ कर अपने मुताबिक उन्हें पेश नहीं कर सकते हैं। जीवन में जो कुछ भी घट चुका है, उसका हमारे वर्तमान पर भी प्रभाव पड़ता है। बचपन की सुनहरी यादें हमें जीवन भर तरोताज़ा रखती हैं। किन्तु जीवन में उतार–चढ़ाव आते ही रहते हैं। कई बार हमें जीवन में अवांछित परिस्थितियों का सामना

*निजी सचिव, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

भी करना पड़ सकता है। ये भयानक यादों के रूप में हमारे दिल में बस जाती हैं, जिनका प्रतिकूल प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है। ये जीवन की गति को बाधित करती हैं। हम उस घटना विशेष में ही उलझ कर रह जाते हैं जबकि जीवन में आगे बढ़ते रहना अति आवश्यक है। हमारे लिए उन बुरी यादों से पीछा छुड़ाना मुश्किल होता है किन्तु फिर भी हमें चाहिए कि उन यादों से स्वयं को आजाद करें ताकि जीवन की यात्रा में कोई ठहराव न आये।

अगर आपको अपनी जिंदगी की उन तमाम खूबसूरत यादों का चित्र अपनी आँखें बंद करने पर कुछ धुंधला नजर आ रहा हो तो मेरी आपसे ये गुज़ारिश है कि अपनी उन यादों के पिटारे को अपनी अलमारी में बंद ना रखें, उसको खोलकर, उसमें मौजूद तमाम गिफ्ट, चिट्ठियाँ, तस्वीरें, डायरी को छूकर, देखकर, पढ़कर, महसूस करके फिर से उन यादों का रंग अपनी जिंदगी में चढ़ा लीजिये और हां! एक बार उस खूबसूरत गुलाब को उठाकर उसको अपनी नाक के करीब जरूर ले जाइएगा, आपको उसकी महक ठीक वैसी ही महसूस होगी जैसी कि गुलाब को डायरी में रखते वक्त हुई थी।

जीवन की सांझ में जब व्यक्ति सारी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाता है, तब अक्सर अकेला भी पड़ जाता है। इस समय में जीवन में संजोई गई यादें ही उसका सहारा होती हैं। यादों का एल्बम सजाते समय उसमें उन यादों को ही स्थान देना चाहिए जो आपको आगे बढ़ने में मदद करें, जिन्हें अपने मानस पटल पर देख कर हम स्फूर्ति से भर जाएँ और आगे आने वाली कठिनाइयों का सामना कर सकें।

ये यादें हैं तो हम हैं,
हमारी मुस्कुराहट है।
दूर हो हम आपसे जितना भी,
पर जिंदगी में आपकी आहट है।
माना हर एक की जिंदगी कुछ आहत है,
पर हमको अपनी जिंदगी को, अपनी यादों से,
जिंदा रखने की चाहत है।

खोटा सिक्का

यह एक सूफी कथा है। किसी गाँव में एक बहुत सरल स्वभाव का आदमी रहता था। वह लोगों को छोटी–मोटी चीजें बेचा करता था। उसी से उसका गुजारा हो जाता था।

उस गांव के सभी निवासी यह समझते थे कि उसमें निर्णय करने, परखने और आँकने की क्षमता नहीं है। इसी का फायदा उठाकर कई लोग उससे चीजें खरीदने के बाद उसे खोटे सिक्के दे दिया करते थे। वह उन सिक्कों को खुशी–खुशी ले लेता था। किसी ने उसे कभी यह कहते नहीं सुना कि यह सही है और वह गलत है। कभी–कभी तो उससे सामान लेने वाले लोग उसे कह देते थे कि उन्होंने दाम चुका दिया है और वह पलटकर कभी नहीं कहता था कि नहीं, तुमने पैसे नहीं दिए हैं। वह सिर्फ इतना ही कहता कि ठीक है। साथ ही उन्हें धन्यवाद भी कहता।

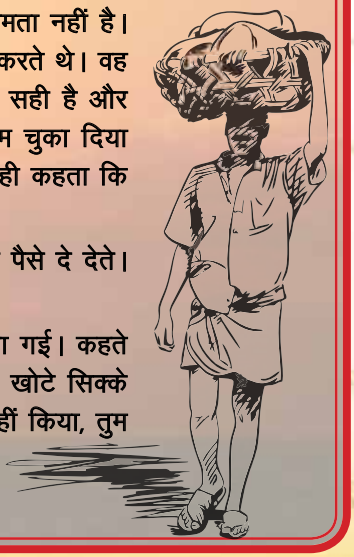

दूसरे गाँवों से भी लोग आते और बिना कुछ दाम चुकाए उससे सामान ले जाते या उसे खोटे पैसे दे देते। वह किसी से कोई शिकायत नहीं करता।

समय गुजरता गया। वह आदमी बूढ़ा हो गया। एक दिन उसकी मौत की घड़ी भी करीब आ गई। कहते हैं कि मरते समय उसके अंतिम शब्द थे–मेरे खुदा, मैंने हमेशा ही सब तरह के सिक्के लिए, खोटे सिक्के भी लिए। मैं भी एक खोटा सिक्का ही हूँ। मुझे मत परखना। मैंने तुम्हारे लोगों का फैसला नहीं किया, तुम भी मेरा फैसला न करना।

ऐसे आदमी को खुदा कैसे परखता।

शमशेर बहादुर सिंह

डॉ. मीना राजपूत*

हिंदी साहित्य को समृद्ध करने एवं उसे नई दिशा देने वालों में एक सशक्त, समर्थ व विशिष्ट हस्ताक्षर हैं– शमशेर बहादुर सिंह। आधुनिक कविता की एक विशेष धारा नयी कविता के मौलिक व अद्वितीय कवि शमशेर बहादुर ने अपनी लेखनी के माध्यम से संपूर्ण साहित्य को परंपरा और आधुनिकता के ढाँचे से निकालकर युगानुरूप बनाने का अथक प्रयास किया। अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से उन्होंने काव्य विधा को नए आयाम दिए, नवीनता के साथ उसे सजाया–संवारा और उसमें नई चेतना का संचार किया। एक ओर जहाँ उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों व आस्थाओं को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया, वहीं दूसरी ओर जीवंत कला मूल्यों व सौंदर्य के विभिन्न उपादानों की सार्थक स्थापना की। काव्य को नया अर्थ, नया साहस, विशेष शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करने का सार्थक प्रयास किया। विचारों में प्रगतिशील और कवि–कर्म में प्रयोगशील शमशेर के काव्य में प्रत्येक भावना व संवेदना को स्थान मिला, तथापि सौंदर्यवादी और प्रयोगवादी चेतना उनके काव्य की दो प्रमुख विशेषताएं रहीं, जिसके चलते नयी कविता को रोमांटिक भाव–बोध सहित काव्य सृजन–प्रक्रिया को गति प्रदान करने में मदद मिली। संघर्षशील कवि शमशेर ने अपने जीवन में जो देखा, भोगा और समझा उसे कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया। संस्कृत साहित्य की उदात्तता, प्रकृति प्रेम का उदात्त रूप, मध्यकाल का वैष्णव भाव, जीवन और जगत के प्रति अद्वैत दृष्टि तथा गहरी मर्मस्पर्शी वेदना की टीस ने उनके काव्य को विशिष्टता प्रदान की।

यथार्थवादी व संवेदनशील कवि शमशेर बहादुर सिंह का जन्म 13 जनवरी, 1911 को देहरादून में हुआ। मुजफ्फर नगर के एलम गांव के मूल निवासी शमशेर ने आरंभिक शिक्षा देहरादून व गोंडा में प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. प्रीवियस किया। 'रूपाभ', 'कहानी', 'माया' जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं के सहायक संपादक और 'नया साहित्य' के संपादक रहे। 'मनोहर कहानियाँ' तथा 'नया पथ' में संपादन सहयोग दिया। अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, फारसी, फ्रेंच के विद्वान शमशेर ने 12 वर्षों तक दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत हिंदी–उर्दू कोश योजना में काम किया। 4 वर्षों तक उज्जैन में मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित प्रेमचंद सृजनपीठ पर रहे। वैदिक ऋचाओं, फारसी–अरबी काव्य परंपरा व आधुनिक यूरोपीय कवियों से प्रेरणा प्राप्त शमशेर का समूचा जीवन कविता को समर्पित रहा।

नया सीखने, नया रचने और नया गढ़ने की ललक रखने वाले शमशेर ने हिंदी भाषा को अछूते बिंबों, विभिन्न रंगों, नए प्रतीकों, उपमानों और अपनी निजी, सहज व विशिष्ट भाषा से समृद्ध किया। शांत, गंभीर और गहन स्वभाव की तरह उनकी काव्य भाषा व भावोद्वेग शांत, गंभीर तथा द्वंद्व रहित हैं। उनके काव्य में बिंबात्मकता, प्रतीकात्मकता और चित्रात्मकता की त्रिवेणी प्रवाहित होती दिखाई देती है। शिल्प–कौशल में विशेष रुचि रखने वाले शमशेर की कविता वस्तु और शिल्प का, रूप और रस का, उमंग और भाषा का, चित्र और संगीत का, बिंब और प्रतीक का, लय और सौंदर्य का, वक्रोक्ति और रूपकों का अनोखा और अद्भुत् संगम है।

प्रेम को मनुष्य की एक आधारभूत आवश्यकता मानने वाले प्रेम और सौंदर्य के चितेरे कवि शमशेर की कविताओं में प्रेम का रंग गहरे पैठा हुआ है। उनके प्रेम में ऐंद्रियता, मांसलता और रोमानियत के साथ वह उदात्त भाव भी है, जो व्यक्तिगत प्रेमानुभूति से पैदा होकर वैश्विक प्रेम भाव में रूपांतरित होता नजर आता है। निजी प्रेम, मानव प्रेम, देश प्रेम, विश्व प्रेम आदि अनेक स्तरों पर उन्होंने प्रेम का वर्णन किया है। 'टूटी हुई, बिखरी हुई' कविता में शमशेर के प्रेम

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

में गहराई है, एकांत समर्पण है और तीव्र वेदना भी है–

मेरी बांसुरी है एक नाव की पतवार –
जिसके स्वर गीले हो गए हैं
छप्–छप्–छप् मेरा हृदय कर रहा है.....
छप छप छप।

अपनी यादों में बसी सहज, सरल माँ के चेहरे, माँ के स्पर्श, उसकी मुस्कान, उदास छवि के प्रति अपनी संवेदनाओं को शमशेर ने 'धूप कोठरी के आइने में खड़ी' कविता के माध्यम से कुछ इस तरह व्यक्त किया है–

बहुत नन्हा फूल
उड़ गई
आज बचपन का
उदास माँ का मुख
याद आता है।

प्रेम के नाम पर एक असंभव स्थिति की अतिकल्पना शमशेर की विशेषता है। 'चुका भी हूँ मैं नहीं' नामक कविता में प्रेम भाव व्यापक जीवन–मूल्य के रूप में उभरा है–

चुका भी हूँ मैं नहीं
कहाँ किया मैंने प्रेम अभी।
जब करुँगा प्रेम
पिघल उठेंगे युगों के भूधर
उफन उठेंगे सात सागर
किंतु मैं हूँ मौन आज
कहाँ सजे मैंने साज अभी।
सरल से भी गूढ़, गूढ़तर
तत्व निकलेंगे अमित विषमय
जब मथेगा प्रेम सागर हृदय।

मानवता के उत्थान के लिए शांति को एक अनिवार्य अंग मानने वाले शमशेर ने शांति के प्रति अपनी अटूट निष्ठा व्यक्त की है। शमशेर ने कविता 'अमन का राग' में विश्वशांति, मानवता और धर्म निरपेक्षता का व्यापक संदेश दिया है। उनकी यह कविता शांति, सहयोग, एकजुटता और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भावनात्मक एकता के भाव से ओतप्रोत है।

मुझे अमेरिका का स्टैचू ऑफ लिबर्टी उतना ही प्यारा है
जितना मास्को का लाल तारा
और मेरे दिल में पेकिंग का स्वर्गीय महल
मक्का–मदीना से कम पवित्र नहीं
मैं काशी में उन आर्यों का शंखनाद सुनता हूँ
जो वोल्गा से आए
मेरी देहली में प्रल्हाद की तपस्या दोनों दुनियाओं की
चौखट पर
युद्ध के हिरण्यकश्यप को चीर रही हैं।

अत्यंत संवेदनशील कवि शमशेर में यथार्थ का गहरा बोध होने के साथ अपनी बात को कम–से–कम शब्दों में संप्रेषित करने की कला भी है। 'बात बोलेगी' कविता में राष्ट्रीय जीवन की त्रासदी को इतने कम शब्दों में जीवंत कर दिया है–

दैन्य दानव, काल
भीषण, क्रूर
स्थिति, कंगाल
बुद्धि, घर मजूर।
सत्य का
क्या रंग है?
पूछो
एक संग

शांत और कोमल भावों के चितेरे शमशेर ने अपनी विशिष्ट अनुभूति को सामाजिक अनुभूति में मुखरता के साथ रूपांतरित करते हुए कला, साहित्य, संस्कृति और राजनीति की ठेकेदारी करने वालों के दोहरे चरित्र को 'बाढ़ 1948' में बेनकाब किया है। उनकी इस कविता का कथ्य और शैली, भाषा और संवेदना केवल पीड़ा ही नहीं, बल्कि जबर्दस्त आक्रोश और धारदार व्यंग्य से ओतप्रोत है–

मुझको चना नहीं चाहिए, महादेवी जी
हालांकि उसी पर मेरा गुजारा भी है,
जनता का अपने हृदय में ध्यान धरता हूँ
जनार्दन की तरह,
कि वही इंकलाब का वरदान देने वाली है।
वही चने की बोरियों पर बैठेगी....
संस्कृति और कल्चर के गेहूँ के एक–एक दाने पर
..... पकाकर ..... आटा करके
और जो हमारी जिंदगी में हज्म भी होगा
ईमानदारी की कमाई की तरह – 'शाश्वत कला'
गहरे भाव की तरह, देवताओं के सुशुप्त मन में।
(भाष्य) वह शाश्वत कला जो

गांव की बहू–बेटी की हथेली की मेंहदी है,
वह गहरा भाव–
जो पुरखों के बनाए कुएं का कभी न चुकने वाला
मीठा पानी है, जिसे उस बहू–बेटी के हाथ
सुबह–शाम घर के लिए रोज ताजा खींचकर
निकालते हैं।

ईश्वर को भी धर्म और भाषा के नाम पर बांटे जाने पर अपने दर्द की अभिव्यक्ति करते हुए शमशेर ने कहा है–

ईश्वर, अगर मैंने अरबी में प्रार्थना की,
तू मुझसे नाराज हो जाएगा ?
अल्लाह यदि मैंने संस्कृत में संध्या कर ली
तो तू मुझे दोजख में डालेगा ?
लोग तो यही कहते घूम रहे हैं
तू बता, ईश्वर !
तू ही समझा, मेरे अल्लाह !

शमशेर की कविताओं में प्रकृति के अनेक रूप हैं। शमशेर ने प्रकृति के नैसर्गिक भौतिक सौंदर्य का विराटता और सजीवता के साथ यथार्थपरक मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। उन्होंने प्रकृति को पूरी स्वतंत्रता, निश्छलता और उसकी अपनी सत्ता के वैभव के साथ अनेक जीवंत बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 'उषा' कविता में सूर्योदय से पूर्व के आकाश का गहरे, सूक्ष्म सौंदर्य से युक्त एक दृश्य देखिए–

प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ/राख से लीपा हुआ चौका
(अभी नीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह/जैसे हिल रही हो
और .....
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

शमशेर ने रंगों की कई छटाओं का अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग किया है। प्रेम और प्रकृति को एक साथ मिलाकर लिखी उनकी प्रेम कविता 'एक पीली शाम' में पीलापन शाम का ही नहीं है, वरन् पीलापन प्रेम पर भी छाया हुआ है। आम बोलचाल की भाषा में रचित इस कविता में पीली का बिंब बहुत ही आत्मीय तथा असीम है, जो पतझर, कमजोरी, अवसाद, थकान, उदासी आदि कई भंगिमाओं के साथ उभर कर आया है। इस संदर्भ में प्रिया का मुख–कमल म्लान होना कविता की संरचना और कवि की भावना दोनों के अनुरूप है। अतल में गिरने से पहले संकोच का, अटकाव का एक क्षण है जिसमें आँसू अपनी जीवितता ग्रहण करता है। शाम, तारक दल और आँसू का एक साथ अतल में गिरना विरहानुभूति दर्शाता है–

एक पीली शाम
पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता/शांत
मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुखकमल
कृश म्लान हारा–सा
(कि मैं हूँ वह मौन दर्पण में तुम्हारे कहीं ?)
वासना डूबी
शिथिल काजल में
लिए अद्भुत् रूप–कोमलता
अब गिरा अब गिरा वह अटका हुआ आँसू
सांध्य तारक–सा
अतल में।

शमशेर में वातावरण संवेदना के साथ एकाकार हो जाता है। 'राग' कविता का एक अंश देखिए जहां प्रतीकात्मक रूप में मनुष्य और प्रकृति के बीच में यथार्थ की खोज है। यहां 'राग' के अंतर्गत मानवीय भाव, कवि का अपना व्यक्तित्व, रंग की विविध अर्थ छटाएं हैं। राग का कोई निश्चित अर्थ नहीं, यह अपने में समूचा संवेदन है। यह मैं और शाम के बीच में संवाद नहीं, बल्कि कवि का गहराता आत्मालाप है–

मैंने शाम से पूछा –
या शाम ने मुझसे पूछा
इन बातों का मतलब ?
मैंने कहाः
शाम ने मुझसे कहा
राग अपना है।

शमशेर ने सुंदरता को निरंतर महसूस किया, जिसे अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया। इसी पर

आधारित उनकी कविता 'सौंदर्य' की कुछ पंक्तियां–

ओ स्पर्श
मुझे क्षमा करना
कि तुम मुझी से होकर मुझी से परे हो
ओ माध्यम
क्षमा करना
कि मैं तुम्हारे पार जाना चाहता हूँ
वह जो तुम्हारे हृदय में बन रहा है
मैं उस साज में एक चाँद देखता हूँ
उसको पकड़ना चाहता रहा हूँ
मेरी अपनी इस चाह के अलावा मैं कुछ नहीं
कुछ नहीं।

शमशेर की कविता के बारे में नंदकिशोर नवल की टिप्पणी महत्वपूर्ण है। वे लिखते हैं– ''शमशेर के कवि मानस की बनावट अत्यंत जटिल है। उसमें प्रेम है तो सौंदर्य भी, मनुष्य है तो प्रकृति भी, व्यक्ति भी है तो समाज भी और देश है तो संसार भी। ये सब उनमें परस्पर घुले–मिले हैं और उसी रूप में उनकी कविताओं में अभिव्यक्त होते हैं।... ..... इसी कारण शमशेर हिंदी के प्रगतिशील कवियों में ही नहीं, सभी आधुनिक कवियों में अत्यंत विशिष्ट कवि हैं।''

बिंबों और प्रतीकों के प्रयोग में पारंगत शमशेर की कविता में बिंब मांसल हैं तो कठोर भी, प्रवाही हैं तो स्थिर भी, रंगधर्मी हैं तो गतिधर्मी भी तथा संवेदनधर्मी हैं तो विचार धर्मी भी। उनके बिंब मात्र बिंब नहीं हैं। उनके बिंब उनकी रचनात्मकता व उनकी यथार्थ दृष्टि को व्यापक अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। उनके काव्य में उषा, जल, पर्वत, मेघ, लहर, सागर, सूर्य जैसे सामान्य बिंब भी विशिष्ट व प्रौढ़ हो जाते हैं। शांत, तरल, गंभीर संदर्भ में भी सामान्य बिंब विशेष रूप लेकर आते हैं। शमशेर की 'न पलटना उधर' कविता की पंक्तियों में कुछ पात्र हैं, कथानक है और साथ ही एक पार्श्वभूमि है जिसकी सापेक्षता में कविता गतिशील होती है–

न पलटना उधर
कि जिधर ऊषा के जल में
सूर्य का स्तंभ हिल रहा है
न उधर नहाना प्रिये!

चित्रात्मक संवेदना के कवि शमशेर के काव्य में बिंब और चित्र एक–दूसरे से घुल–मिल कर चित्र–सी स्थिरता और कविता–सी तरलता दोनों का आनंद देते हैं। 'इतने पास अपने' कविता एक–दूसरे में छिपे और पारदर्शी चित्र बिंब का एक अनुपम रूप है–

एक स्वच्छ और निर्मल
कविता यहां बह रही है
एक जवान कविता
वास्तव में, ये दो कैनवास हैं
एक तरलः एक स्थिर
दोनों पारदर्शी
एक दूसरे में छिपे हुए।

'पूर्णिमा का चाँद' कविता प्रकृति के सौंदर्य के अनूठे व अनुपम बिंब विधान व उपमान का एक अत्यंत सहज चित्र है, जिसमें आसमान को गलते हुए प्रस्तुत किया गया है–

चाँद निकला बादलों से पूर्णिमा का।
कल रहा है आसमान।
एक दरिया उबलकर पीले गुलाबों का
चूमता है बादलों के झिलमिलाते
स्वप्न जैसे पांव।

डॉ. नामवर सिंह के अनुसार – ''शमशेर की कार्यशाला सचमुच एक विशाल चित्रशाला है। रंगों का महोत्सव। कहीं धूप आइने में खड़ी है, कहीं धूप थपेड़े मारती है थप्–थप्। केले के हातों से पातों से। केले के थंबों पर। और कहीं ऊषा के जल में सूर्य का स्तंभ हिल रहा है। अकेले एक धूप के कितने–कितने रूप। इस चित्रशाला में इतने रंगों की लीला है, तरह–तरह के रंगों की इतनी घुलावट है कि सबका विवरण देना लगभग असंभव है। हिंदी कविता में रंगों का ऐसा महोत्सव दुर्लभ है। सचमुच ही कवि घंघोल देता है। हिला–हिला देता है कई दर्पनों के जल।''

शमशेर को विश्वास है कि 'बात बोलेगी, हम नहीं' और जब बात बोलेगी, तो अवश्य ही दिल के राज खोलेगी। 'टूटी हुई बिखरी हुई' कविता में प्रकट हुआ उलझाव जीवन के टूटन और बिखराव की अनुभूति को अभिव्यक्त करता है। शमशेर को 'खाल' भी कभी अपने से चिपकी हुई और कभी अपने से अलग प्रतीत होती है, जो जीवन की विसंगति व उलझाव को बिंबात्मक रूप में प्रस्तुत करती है और पैना प्रभाव उत्पन्न करने की विशिष्ट क्षमता रखती है–

टूटी हुई बिखरी हुई चाय
की दली हुई पांव के नीचे
पत्तियां
मेरी कविता
बाल, झड़े हुए, मैल से रूखे, गिरे हुए,
गर्दन से फिर भी चिपके
.....कुछ ऐसी मेरी खाल
मुझसे अलग–सी, मिट्टी में
मिली–सी।

शमशेर ने साहित्य की कई विधाओं को अपनी लेखनी से समृद्ध बनाया है। 'कुछ कविताएं', 'कुछ और कविताएं', 'शमशेर बहादुर सिंह की कविताएं', 'चुका भी हूँ नहीं मैं', 'इतने पास अपने', 'उदिता', 'बात बोलेगी', 'शमशेर की गजलें', 'काल तुझसे होड़ है मेरी', 'प्रतिनिधि कविताएं' इनके काव्य–संग्रह है। 'दूसरा सप्तक' में अन्य कवियों के साथ भी कविता संकलित हैं। 'दोआब' शमशेर का निबंध–संग्रह हैं। 'प्लाट का मोर्चाः कहानियां और स्केच' कहानी–संग्रह एवं 'शमशेर की डायरी' डायरी लेखन है। उन्होंने साहित्य का अनुवाद कार्य भी किया है, यथा– 'कामिनी', 'उर्दू साहित्य का संक्षिप्त इतिहास', 'षडयंत्र', 'पृथ्वी और आकश', 'आश्चर्य लोक में एलिस' आदि।

शमशेर बहादुर को 1977 में 'चुका भी हूँ मैं नहीं' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और उसी वर्ष मध्यप्रदेश साहित्य परिषद के तुलसी पुरस्कार, 1987 में मध्यप्रदेश शासन का हिंदी कविता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, 1988–89 में कबीर सम्मान से सम्मानित किया गया।

संक्षिप्तता के कवि शमशेर की रचना प्रक्रिया और संवेदनात्मक संरचना में संक्षेपण या कथन संक्षिप्ति बहुत महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। कम–से–कम शब्दों में पूरे प्रसंग को ध्वनित करना शमशेर की विशिष्टता है। वे स्थूल दृश्यों का निर्माण नहीं करते, बल्कि सूक्ष्म बिंबों में अपनी अनुभूतियों को तराशते हैं। अपनी बात को विस्तार या व्यापकता से न कहकर कभी संक्षिप्त, कभी अस्पष्ट और कभी संकेत रूप में कहते हैं। आधे–अधूरे वाक्यों से वे बहुत कुछ अनकहा–सा कहकर बाकी पाठक की कल्पना और काव्य–विवेक पर छोड़ देते हैं। यही उनकी रचना प्रक्रिया का सबसे उत्कृष्ट पहलू है।

भारत माता

कविता

निर्भय नारायण गुप्त 'निर्भय'*

हम भारत के लोग सदा, मानवता को अपनायेंगे,
भारत माता की जय जय, जय वंदे मातरम् गायेंगे।।

भारत का इतिहास संस्कृति, कितनी गौरवशाली हैं,
चंद्रगुप्त विक्रमादित्य और राम कृष्ण बलशाली हैं।
पौरव और अशोक सभी ने मानवता की ध्वजा लगाई,
आर्य, बौद्ध, महावीर सभी ने, धर्म पताका फहराई।
मानव धर्म बड़ा सबसे, हम सबको गले लगायेंगे।।
हम भारत के लोग सदा, मानवता को अपनायेंगे।।

राणा प्रताप और वीर शिवाजी सबने इसे दुलारा है,
राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह, ने दे लहू संवारा है।
वीर सुभाष, महात्मा गांधी, सावरकर सेनानी को,
जिन वीरों ने जान गंवाई, उन सब की कुर्बानी को।
वंदन नमन हमारा, उनको शीश झुकायेंगे।।
हम भारत के लोग सदा मानवता को अपनायेंगे।।

हम भारत के लोगों ने ही, अपने लिये संविधान रचा,
किया समर्पित जन गण को पावन एक विधान रचा।
कर्तव्यों और अधिकारों के, इसमें सभी विधान किये,
रंग, लिंग और जाति धर्म से, भेद न हो प्रावधान किये।
जो कुछ संविधान में वर्णित, सब अपनायेंगे।।
हम भारत के लोग सदा, मानवता को अपनायेंगे।।

आज विश्व में भारत ने, फिर से परचम लहराया है,
सभी राष्ट्र अब देख रहे, जिस तरह मार्ग दिखलाया है।
चले चंद्र की और, शांति की ध्वजा हाथ में थामी हैं,
ज्ञान और विज्ञान योग बंधुत्व के, हम अनुगामी हैं।
सकल विश्व को साथ लिये, हम कदम बढ़ायेंगे।।
हम भारत के लोग सदा, मानवता को अपनायेंगे।।

*पूर्व उप महाप्रबंधक, 5/49 विकास खण्ड गोमती नगर, लखनऊ–226010

जिंदगी जिंदादिली का नाम है

रजनी सूद*

जब से सृष्टि की रचना हुई है तबसे ही सृष्टि में उथल–पुथल होती आई है। कभी सर्दी, कभी गर्मी, कभी बारिश, कभी भूकंप। मनुष्य ने क्या–क्या बदलते नहीं देखा और अब तो नई–नई बीमारियाँ, नए–नए वायरस जिनमें से अभी कोरोना वायरस (कोविड–19) ने समस्त संसार को हिला कर रख दिया है। कभी किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि स्थिति इतनी भयानक हो जाएगी कि मनुष्य को अपने ही घरों में कैद होकर रहना पड़ेगाा। वो मनुष्य जो अर्श पर पहुँच गया था फिर से फर्श पर आ गया। वैसे तो जब से ईश्वर ने मानव की रचना की, मानव का जीवन कभी भी सदैव एक सा नही रहा, वर्तमान युग की बात करें तो मानव में, मानव मन में लगातार बदलाव होते आए हैं। वर्तमान युग में अपने मन को काबू करना बेहद कठिन है, हर इंसान सुखों की चाह करता है, क्या आपने कभी ऐसा देखा है कि कोई इंसान दुखों की चाहत करता हो, इंसान को सदैव सुखों की चाहत रहती है इसलिए सुख उससे दूर भागते हैं वैसे भी प्रकृति का नियम है हम जिस चीज को पाने की इच्छा करते हैं वह सदैव हमसे दूर होती है, हमें नहीं मिल पाती। बिरले ही लोग होते हैं जिनकी समस्त इच्छाएं पूरी होती है। मेरी नजर में तो शायद ऐसा कोई शख्स होगा जिसकी सारी इच्छाऐं ईश्वर ने पूरी की हों। तब क्या किया जाए? क्या मनुष्य कुछ कर सकता है? जिसका न जीवन पर बस न मृत्यु पर बस। जीवन का आरंभ अपने रोने से होता है और जीवन का अंत दूसरों के रोने से मन में सदैव प्रश्न उठता है कि आखिर ईश्वर ने मनुष्य की रचना क्यों की? सृष्टि की रचना करने की क्या आवश्यकता थी ? खैर चूंकि ईश्वर ने हमारी रचना की है तो कुछ समझकर ही की होगी क्यूं नहीं हमें पशु या पक्षी बना दिया। मनुष्य का जन्म दिया तो इसका भी कोई न कोई तो कारण होगा। मनुष्य की जिंदगी में सुख और दुख, रात और दिन, हानि और लाभ, जीवन और मृत्यु का आना निश्चित है जिस पर मनुष्य का कोई जोर नहीं तो हम क्या करें? मेरी नजर में केवल समर्पण है क्योंकि इसके अलावा हम कुछ कर भी नहीं सकते।

हमारी इन्द्रियों को जो अच्छा लगता है वह सुख है और जो हमारी इंन्द्रियों को नहीं भाता वह दुःख है। अगर संसार में सारे काम हमारे मन मुताबिक होते रहते हैं तो हमें लगता है कि हम सुखी हैं और यदि ये सारे काम हमारी इच्छाओं के विरुद्ध होते हैं तो हमें लगता है इस संसार में हम से ज्यादा दुखी कोई नहीं। क्या वास्तव में ऐसा है? अगर सब कुछ हमारे हाथ में होता तो राजा हरिश्चन्द्र को ऐसा जीवन न जीना पड़ता जो उन्होंने जीया।

समस्त संसार सूर्य के उदय होने से प्रसन्न होता है क्योंकि उसकी रोशनी से उसे शक्ति मिलती है। लेकिन उल्लू को सूरज की रोशनी में कुछ दिखाई नहीं देता। क्या इसमें सूरज का दोष है ? किसी घर में जब नए सदस्य का आगमन होता है तो सब उसका स्वागत करते हैं इसी तरह से हमें अपने जीवन में आने वाले सुख और दुख का स्वागत करना चाहिए। इंसान को अपने जीवन में अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि समय अनुकूल हो या प्रतिकूल उसे हमेशा मुस्कुराकर उसका स्वागत करना चाहिए। कई बार इंसान अपनी जगह ठीक होता है लेकिन दूसरों का व्यवहार उसे दुखी कर जाता है। जैसे कोई आलसी अपने कूलर की साफ–सफाई नहीं करता तो उससे उत्पन्न डेंगू उसको भी बीमार करेंगे और औरों को भी। इसी तरह से जब मनुष्य का मन बीमार होता है और उसमें उल्टे–पुल्टे विचार आते रहते हैं तो मनुष्य दूसरों को भी उसी निगाह से देखता है जिस तरह के विचार उसके मन होते हैं। यदि कोई व्यक्ति रबड का टायर जलाता है तो उसका धुंआ उसके साथ–साथ दूसरों को भी सांस लेने में दिक्कत करता है। समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो दूसरों को तकलीफ देकर सुख का अनुभव करते हैं। जब मनुष्य पर प्रतिकूल समय आता है तब सब कुछ बिगड़ जाता है। आदमी को बेहद अकेलापन महसूस होने लगता है और अकेलेपन में दुख उसे और दुखी करता है। परिवार के संबंध बिखर जाते हैं, लोगों पर से विश्वास टूट जाता है।

दुर्भाग्य के क्षणों में गलत कार्यों के परिणाम तो गलत होते ही हैं पर कभी–कभी सही कार्य करके भी दुख भोगना पड़ता है। एक आदमी पैदल सड़क पर चल रहा था और उसकी दिशा भी सही थी, परन्तु पीछे से किसी गाड़ी

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

ने उसको टक्कर मार दी हालांकि गलती उसकी नहीं थी। बस मनुष्य की जिंदगी भी ऐसी ही है। सुख हमारी जिंदगी में देर तक नहीं रहते परन्तु दुख हमारी जिंदगी में दूर तक साथ देते हैं। इसलिए ऐसे समय में घबराना नहीं चाहिए। बस ईश्वर को याद करते हुए उस समय को गुजार देना चाहिए। शायद इसीलिए किसी कवि ने कहा है–

ये राहें ले ही जाएंगी मंजिल तक,
हौंसला रख, कभी सुना है अंधेरे ने
सवेरा न होने दिया।

कभी भी जीवन में आए दुखों से घबराना नहीं चाहिए। ईश्वर दुख उन्हीं को देता है जो मजबूर होते हैं। हर इंसान की जिंदगी में कुछ दोस्त ऐसे होते हैं, जिनसे आप अपना सुख–दुख, अच्छाई–बुराई समय–समय पर बांटते हैं। आज के समय में दोस्ती करना और दोस्त की भावनाओं को समझना और भी जरूरी हो गया है।

लॉकडाउन से समाज में एक अवसाद (डिप्रेशन) की स्थिति पैदा हो गई है और इससे उभरने का एक ही रास्ता है, सारे गिले–शिकवे को भुलाकर पारिवारिक संबंधों और रिश्तों को मजबूत बनाया जाए। सोशल मीडिया पर हजार दोस्त बनाकर भी अधूरापन–सा महसूस होता है। उससे बेहतर है जीवन में एक ऐसा दोस्त बनाया जाए जो कृष्ण और सुदामा की दोस्ती की तरह हमेशा यादगार बनकर रहे।

मनोचिकित्सकों एवं विज्ञान की भी यही राय है कि जिनके पास अच्छे दोस्त और सच्चे रिश्ते, शुभचिंतक और परिवारजन आदि होते हैं, जिन्दगी की बड़ी से बड़ी मुश्किलें भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। कितनी भी कठिनाई उनके जीवन में क्यों न आए, उनकी जिंदगी आसान हो जाती है। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो हर रिश्ते के साथ जुड़ सकता है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसने न कभी हार मानी थी और न ही आसानी से हार मानेगा चाहे वह कोई महामारी हो या वायरस।

अंत में........

बिंदास मुस्कुराओ क्या गम है?
जिंदगी में टेंशन किसको कम है।।

अच्छा या बुरा तो केवल भ्रम है,
जिंदगी का नाम ही कभी खुशी, कभी गम है।।

कविता

मैं और मेरी उड़ान

स्वीटी कुमारी*

जो मन मे आये उसे
कागज पर उकेरती।
जो समझ में आये
उसे जीवन में उढ़ेलती।।
दिल की कूची से
रंग भरने की कोशिश करती।
उन काली सफेद लकीरों में,
जो खींची हैं अपने हाथों से
जिन्दगी के पन्नों पर।।
पर छूट जाता है कुछ हिस्सा
मटमैला– बदरंग सा, उन पन्नों पर
जहाँ रंग निखरता है,
अपनों के एहसासों से।।

फिर करती कोशिश मैं
रंग नही प्रकाश बनूँ।
छोड़ बन्द खिड़की दरवाजों को
ऊँचे रोशनदानों तक बढ़ूँ।।
करुं प्रकाशित अधेंरे गलियारों को
बिना किए कोई ध्वनि स्तर।

अपने प्रयास के शीतल नीर से
सींचू हर बंजर,
जहाँ दबे हैं नई सोच के वो अंश
जो भरेंगे कल दुनिया में अपनी सुगंध।।

*प्रबन्धक (सामान्य), सैन्ट्रल वेअरहाउस, नैनी

निगमित कार्यालय द्वारा मंत्रालय को लाभांश का चैक प्रदत्त

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक मंत्री जी को वर्ष 2018–19 के लिए लाभांश का चैक प्रदान करते हुए निगम के प्रबंध निदेशक एवं अन्य अधिकारीगण

निगम द्वारा रेलटेल के साथ करार

भारत सरकार के नेशनल ई–गर्वनेंस प्लान के तहत एनआईसी के ई–ऑफिस, मिशन मोड प्रोजेक्ट को कार्यान्वित करने के लिए निगम के प्रबंध निदेशक, रेलटेल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा दोनों पीएसयू के निदेशकों की उपस्थिति में रेलटेल के साथ करार पर हस्ताक्षर किए गए।

निगम द्वारा ईपीआईएल के साथ करार

निगम ने ई–कॉमर्स, व्हाइट एंड ब्राउन गुड्स, ऑटोमोबाइल स्पेयर्स के लिए ग्रेटर नोएडा में अत्याधुनिक ऊंचे गोदाम परिसर के निर्माण के लिए ईपीआईएल के साथ करार पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक, ईपीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा निगम के निदेशक (वित्त) सहित दोनों पीएसयू के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

निगमित कार्यालय में आयोजित सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन

निगमित कार्यालय में विश्व खाद्य दिवस का आयोजन

निगमित कार्यालय में स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर के राजभाषा निरीक्षण की झलकियां

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सैंट्रल वेअरहाउस, वडोदरा के राजभाषा निरीक्षण की झलकियां

निगम की पत्रिका भंडारण भारती पुरस्कृत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली की 50वीं बैठक में जनवरी से दिसंबर, 2019 की अवधि के दौरान प्रकाशित **भंडारण भारती** पत्रिका को ''श्रेष्ठ गृह पत्रिका'' की श्रेणी में तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। निगम के महाप्रबंधक (कार्मिक) श्री सोमनाथ आचार्य ने नराकास के अध्यक्ष महोदय से यह पुरस्कार प्राप्त किया तथा उक्त बैठक में अपने विचार भी व्यक्त किए। इस अवसर पर निगम के राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित थे।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1) दिल्ली
(राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)
सचिवालय : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित मुख्यालय
राजीव गांधी भवन, सफदरजंग हवाईअड्डा, नई दिल्ली-110003

प्रमाण–पत्र

नराकास (उपक्रम-1) दिल्ली के तत्वावधान में सदस्य उपक्रम.......केंद्रीय भंडारण निगम.......
द्वारा वर्ष 2019 के दौरान प्रकाशित गृह पत्रिका.......भंडारण भारती.......के लिए "श्रेष्ठ गृह पत्रिका" की श्रेणी में.......तृतीय पुरस्कार.......स्थान प्राप्त करने पर प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

संजीव कुमार
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव, नराकास

जगदीश कुमार गोयल
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

अनुज अग्रवाल
सदस्य (मानव संसाधन)

निगमित कार्यालय में आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

निगमित कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण एवं विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद की विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा **राजभाषा सहायिका** का विमोचन

हिन्दी मिलाप

केंद्रीय भंडारण निगम में हिन्दी पखवाड़ा संपन्न

'भुखमरी मुक्त विश्व हेतु पौष्टिक आहार' गोष्ठी आयोजित

केंद्रीय भंडारण निगम में हिन्दी कार्यशाला आयोजित

केंद्रीय भंडारण निगम में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान आयोजित

हैदराबाद, 2 अक्तूबर (मिलाप ब्यूरो)
केंद्रीय भंडारण निगम, हैदराबाद के क्षेत्रीय कार्यालय में 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान का आयोजन किया गया। गत 11 सितंबर को आरंभ अभियान का आज समापन हुआ। अभियान के शुभारंभ पर सभी कार्मिकों ने स्वच्छता का संकल्प लिया।

यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अभियान के अंतर्गत प्लास्टिक कचरा प्रबंधन विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें एस.इंदिरा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अवसर पर राजकीय मॉडल हाई स्कूल, नामपल्ली में उक्त विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। क्षेत्रीय प्रबंधक के नेतृत्व में कार्यालय परिसर और सेंट्रल वेअरहाउस के नामपल्ली स्थित परिसर में चलाए गए स्वच्छता अभियान में कार्मिकों ने भाग लिया। क्षेत्रीय कार्यालय के अधीनस्थ सभी वेअरहाउस में यह अभियान चलाया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय और अधीनस्थ वेअरहाउसों में स्थानीय लोगों में कपड़े के थैले बाँटे गये। क्षेत्रीय प्रबंधक सैम्यूअल प्रवीण कुमार ने एकल उपयोगी (सिंगल यूज) प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इसका प्रयोग स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है। स्वच्छ वेअरहाउसों की प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये। स्वच्छ वेअरहाउस में गदवाल को प्रथम, ओंगोल को द्वितीय और सूर्यापेट को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय के स्वच्छ अनुभाग और स्वच्छ डेस्क की श्रेणी में भी पुरस्कार वितरित किये गये। 'प्लास्टिक मुक्त भारत' शीर्षक पर आधारित लघु फिल्म को प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाया गया। समापन समारोह में क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय और सेंट्रल वेअरहाउस, नामपल्ली के सफाई कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

3 Oct, 2019 Page No. 8
Powered by : erelego.com

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा कार्यशाला एवं अन्य गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा कार्यशाला एवं अन्य गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई एवं गुवाहाटी को प्रदत्त पुरस्कार

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
गुवाहाटी रिफाइनरी
नूनमाटी, गुवाहाटी – 20

IndianOil

प्रशस्ति पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि केंद्रीय भंडारण निगम को हिंदी पखवाड़ा 2019 के दौरान इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, गुवाहाटी रिफाइनरी द्वारा आयोजित सामूहिक देशभक्ति गीत प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु तृतीय पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई।

दिनांक : 14 सितंबर 2019

(संजय मनचंदा)
कार्यकारी निदेशक

हिंदी भाषा नहीं, भावों की अभिव्यक्ति है;
भारत को आपस में जोड़ने की शक्ति है.

केंद्रीय भंडारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

एकीकृत प्रबंधन प्रणाली नीति

क्यूएमएस, ईएमएस तथा ओएचएसएमएस

केंद्रीय भंडारण निगम ग्राहक अनुकूल, कुशल, पारदर्शी प्रणाली के माध्यम से वैश्विक मानक स्तर की वेअरहाउसिंग तथा लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान कराने के लिए प्रतिबद्ध है और पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए अपनी सभी गतिविधियां संचालित करता है।

हम निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अपनी सेवाओं में निरंतर सुधार करते हुए वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक के क्षेत्र में अग्रणी बनने के लिए प्रयासरत रहेंगे :

- आंतरिक एवं बाहरी मामलों पर विचार करते हुए ग्राहकों एवं इच्छुक पार्टियों की आवश्यकताओं को पूरा कर उनकी संतुष्टि बढ़ाने के लिए आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 एवं आईएसओ 45001:2018 के अनुसार प्रभावी एकीकृत प्रबंधन प्रणाली को कार्यान्वित करना।
- स्वीकार्य स्तर तक सभी प्रक्रियाओं में जोखिमों को कम करना ताकि अनिश्चितता के प्रभावों को कम किया जा सके।
- सभी लागू विधिक तथा अन्य आवश्यकताओं का अनुपालन करना।
- सभी स्थानों पर पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए प्रदूषण रोकना, पर्यावरण की देखभाल तथा महत्वपूर्ण पहलुओं को न्यूनतम करना।
- सुरक्षित एवं बेहतर कार्य पद्धतियां सुनिश्चित करना ताकि विद्यमान जोखिमों के कारण शारीरिक क्षति तथा बीमारी को कम किया जा सके।
- संसाधनों का समुचित उपयोग करना।
- कर्मचारियों की सक्षमता को बढ़ाना।
- सभी कर्मचारियों की संपूर्ण भागीदारी तथा योगदान सुनिश्चित करना।
- हमारी एकीकृत प्रबंधन प्रणाली में निरंतर सुधार करना।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

जन-जन के लिए भण्डारण

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास, नई दिल्ली-110016